

TIGHT BINDING BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186229

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—901—26-3-70—5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. **491.25-** Accession No. **H. 1867**

Author **IHS**

Title **300**
सुखाय - संस्कृत - व्याकरण

This book should be returned on or before the date last marked below

सुबोध-संस्कृत-व्याकरणम्

(हाई स्कूल परीक्षा के पाठ्य-क्रम के अनुसार लिखित)

लेखक

इन्द्र एम. ए.

(संस्कृत और राजनीति)

काव्यतीर्थ, शास्त्री, विद्यालंकार, एम. ओ. एल.

प्रकाशक

हिन्दी-भवन

जालंधर और इलाहाबाद

ग्यारहवाँ संस्करण]

१९५५

[मूल्य २]

प्रकाशक—

इन्द्रचन्द्र नारंग.

हिन्दी भवन

३१२ रानी मंडी

इलाहाबाद ३

६.७

मुद्रक—

इन्द्रचन्द्र नारंग

कमल मुद्रणालय

३१२ रानी मंडी

इलाहाबाद

विषय-सूची

हाई स्कूल परीक्षा के संस्कृत- व्याकरण का पाठ्यक्रम १-२ प्रथम अध्याय प्रारम्भिक ३-६ द्वितीय अध्याय सन्धि-प्रकरण ६-१५ अच् सन्धि ७ हल् सन्धि ८ विसर्ग सन्धि १२ णत्व, षत्व विधान १३ तृतीय अध्याय नाम प्रकरण १५-१७ लिङ्ग १५ वचन १६ चतुर्थ अध्याय कारक प्रकरण १७-२० पञ्चम अध्याय शब्द-रूपावली २०-४८ अजन्त पुँल्लिङ्ग २१ अजन्त स्त्रीलिङ्ग २६ अजन्त नपुंसकलिङ्ग ३२ हलन्त पुँल्लिङ्ग ३४	हलन्त स्त्रीलिङ्ग ४१ हलन्त नपुंसकलिङ्ग ४३ षष्ठ अध्याय उपपद विभक्तियाँ ४८-५१ सप्तम अध्याय सर्वनाम शब्द ५१-६० अष्टम अध्याय विशेषण ६०-६४ नवम अध्याय संख्यावाची शब्द ६४-७२ दशम अध्याय स्त्री-प्रत्यय ७२-७५ एकादश अध्याय अव्यय ७५-७७ द्वादश अध्याय उपसर्ग ७८-८० त्रयोदश अध्याय समास ८०-८६ चतुर्दश अध्याय धातु प्रकरण ८७-१८० भ्वादिगण ८६ अदादिगण ११८
--	---

जुहोत्यादिगण	१२६	षोडश अध्याय	
दिवादिगण	१३४	कृदन्त	१८३-१९४
स्वादिगण	१४२	सप्तदश अध्याय	
तुदादिगण	१४६	वाच्य	१९५-२००
रुधादिगण	१५५	सुबोध-अनुवाद-पद्धति	
तनादिगण	१५६	अभ्यास	२००-२३७
क्रयादिगण	१६४	हाई स्कूल परीक्षा के	
चुरादिगण	१७०	प्रश्नपत्र	२३७-२५६
पञ्चदश अध्याय			
गिजन्त	१८०-१८३		

उत्तर प्रदेश की हाई स्कूल परीक्षा के संस्कृत व्याकरण का पाठ्यक्रम

I—Sandhis covered by the following sutras (it is not necessary to learn the sutras) :

(a) स्वरसन्धि—

- | | |
|-------------------|-------------------------|
| (१) इको यणचि । | (४) वृद्धिरेचि । |
| (२) एचोऽयवायावः । | (५) एङः पदान्तादति । |
| (३) आद्गुणः । | (६) अकः सवर्णे दीर्घः । |

(b) हलसन्धि ।

- | | |
|--------------------------|--------------------|
| (१) स्तोः श्चुना श्चुः । | (४) भलां जश् भशि । |
| (२) ष्टुना ष्टुः । | (५) खरि च । |
| (३) भलां जशोऽन्ते । | (६) मोऽनुस्वारः । |

(c) विसर्गसन्धि—

- | | |
|--------------------------|---|
| (१) विसर्जनीयस्य सः । | (४) हशि च । |
| (२) ससजुपो रुः । | (५) एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्
समासे हलि । |
| (३) अतरोरप्लुतादप्लुते । | (६) भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि । |

II—Declension of the following nouns and others of the same kind :

- (a) पुल्लिङ्ग—राम, हरि, सखि, गुरु, कर्तृ, पितृ, गो, भूभृत्, भगवत्, करिन्, आत्मन्, राजन् ।
- (b) स्त्रीलिङ्ग—स्मा, मति, नदी, धेनु, वधू, वाच्, सति ।
- (c) नपुंसक—गृह, वारि, दधि, मधु, पयस्, शर्मन्, जगत्, नामन्, मनस् ।

(d) सर्वनाम—सर्व, पूर्व, तद्, यद्, किम्, युष्मद्, अस्मद्, इदम् ।

(e) Numerals—From एक to दशन् in all genders.

III—Conjugation of the following roots in लट्, लङ्, लोट्, विधिलिङ्, लृट् ।

(a) भ्वादि—भू (P), हस् (P), पठ् (P), रच् (P), वद् (P), पच् (P), नम् (P), गम् (P), दृश् (P), सद् (P), स्था (P), स्मृ (P), पा (P), जि, सेच् (A), लभ्, वृध् (A), मुद् (A), सह (A), याच् (U), नी (U), ह् (U) ।

(b) अदादि—अद् (P), अस् (P), ब्रू (P), रुद् (P), दुह् (P), स्वप् (P), हन् (P), इ (P), आस् (A), शी (A) ।

(c) जुहोत्यादि—हु (P), भी (P), दा (P) ।

(d) दिवादि—दिव् (P), नृत् (P), नश् (P), भ्रम् (P), युध् (A), जन् (A) ।

(e) स्वादि—सु (U), आप् (P), शक् (P) ।

(f) तुदादि—तुद् (P), इष् (P), स्पृश् (P), प्रच्छ (P), मृ (U), मुच् (U) ।

(g) रुधादि—रुध् (U), भुज् (U) ।

(h) तनादि—तन् (U), कृ (U) ।

(i) क्रयादि—क्री (U), ग्रह् (U), शा (U) ।

(j) चुरादि—चुर (U), चिन्त् (U), कथ् (U), भक्ष् (U) ।

P—Stands for परस्मैपद

A—Stands for आत्मनेपद

U—Stands for उभयपद

IV—Componnds—General definition, with illustrations of the following Samasas :

तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि, द्वन्द्व ।

प्रथम अध्याय

प्रारम्भिक

जिस शास्त्र द्वारा शुद्ध और अशुद्ध शब्दों का विवेचन किया जा सके उसे व्याकरण कहते हैं।

शब्द वर्णों से बनते हैं और वर्ण ध्वनि के उन चिह्नों का नाम है जिनके खण्ड नहीं किये जा सकते। जैसे—अ, क, म्।

‘राम’ इस शब्द में मोटे तौर से दो ध्वनियाँ कही जा सकती हैं—रा और म। परन्तु यदि इन ध्वनियों की छानबीन करें तो पता चलेगा कि ‘रा’ में दो ध्वनियाँ हैं—र और आ। ऐसे ही ‘म’ में भी दो ध्वनियाँ हैं—म् और अ। र्, आ, म्, अ के और टुकड़े नहीं हो सकते, अतः ये वर्ण हैं।

वर्ण दो प्रकार के हैं—स्वर और व्यंजन।

स्वर वर्ण वे हैं जिनके उच्चारण में किसी दूसरे वर्ण की सहायता अपेक्षित न हो। ये तीन प्रकार के होते हैं; ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत।

‘मात्रा’ समय का परिमाण है। चुटकी बजाने अथवा पलक गिरने में जितना समय लगता है उतने समय को मात्रा कहा जाता है। एक साधारण वर्ण के उच्चारण करने में जितना समय लगता है, उसे एक मात्रा कहते हैं, उससे दुगुने को दो मात्रा और तिगुने को तीन मात्रा।

१. ह्रस्व स्वर—वे हैं जिनके उच्चारण में एक मात्रा समय लगता है।
अ, इ, उ, ऋ, ए।

२. दीर्घ स्वर—वे हैं जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दुगुना समय लगे। आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

३. प्लुत स्वर—वे हैं जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तिगुना समय लगे। प्लुत स्वर लिखने के लिए स्वर के आगे प्रायः ३ का अंक लगा देते हैं। यथा ओ३म्।

व्यंजन वर्ण वे हैं जिनके उच्चारण में स्वरों की सहायता अपेक्षित होती है।

व्यंजनों के तीन मुख्य भेद हैं—स्पर्श, अन्तस्थ तथा ऊष्म।

क से म तक पहले २४ वर्ण स्पर्श कहलाते हैं। य्, र्, ल्, व् अन्तस्थ (अर्धस्वर) तथा श्, ष्, स्, ह्, ऊष्म हैं।

स्पर्श पाँच वर्गों में विभक्त हैं, प्रत्येक वर्ग का नाम पहले वर्ण के अनुसार रक्खा गया है—जैसे कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग।

इस तरह कुल व्यंजन संख्या में ३३ हैं। कुल स्वर १३ हैं। क्ष्, त्र्, ज्ञ् स्वतन्त्र वर्ण नहीं हैं, अपितु ये दो व्यंजनों के मिलाप से बने हुए संयुक्त अक्षर हैं।

किसी वर्ण के आगे 'कार' जोड़ देने से उसी वर्ण का बोध होता है; जैसे—अकार से 'अ' का, ककार से 'क' का। परन्तु र् को रेफ भी कहा जाता है।

स्थान

वर्ण के उच्चारण के समय जिह्वा मुख के भीतर के कण्ठ आदि जिस प्रदेश को छूती है; उसे वर्ण का स्थान कहते हैं।

ये स्थान छः हैं—कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ और नसिका।

भिन्न भिन्न वर्णों के उच्चारण-स्थान निम्नलिखित हैं—

१ कण्ठ स्थान—अ, आ, कवर्ग, ह तथा विसर्ग का कण्ठ स्थान है। (अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः)

२ तालु स्थान—इ, ई, चवर्ग, य तथा श का तालु स्थान है। (इचुयशानां तालु)

३ मूर्धा स्थान—ऋ, ॠ, टवर्ग, र तथा ष का मूर्धा स्थान है। (ऋदुरषाणां मूर्धा)

४ दन्त स्थान—लृ, तवर्ग, ल तथा स का दन्त स्थान है।
(लृगुलसानां दन्ताः)

५ ओष्ठ स्थान—उ, ऊ, पवर्ग तथा उपध्मानीय वर्णों का ओष्ठ स्थान है। (उपूध्मानीयानामोष्ठौ)

‘प’ ‘फ’ से पहले जो आधे विसर्ग होते हैं जिनका लिखने में (~) यह आकार होता है, उन्हें उपध्मानीय कहते हैं। परन्तु अब इसका प्रयोग प्रायः नहीं होता।

६ नासिका स्थान—ञ, म, ङ, ण, न वर्णों का नासिका स्थान भाँ है (जमङ्गणानां नासिका च)। अतएव इन्हें अनुनासिक वर्ण भी कहा जाता है। अनुस्वार का भी नासिका ही स्थान है।

ण, ऐ का स्थान कण्ठ-तालु है। इसी प्रकार ओ, औ का स्थान कण्ठ-ओष्ठ है। व का स्थान दन्त-ओष्ठ है।

प्रयत्न

वर्णों के उच्चारण में जिह्वा का जो व्यापार अपेक्षित है, उसे प्रयत्न कहते हैं।

यह दो प्रकार का है—आभ्यन्तर तथा बाह्य।

आभ्यन्तर प्रयत्न—पाँच प्रकार के हैं—

१ स्पर्श—स्पर्श। (क से म तक) वर्णों का।

२ ईषत्स्पर्श—अन्तस्थ (य, र, ल, व) वर्णों का।

३ विवृत—स्वरों का।

४ ईषद्विवृत—ऊष्म (श, ष, स, ह) वर्णों का।

५ संवृत—ह्रस्व अकार का। परन्तु व्याकरण के प्रयोग में अन्य स्वरों के साथ अकार का भी विवृत है।

बाह्य प्रयत्न—११ प्रकार के हैं। परन्तु मुख्य भेद दो ही हैं।
घोष, अघोष।

१ घोष—प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा और पाँचवाँ वर्ण, सब स्वर, य, र, ल, व और ह घोष वर्ण हैं।

२ अघोष—वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण, श, प, स अघोष वर्ण हैं।

एक ही स्थान तथा प्रयत्न वाले वर्ण सवर्ण कहाते हैं, जैसे—अ और आ परस्पर सवर्ण हैं। इसी प्रकार इ, ई और उ, ऊ आदि को भी समझना चाहिए। परन्तु इ और उ असवर्ण हैं क्योंकि दोनों के स्थान भिन्न भिन्न हैं।

अभ्यास

१ व्याकरण का लक्षण लिखो।

२ स्वर कितने प्रकार के हैं? अनुस्वार तथा विसर्ग स्वर हैं या व्यञ्जन?

३ तालुस्थान से बोले जाने वाले कौन से वर्ण हैं?

४ आभ्यन्तर प्रयत्न कितने प्रकार के हैं? उनके नाम लिखो।

द्वितीय अध्याय

सन्धि-प्रकरण

कहीं कहीं दो वर्णों के आस-पास आने पर उनमें कुछ विकार (रूप-परिवर्तन) हो जाता है। इस विकार को सन्धि कहते हैं।

सन्धि तीन प्रकार की है—स्वर-सन्धि, व्यञ्जन-सन्धि और विसर्ग-सन्धि।

१ स्वर-सन्धि—स्वर के साथ स्वर के मेल को स्वर-सन्धि कहते हैं; यथा—हिम + आलयः = हिमालयः।

२ व्यञ्जन-सन्धि—व्यञ्जन के परे स्वर या व्यञ्जन के आने से व्यञ्जन में जो विकार होता है उसे व्यञ्जन-सन्धि कहते हैं; यथा—जगत् + नाथः = जगन्नाथः।

३ विसर्ग-सन्धि—विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन के आने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग-सन्धि कहते हैं। यथा—निः + फलं = निष्फलं।

स्वर (अच)—सन्धि

१. दीर्घ-सन्धि—यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ अथवा ऋ से परे इनका कोई सवर्ण स्वर हो तो दोनों के बदले सवर्ण दीर्घ स्वर हो जाता है । (अकः सवर्णे दीर्घः) यथा—

हिम + आलयः = हिमालयः । विद्या + अभ्यासः = विद्याभ्यासः ।

रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः । लक्ष्मी + ईशः = लक्ष्मीशः ।

गुरु + उपदेशः = गुरुरपदेशः । वधू + उत्सवः = वधूत्सवः ।

पितृ + ऋणम् = पितृणम् ।

२. गुणसन्धि—अ या आ के बाद इ या ई हो तो दोनों को मिल कर ए; उ या ऊ हो तो दोनों को मिल कर ओ; ऋ हो तो दोनों को मिल कर 'अः' हो जाता है (आद्गुणः) । यथा

देव + इन्द्रे = देवेन्द्रः । महा + इन्द्र = महेन्द्रः ।

हित + उपदेशः = हितोपदेशः । महा + उत्सवः = महोत्सवः ।

सप्त + ऋषयः = सप्तर्षयः । महा + ऋषिः = महर्षिः ।

३. वृद्धि-सन्धि—अ या आ के बाद ए या ऐ हो तो दोनों के स्थान पर ऐ; और ओ या औ हो तो दोनों के स्थान पर औ हो जाता है । (वृद्धिरेचि) यथा—

अद्य + एव = अद्यैव ।

सदा + एव = सदैव ।

वन + ओपधिः = वनौपधिः ।

महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम् ।

तव + औदार्यम् = तवौदार्यम् ।

महा + औषधम् = महौषधम् ।

४. यण् सन्धि—ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ और लृ के बाद यदि कोई असवर्ण स्वर हो तो इ, उ, ऋ और लृ के स्थान पर क्रमशः य् व् र् ल् हो जाते हैं । (इको यणचि) यथा—

यदि + अपि = यद्यपि ।

अपि = एवम् = अप्येवम् ।

सु + आगतम् = स्वागतम् ।

अनु + एषणम् = अन्वेषणम् ।

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा ।

गुरु + आदेशः = गुरुवादेशः ।

५. अयादि सन्धि—ए, ऐ, ओ, औ को किसी स्वर के परे होने पर

क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् हो जाते हैं। (एचोऽयवायावः) यथा—

ने + अति = नयेति ।

भो + अनम् = भवनम् ।

नै + अकः = नायकः ।

पौ + अकः = पावकः ।

६. पूर्वरूप सन्धि—पद के अन्त के एकार, ओकार के बाद यदि अकार आवे तो उसका लोप हो जाता है। सन्धि दिखाने के लिए लुप्त अकार के स्थान पर (ऽ) ऐसा चिह्न लगा दिया जाता है। (एङः पदान्तादति) यथा—

कवे + अवेहि = कवेऽवेहि । प्रभो + अनुगृहाण = प्रभोऽनुगृहाण ।

७. प्रकृतिभाव सन्धि—(क) द्विवचनान्त पद के ई, ऊ, ए के बाद किसी स्वर के रहने पर परस्पर सन्धि नहीं होती। (ईदृदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्)

कवी + इमौ = कवी इमौ ।

साधू + अत्र = साधू अत्र ।

लते + इमे = लते इमे ।

(ख) प्लुत स्वर की सन्धि नहीं होती । यथा—रामश् आगच्छ ।

(ग) अदस् शब्द में म् से परे ई, ऊ की सन्धि नहीं होती ।

अमी अश्वाः (ये घोड़े) । अमू अर्भकौ (ये दो बालक) ।

८. पररूप सन्धि—कुछ शब्दों में अ के बाद ए, ओ होने पर दोनों को मिला कर क्रमशः ए ओ ही रहते हैं। (एङि पररूपम्) यथा—

प्र + एजते = प्रेजते

विम्ब + ओष्ठी = विम्बोष्ठी ।

हल् (व्यञ्जन) सन्धि

१. सकार वा तवर्ग के पहले या पीछे शकार वा चवर्ग हो तो स को श और तवर्ग को क्रमशः चवर्ग हो जाता है। (स्तोः श्चुना श्चुः)

हेरिस् + शेते = हरिश्शेते । रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति ।

सत् + चित् = सच्चित् । तद् + जयेः = तज्जयः । यज् + नः = यज्ञः ।

शकार से परे तवर्ग को चवर्ग नहीं होता । प्रश् + नः = प्रश्नः ।

२. सकार वा तवर्ग के पहले या पीछे षकार वा टवर्ग हो तो सकार

को पकार और तवर्ग को क्रमशः टवर्ग हो जाता है। (ष्टुना ष्टुः)

कृष्णस् + षष्ठः = कृष्णषष्ठः । धनुस् + टङ्कारः = धनुष्टङ्कारः ।

भवत् + टीका = भवटीका । इष् + तः = इष्टः ।

३. तवर्ग के परे ल् हो तो तवर्ग को ल् हो जाता है । न् को अनुनासिक ल् होता है । (तोर्लि)

विद्युत् + लता = विद्युल्लता । भवान् + लिखति = भवाल्लिखति ।

४. वर्ग के पहले दूसरे और चौथे अक्षर को पदान्त में वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है । (भलां जशोऽन्ते)

वाक् + ईशः = वागीशः ।

अच् + अन्ताः = अजन्ताः ।

परिव्राट् + अयम् = परिव्राडयम् ।

जगत् + ईशः = जगदीशः ।

५. वर्ग के पहले दूसरे और चौथे अक्षर को वर्ग का चौथा या तीसरा अक्षर परे होने पर वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है । (भलां जश् भशि)

क्रुध् + धः = क्रुद्धः ।

लभ् + धुम् = लब्धुम् ।

६. वर्ग के चौथे, तीसरे और दूसरे अक्षर को वर्ग का पहला या दूसरा अक्षर अथवा श्, ष्, स् परे होने पर वर्ग का पहला अक्षर हो जाता है । (खरि च)

हृद् + सु = हृत्सु । अद् + ति = अत्ति । युध् + सु = युत्सु ।

७. वर्ग के प्रथम चार वर्णों के परे ह् को विकल्प से उस वर्ग का चौथा अक्षर हो जाता है ।

वाक् + हरि = वाग्हरिः (नियम ४ के अनुसार) या वाग्घरिः ।

तत् + हितम् = तद्हितम् (नियम ४ के अनुसार) या तद्धितम् ।

८. वर्ग के पदान्त प्रथम चार वर्णों के परे यदि श् हो और श् के बाद यदि कोई स्वर या ह, य, र, व, ल में से कोई अक्षर हो और तो श् को विकल्प से छ् हो जाता है । (शश्छोऽटि)

तत् + श्रुत्वा = तच्च्रुत्वा (नियम १ से) या तच्छ्रुत्वा ।

९. छ् के पहले कोई ह्रस्व स्वर हो तो छ् से पहले च् लगाया जाता

है, पर यदि छ् से पहले पदान्त दीर्घ स्वर हो तो छ् से पहले च् विकल्प से लगता है ।

वृत्त + छाया = वृत्तच्छाया ।

लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया या लक्ष्मीछाया ।

१०. पदान्त वर्ग्य अक्षर (क से म तक) तथा य, व, ल, को अनुनासिक अक्षर परे होने पर विकल्प से सवर्ण अनुनासिक अक्षर होता है । (यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा) ।

दिक् + नागः = दिग् नागः या दिङ् नागः ।

पट् + मासाः = पड्मासाः या षण्मासाः ।

जगत् + नाथः = जगद्नाथः या जगन्नाथः ।

परन्तु प्रत्यय का अनुनासिक अक्षर परे होने पर नित्य ही अनुनासिक हो जाता है ।

कियत् + मात्रम् = कियन्मात्रम् ।

वाक् + मयम् = वाङ्मयम् ।

अप् + मयम् = अम्मयम् ।

११. पदान्त म से परे यदि कोई व्यंजने हो तो म को अनुस्वार हो जाता है । (मोऽनुस्वारः) हरिम् + वन्दे = हरि वन्दे ।

परन्तु सम्राट् और साम्राज्य में म को अनुस्वार नहीं होता ।

१२. अपदान्ते न् और म को वर्गों के चौथे, तीसरे, दूसरे और पहले अक्षर या श्, प्, स्, ह् परे होने पर अनुस्वार हो जाता है ।

यशान् + सि = यशांसि ।

आक्रम + स्यते = आक्रंस्यते ।

१३. अपदान्त अनुस्वार से परे यदि किसी वर्ग का कोई अक्षर अथवा य, ल्, व में से कोई अक्षर हो तो अनुस्वार को उस अक्षर का सवर्ण अनुनासिक हो जाता है । यदि अनुस्वार पदान्त हो तो अनुनासिक विकल्प से होता है । (अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः)

(अपदान्त) अन् + कितः = अं + कितः = अङ्कितः ।

कुन् + ठितः = कुं + ठितः = कुण्ठितः ।

शाम् + तः = शां + तः = शान्तः ।

(पदान्त) त्वम् + करोषि = त्वं + करोषि = त्वङ्करोषि या त्वं करोषि ।

पूर्वम् + तावत् = पूर्वं + तावत् = पूर्वन्तावत् या पूर्वं तावत् ।

फलम् + चिनोति = फलं + चिनोति = फलञ्चिनोति या फलं चिनोति ।

१४. यदि पदान्त न् से परे च, छ, ट, ठ, त् और थ में से कोई अक्षर हो और उनके बाद यदि कोई स्वर, ह्, य्, व्, र्, ल् या किसी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर हो तो न् को अनुस्वार और स् हो जाता है ।

कस्मिन् + चित् = कस्मिन् + चित् = कस्मिश्चित्

अस्मिन् + तडागे = अस्मिन्स्तडागे ।

१५. पदान्त ड्, ण्, न् के पहले यदि ह्रस्व स्वर हो और परे भी कोई स्वर हो तो ड्, ण्, न् को द्वित्व हो जाता है ।

प्रत्यङ् + आत्मा = प्रत्यङ्ङात्मा ।

सुगण् + ईशः = सुगण्णीशः ।

एकस्मिन् + अहनि = एकस्मिन्नहनि ।

१६. पदान्त स को रु (र) हो जाता है ।

रात्रिस् + गमिष्यति = रात्रिर्गमिष्यति ।

१७. पदान्त र् से परे यदि वर्गों के पहले, दूसरे अक्षर या श्, प्, स में से कोई अक्षर हो अथवा कुछ भी न हो तो र् को विसर्ग हो जाता है ।

रामस् + कथयति = रामर् + कथयति = रामः कथयति ।

हरिस् = हरिर् = हरिः ।

१८. र से र् परे होने पर पूर्व र का लोप हो जाता है और लुप्त र से पूर्व ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है । (रोरि—द्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः)

यथा—

निर् + रसम् = नीरसम् ।

निर् + रोगः = नीरोगः ।

पुनर + रमते = पुना रमते ।

१६. पदान्त रु (र) से पूर्व यदि ह्रस्व अकार हो और पीछे ह्रस्व अकार, ह्, य, व्, र, ल् अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे और पाँचवें अक्षरों में से कोई अक्षर हो तो रु (र) को उ हो जाता है ।

नरस् + याति = नरर् + याति = नर उ + याति = नरो याति ।

मनस् + रथः = मनर् + रथः = मन उ + रथः = मनोरथः ।

२०. पदान्त रु (र) से पहले यदि ह्रस्व अ हो और पीछे ह्रस्व अ को छोड़ कर कोई और स्वर हो, या रु (र) से पहले आ हो और पीछे कोई स्वर, ह्, य, व्, र, ल् या वर्गों के तीसरे, चौथे और पाँचवें अक्षरों में से कोई अक्षर हो तो रु (र) के स्थान पर य् होता है और उस य् का लोप हो जाता है ।

दमनकस् + आह् = दमनकर् + आह् = दमनकय् + आह्
= दमनक आह् ।

देवास् + इह् = देवार् + इह् = देवाय् + इह् = देवा इह् ।

इस नियम से य् का लोप होने के बाद फिर सन्धि नहीं होती, इसलिए 'दमनक आह' में अच् सन्धि के पहले नियम के अनुसार दीर्घसन्धि हो कर 'दमनकाह' नहीं होगा ।

विसर्ग-सन्धि

(१) चवर्ग, टवर्ग और तवर्ग के पहले या दूसरे अक्षर के परे होने पर विसर्ग को स् हो जाता है । (विसर्जनीयस्य सः)

विष्णुः + त्राता = विष्णुस्त्राता ।

[पूरी प्रक्रिया इस प्रकार होगी—विष्णुस् + त्राता = विष्णुर् + त्राता (व्यञ्जन सन्धि के नियम १६ के अनुसार) = विष्णुः + त्राता (व्यञ्जन-सन्धि के नियम १७ के अनुसार) = विष्णुस्त्राता ।]

(२) श्, ष्, स् परे होने पर विसर्ग को श्, ष्, स् विकल्प से होते हैं । हरिः + शेते = हरिः शेते या हरिश्शेते । मनस् + षेष्ठम् = मनः षेष्ठम् या मनष्षेष्ठम् ।

(३) प्रत्यय-सम्बन्धी विसर्ग से भिन्न विसर्ग से पूर्व यदि ह्रस्व इ या उ हो और पीछे यदि कवर्ग या पवर्ग हो तो विसर्ग को ष हो जाता है।

आविः + कृतम् = आविष्कृतम् ।

(४) विसर्ग से पूर्व यदि अ हो और परे अ वो वर्गों के तीसरे, चौथे और पाँचवें वर्ण तथा य, व, र, ल, ह हों तो विसर्ग को प हो जाता है।

(ससजुपो रुः—अतो रोःप्लुतादप्लुते—हशि च) यथा—

नृपः + अवदत् = नृपोऽवदत् ।

रामः + गच्छति = रामो गच्छति ।

मृगः + धावति = मृगो धावति ।

रामः + वदति = रामो वदति ।

(५) सः और एपः के विसर्ग का लोप हो जाता है, यदि परे अ भिन्न कोई वर्ण हो। एतत्तदंः सुलोपोऽहोरनञ् समासे हलि) यथा—

सः + देवः = स देवः ।

एपः + शशः = एप शशः ।

सः + ऋषिः = स ऋषिः ।

(६) विसर्ग से पूर्व यदि अ हो और परे अ भिन्न कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। (भो भगो अधो अपूर्वस्व योऽशि) यथा—

कः + इच्छति = क इच्छति ।

नृपः + उवाच = नृप उवाच ।

अतः + एव = अत एव ।

णत्व-षत्व विधान

१. णत्व-विधान—न् के पहले यदि एक ही पद में ऋ, ॠ, र् या ङ हो तो न् को ण् हो जाता है। स्वर, कवर्ग, पवर्ग ह्, य् व् तथा अनुस्वार के बीच में रहते हुए भी न् को ण् हो जाता है।

तिसृणाम्, विस्तीर्णः, पूष्णः, रामेण ।

परन्तु पदान्त न् को ण् नहीं होता ।

रामान्, पितृन् ।

२. षत्व विधान—स से पूर्व यदि अ, आ से भिन्न कोई स्वर, कवर्ग या ह्, य्, व्, र्, ल् में से कोई अक्षर हो तो स को ष हो जाता है। अनुस्वारे, विसर्ग अथवा श्, ष्, स् के बीच में रहते हुए भी स को ष हो जाता है।

हरिषु, भानुषु, कर्तृषु, नरेषु, गोषु, चतुर्षु, कमल्यु, दिक्षु, प्राङ्षु, हविषु, हवींषि।

अभ्यास

१. सन्धि किसे कहते हैं ? उसके कितने प्रमुख भेद हैं ? उनके लक्षण लिखो।

२. यण्सन्धि तथा पूर्वरूपसंधि के लक्षण उदाहरण-सहित स्पष्ट करो।

३. इनमें सन्धि करो तथा नियम भी समझाओ—

विद्या + अर्थी, नर + इन्द्रः; तथा + एव, नदी + उदकम्, भो + अति, सर्वे + अपि, भानू + उदयतः, कपी + एतौ। उत् + चारणम्, तत् + टीका, उत् + लङ्घनम्, सत् + आचारः, उत् + हरणम्, वाक् + माधुर्यम्, गृहम् + गच्छ, सम् + हननम्, पश्यन् + आगच्छ, हृत् + शोकः, राज्य + छत्रम्, निस् + चयः, यज् + नः। एकः + चन्द्रः, बालः + अयम्, नरः + आयाति, पितृ + उपदेशः, मातृ + अनुग्रहः, भौ + उकः, साधो + आगच्छ, शिवाय + ओम् + नमः, लते + एते, अप् + हरणम्, पतन् + तरुः, जगत् + शरण्यम्, उत् + डीयते, अन् + कितः, पुम् + कोकिलः, सृजन् + ईश्वरः, हरिः + रक्षति, सम्यक् + उक्तम्, विद्ये + इमे, मनस् + भिः, तौ + एतौ, पितः + रक्ष, अस्मिन् + उपवने, विद्वन् + इयम्, अहनि + अहनि, वाचः + पतिः, एषः + वदति। जनाः + म्रियन्ते, निर् + रवम्। नृषा + नाम्, पुप् + नाति, चतुर् + सु।

४. सन्धिच्छेद करो—

गुरुपकारः, राजर्षिः, तवौदार्यम्, मध्वानय, गायकः, कोऽपि, सच्चिदानन्दः। उल्लासः, दिग्भ्रान्तिः, दिग्घस्ती, तन्मयम्; मातरं वन्दे, धावन्नेहि, उच्छ्वासः, दुश्चरित्रम्, शिवो वन्द्यः, मन इदम्, नृषा ददति, शिशुर्हसति, निश्शङ्कम्, भानू राजते, निष्कलङ्कः, महदपि, राजर्षेर्मुखम्, तच्छिन्नन्ति; स उवाच, प्रातरेव, भ्रातरागच्छ, निर्धनः, अहरहः, मनोनीतः, जगद्वन्द्यः, चतुष्पथम्, सोऽहम्,

चक्रिन्त्रायस्व, उपाध्यायाश्छात्रान्, नर इव, पूषन्नपावृणु, कुर्वन्नेवेह,
कस्यस्विद्धनम्, तांस्ते, यमेवैषः, तच्चक्षुः, भूयश्च, दिग्गजः, दुराचारः, पुंसु ।

५. शुद्ध करो—गिरिशः, परुपकाराय, अद्येव, उपरोक्तं, ऋष्यैतौ, सन्सारे,
सन्मुखम्, मनोकामना, लताषु, वाग्मात्रम्, फलेण, बहिष्कृतिः, निरोगः, कुन्जः,
सन्मानम्, वशिष्ठोऽचार्यः, क्षुधर्तः, राजिन्द्रः, कवीमौ, गङ्गेऽमू सध्विमौ, महात्माभः,
स्मरनुवाच, अवैहि, उपेति, महान्नश्वः, धावनत्र, प्रतिक्षा ।

तृतीय अध्याय

नाम प्रकरण

शब्दों को मुख्यतया तीन भागों में बाँटा जा सकता है—१ नाम या
सुबन्त, २ क्रिया या तिङन्त, ३ अव्यय ।

नाम में संज्ञा (Noun) सर्वनाम (Pronoun) और विशेषण
(Adjective) सम्मिलित हैं ।

जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण या कार्य का बोध हो
उसको संज्ञा (Noun) कहते हैं ।

यथा—राम, पुस्तक, काशी, मधुरता, अध्ययन इत्यादि ।

जब वाक्यों में संज्ञाओं का प्रयोग होता है तब लिङ्ग, वचन तथा
कारक के कारण उनमें रूप-परिवर्तन होता है ।

लिङ्ग

संस्कृत भाषा में तीन लिङ्ग होते हैं—

१. पुँ लिङ्ग	—	Masculine gender
२. स्त्रीलिङ्ग	—	Feminine gender
३. नपुंसकलिङ्ग	—	Neuter gender

अंग्रेजी भाषा में सजीव (Animate) पदार्थों के लिए पुँलिङ्ग तथा
स्त्रीलिङ्ग शब्द प्रयुक्त होते हैं और निर्जीव (Inanimate) पदार्थों के
लिए नपुंसकलिङ्ग शब्द प्रयुक्त होते हैं ।

परन्तु संस्कृत भाषा में साधारणतया इस नियम का पालन नहीं किया जाता। संस्कृत में वस्तुतः लिङ्ग-निर्णय करना सुगम कार्य नहीं है। निष्प्राण वस्तुओं के लिए भी पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग शब्दों का प्रयोग होता है। एक ही अर्थ के अनेक शब्द अनेक लिङ्गों में पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ पत्नी-वाची 'भार्या' शब्द स्त्रीलिङ्ग है, 'दार' शब्द पुल्लिङ्ग है और 'कलत्र' शब्द नपुंसकलिङ्ग है। इसी प्रकार जलवाची 'वार' 'पयस' नीर' प्रभृति शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं परन्तु 'अप' स्त्रीलिङ्ग है।

अतः कोई स्थिर नियम लिङ्ग-निर्णय के लिए नहीं लिखे जा सकते। यह तो संस्कृत भाषा के अभ्यास के अनन्तर ही विदित हो सकता है कि कौनसा शब्द किस लिङ्ग में प्रयुक्त होता है, अथवा कोश की सहायता से शब्दों के लिङ्ग का ज्ञान किया जा सकता है।

वचन (Number)

संज्ञा आदि के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वह एक के लिए प्रयुक्त हुआ है या दो के लिए अथवा दो से भी अधिक के लिए उसे वचन कहते हैं।

संस्कृत भाषा में तीन वचन हैं। अंग्रेजी या हिन्दी में द्विवचन का प्रयोग नहीं होता, परन्तु संस्कृत में होता है:—

- | | |
|------------|--------------------|
| १. एकवचन | ...Singular Number |
| २. द्विवचन | ...Dual Number |
| ३. बहुवचन | ...Plural Number |

एक व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के बोध के लिए एकवचन प्रयुक्त होता है। यथा सः, त्वम्, अहम्, पुस्तकम्, देशः इत्यादि।

दो व्यक्तियों, वस्तुओं, स्थानों आदि के बोध के लिए द्विवचन प्रयुक्त होता है। यथा—तौ, युवाम्, आवाम्, पुस्तके, देशौ इत्यादि।

दो से अधिक व्यक्तियों, वस्तुओं, स्थानों आदि के बोध के लिए बहुवचन प्रयुक्त होता है। यथा—ते, यूयम्, वयम्, पुस्तकानि, देशाः इत्यादि।

संस्कृत में कई शब्द नित्य द्विवचनान्त प्रयुक्त होते हैं। उनका प्रयोग अन्य वचनों में नहीं किया जाता। ऐसे कुछ शब्द नीचे दिये जाते हैं—

दम्पति (दम्पती) = पति पत्नी।

अश्विन् (अश्विनौ) = दो अश्विनीकुमार।

द्वि (द्वौ) = दो।

इसी प्रकार कुछ शब्द नित्य बहुवचनान्त प्रयुक्त होते हैं। ऐसे कुछ शब्द नीचे दिये जाते हैं—

दार (दाराः) = पत्नियाँ। अप (आपः) = जल।

प्राण (प्राणाः) = प्राण। सुमनस् (सुमनसः) = फूल।

वर्षा (वर्षाः) = बरसात। अप्सरस् (अप्सरसः) = अप्सराएँ।

इसी प्रकार त्रि, चतुर, पञ्च, षष्, इत्यादि बहुसंख्यावाची शब्द भी बहुवचनान्त ही रहते हैं। एक शब्द 'एक' (One) के अर्थ में एकवचनान्त रहता है, परन्तु 'कई' (Some) के अर्थ में बहुवचनान्त प्रयुक्त होता है; यथा 'एके वदन्ति' इत्यादि।

चतुर्थ अध्याय

कारक-प्रकरण (CASES)

क्रिया की सिद्धि के लिए जो निमित्त बनते हैं, उन्हें कारक कहते हैं, अथवा क्रिया के उत्पन्न करने वाले को कारक कहा जाता है।

कारक छः हैं। वैयाकरण लोग सम्बन्ध को कारक नहीं मानते क्योंकि सम्बन्ध का क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं होता, परन्तु उससे केवल नाम शब्दों का सम्बन्ध मात्र प्रकट होता है। इन कारकों को सूचित करने के लिए संस्कृत में भिन्न-भिन्न विभक्तियाँ होती हैं। विभक्तियाँ सात हैं। कारकों और विभक्तियों का विवरण आगे दिया जाता है—

कारक

विभक्ति

१. कर्ता

प्रथमा (Nominative)

२. कर्म	द्वितीया (Accusative)
३. करण	तृतीया (Instrumental)
४. सम्प्रदान	चतुर्थी (Dative)
५. अपादान	पंचमी (Ablative)
६.	षष्ठी (Genitive)
७. अधिकरण	सप्तमी (Locative)

१. कर्ता—क्रिया के करने वाले को कर्ता कहते हैं। कर्ता में (कर्तृ-वाच्य में) प्रथमा विभक्ति होती है। यथा

रामः गच्छति = राम जाता है।

मृगाः धावन्ति = हरिण दौड़ते हैं।

बालः रोदिति = बालक रोता है।

२. कर्म—कर्ता की चेष्टा का जो विषय होना है वह कर्म कहलाता है; अर्थात् जो कुछ किया जाता है, देखा जाता है, खाया जाता है, कहा जाता है, दिया जाता है उसे कर्म कहते हैं। कर्म कारक में (कर्तृवाच्य में) द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—

पुस्तकं पठति = पुस्तक (को) पढ़ता है।

पत्रं लिखति = पत्र (को) लिखता है।

चन्द्रं पश्यति = चन्द्रमा को देखता है।

३. करण—जिस साधन के द्वारा कर्ता क्रिया की सिद्धि करता है, उसे करण कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—

चक्षुषा पश्यति = आँख से देखता है।

दण्डेन ताडयति = डंडे से मारता है।

हस्तेन गृह्णाति = हाथ से पकड़ता है।

४. सम्प्रदान—जिसे कुछ दिया जाय या जिसके लिए कुछ किया जाय उसे सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—

रामाय फलं ददाति = राम को फल देता है ।

धनं दानाय भवति = धन दान के लिए होता है ।

मह्यं फलं देहि = मुझे फल दो ।

५. अपादान—जिससे किसी की वृथकता का बोध हो उसे अपादान कहते हैं । जिससे डरा जाय, घृणा या लज्जा की जाय, जिससे कुछ उत्पन्न हो या जिससे कुछ लिया जाय वहाँ भी अपादान कारक होता है । अपादान में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है । यथा—

वृक्षात् फलं पतति = वृक्ष से फल गिरता है ।

मिहात् विभेति = शेर से डरता है ।

पापात् जुगुप्सते = पाप से घृणा करता है ।

श्वशुरात् लज्जते = श्वशुर से लज्जा करता है ।

दुग्धात् घृतं भवति = दूध से घी होता है ।

गुरोः विद्यां पठति = गुरु से विद्या पढ़ता है ।

६. षष्ठी—दो नाम शब्दों का परस्पर सम्बन्ध प्रकट करने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है । यथा—

रामस्य गृहम् = राम का घर ।

मम पुस्तकम् = मेरी पुस्तक ।

कूपस्य जलम् = कुएँ का पानी ।

७. अधिकरण—क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं । इस अर्थ में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है । यथा—

वने सिंहः गर्जति = वन में शेर गर्जता है ।

वृक्षे खगाः वसन्ति = वृक्ष पर पक्षी रहते हैं ।

अभ्यास

बड़े टाइप में छपे हुए पदों के कारक समझाते हुए निम्नलिखित श्लोकों का सरल हिन्दी में अर्थ करो—

(क) धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाः चिन्वते ।

धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं, धर्माय तस्मै नमः ।

- धर्मान्नास्त्यपरः सुदृत् भवभृतां धर्मो हि द्रव्यं सतां ,
 धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म ! मां पालय ॥
- (ख) सत्यं वेदेषु जागर्ति, फलं सत्ये परं स्मृतम् ।
 सत्यात् धर्मो दमश्चैव, सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥
- (ग) यस्मिन् जीवति जीवन्ति ब्रह्मः सोऽत्र जीवतु ।
 काकोऽपि किं न कुरुते, चञ्च्वा स्वोदरपूरणम् ॥
- (घ) चलं चित्तं चलं वित्तं चले जीवित-यौवने ।
 चलाचलमिदं सर्वं, कीर्तिर्यस्य स जीवति ॥
- (ङ) आत्मार्यं जीवलोकेऽस्मिन्, को न जीवति मानवः ।
 परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति ॥

पञ्चम अध्याय

शब्द-रूपावली

संस्कृत में प्रयुक्त होने वाले नाम शब्द दो भागों में विभक्त किये जा सकते हैं—अजन्त (स्वरान्त) तथा हलन्त (व्यञ्जनान्त) । भिन्न भिन्न विभक्तियों और वचनों में इनके रूप-परिवर्तन होते समय निम्न-लिखित विभक्ति-प्रत्यय इनके साथ लगते हैं ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा और सम्बोधन	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

ये प्रत्यय 'सु' से शुरू होते हैं और 'प' पर समाप्त होते हैं । इसलिए इनके आदि और अन्त के अक्षर ले कर इन्हें 'सुप' कहते हैं । इसी प्रकार क्रिया में जो प्रत्यय लगते हैं, उन्हें 'तिङ' कहते हैं । (इनका वर्णन आगे आया) । सुप और तिङ प्रत्यय जिस शब्द के अन्त में लगे हों, उसे पद कहते हैं । ऊपर विभक्ति-प्रत्ययों के जो रूप दिये हैं वे प्रारम्भिक हैं, परन्तु भिन्न भिन्न शब्दों के आगे लगाने पर इनमें भिन्न-भिन्न परिवर्तन हो जाते हैं जो विद्यार्थियों के लिए दुर्बोध हैं । उनके लिए रूपों को स्मरण करना ही सुगम है । अतः भिन्न-भिन्न लिङ्गों के कुछ चुने हुए अजन्त और हलन्त शब्दों के रूप सब विभक्तियों और वचनों में आगे दिये जाते हैं ।

अजन्त पुँल्लिङ्ग

अकारान्त पुँल्लिङ्ग (राम) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	"	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	"	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्	"	"
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	"	रामेषु
सम्बोधन	हे राम	हे रामौ	हे रामाः

प्रायः सभी अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'राम' शब्द की तरह ही होते हैं । तृतीया के एकवचन और षष्ठी के बहुवचन में एत्व-विधान के पहले नियम के अनुसार न् को ए हो कर 'रामेण' और 'रामाणाम्' रूप बनते हैं । जहाँ उस नियम से न् को ए नहीं होगा वहाँ 'गजेन' और 'वायसानाम्' आदि रूप होंगे । कुछ प्रमुख अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द आगे दिये जाते हैं—

नर = मनुष्य	अश्व = घोड़ा	गज = हाथी
वानर = बन्दर	कर = हाथ	कुक्कुर = कुत्ता
व्याघ्र = बाघ	मार्जार = बिल्ला	सर्प = साँप
वसन्त = वसन्त	ग्रीष्म = गरमी	शब्द = शब्द
गन्ध = बू	ग्राम = गाँव	छात्र = विद्यार्थी
काल = समय	कण्ठ = गला	केश = बाल
नख = नाखून	सिंह = शेर	अनिल = हवा
बिडाल = बिल्ला	मूपक = चूहा	वायस = कौवा
शुक = तोता	मयूर = मोर	पिक = कोयल
वक = वगुला	हंस = हंस	कपोत = क. तर
हस्त = हाथ	बाल = बालक	जनक = पिता
अग्रज = बड़ा भाई	अनुज = छोटा भाई	आदेश = आज्ञा
मेघ = बादल	पुत्र = पुत्र	चौर = चोर
सूर्य = सूर्य	चन्द्र = चन्द्रमा	अनल = अग्नि
ईश्वर = ईश्वर	मृग = हरिण	शिक्षक = पढ़ाने वाला
वृक्ष = पेड़	अर्थ = धन	सागर = समुद्र
देव = देवता	पापाण = पत्थर	विहङ्गम = पक्षी

दन्त, पाद आदि शब्दों के दो-दो रूप होते हैं। उनमें से एक रूप राम की भाँति होता है और दूसरा उससे भिन्न।

इकारान्त पुल्लिङ्ग हरि शब्द

वि०	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	"	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	"	हरिभ्यः
पञ्चमी	हरेः	"	"
षष्ठी	"	हर्योः	हरीणाम्

सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे	हे हरी	हे हरयः
निम्नलिखित इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप हरि की भाँति होते हैं—			
मुनि = मुनि	ऋषि = ऋषि		कवि = कवि
रवि = सूर्य	कपि = बन्दर		असि = तलवार
गिरि = पहाड़	पाणि = हाथ		यति = योगी
नृपति = राजा	अतिथि = मेहमान		अग्नि = आग
भूपति = राजा	विधि = भाग्य		मणि = रत्न
अरि = शत्रु	अलि = भ्रमर		वद्धि = आग

इकारान्त पुँल्लिङ्ग सखि (मित्र) शब्द

प्रथमा	सख्या	सख्यायौ	सख्यायः
द्वितीया	सख्यायम्	"	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	"	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	"	सखिभ्यः
षष्ठी	"	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	"	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे	हे सख्यायौ	हे सख्यायः

इकारान्त पुँल्लिङ्ग पति (स्वामी) शब्द

प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	"	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	"	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	"	"
षष्ठी	"	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	"	पतिषु
सम्बोधन	हे पते	हे पती	हे पतयः

नोट—भूपति (राजा), नृपति (राजा) आदि शब्दों के रूप पति शब्द की तरह नहीं होते, अपितु हरि शब्द की तरह होते हैं।

उकारान्त पुँल्लिङ्ग गुरु (गुरु) शब्द

प्रथमा	गुरुः	गुरु	गुरुवः
द्वितीया	गुरुम्	"	गुरुन्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरुवे	"	गुरुभ्यः
पञ्चमी	गुरोः	"	"
षष्ठी	गुरोः	गुरोः	गुरुणाम्
सप्तमी	गुरौ	"	गुरुषु
सम्बोधन	हे गुरु	हे गुरु	हे गुरुवः

गुरु शब्द के रूपों की तरह निम्नलिखित उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के भी रूप होते हैं—

भानु = सूर्य	सूनु = पुत्र	शम्भु = परमात्मा
इन्दु = चन्द्रमा	मृत्यु = मौत	पशु = जानवर
इषु = तीर	तरु = वृक्ष	साधु = सज्जन
वायु = हवा	रिपु = दुश्मन	शिशु = बच्चा
शत्रु = दुश्मन	विधु = चन्द्रमा	विष्णु = विष्णु

ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग पितृ (पिता) शब्द

प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	"	पितृन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	"	"
षष्ठी	"	पित्रोः	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः

इसी प्रकार भ्रातृ (भाई), जामातृ (दामाद) आदि शब्दों के रूप होते हैं ।

ऋकारान्त पुल्लिङ्ग कर्तृ (करने वाला) शब्द

प्रथमा	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
द्वितीया	कर्तारम्	"	कर्तृन्
तृतीया	कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
चतुर्थी	कर्त्रे	"	कर्तृभ्यः
पञ्चमी	कर्तुः	"	"
षष्ठी	कर्तुः	कर्त्रोः	कर्तृणाम्
सप्तमी	कर्तरि	"	कर्तृषु
सम्बोधन	हे कर्तः	हे कर्तारौ	हे कर्तारः

निम्नलिखित ऋकारान्त शब्दों के रूप कर्तृ शब्द की तरह होते हैं—

दातृ = दानी	भर्तृ = पति
जेतृ = जीतने वाला	वक्तृ = बोलने वाला
श्रोतृ = सुनने वाला	गन्तृ = जाने वाला
होतृ = हवन करने वाला	सवितृ = सूर्य
जनयितृ = पैदा करने वाला	धातृ = धारण करने वाला

ओकारान्त पुल्लिङ्ग गो (बैल) शब्द

प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	"	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	"	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	"	"
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	"	गोषु
सम्बोधन	हे गौः	हे गावौ	हे गावः

स्त्रीलिङ्ग गो (गाय) शब्द के रूप भी इसी प्रकार होते हैं ।

अभ्यास

१. गज शब्द के सत्र विभक्तियों और वचनो में रूप लिखो ।
२. छात्र शब्द के तृतीया एकवचन और षष्ठी बहुवचन में रूप लिखो ।
३. मुनि, साधु, पितृ, गो शब्दों के द्वितीया बहुवचन, तृतीया एकवचन तथा षष्ठी द्विवचन में रूप लिखो ।
४. मुनि, सखि, नृपति, भानु, भ्रातृ और दातृ शब्दों के सत्र विभक्तियों और वचनों में रूप लिखो ।
५. निम्नलिखित रूप किस शब्द के किस विभक्ति के किस वचन में हैं ?
ग्रामेषु, वसन्तौ, सर्पेण, हरिणा, उदधेः, कवीनाम्, विधे, विधो,
भूपतये, यतिषु, शिशवे, पशून्, श्रोतुः, सवितः ।
६. निम्नलिखित के शुद्ध रूप लिखो ।
नरैः, पितारौ, हे प्रभुः, साधुयाम्, भूपत्या, पतिना ।

अजन्त स्त्रीलिङ्ग

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग रमा (लक्ष्मी) शब्द

प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	"	"
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	"	रमाभ्यः
पञ्चमी	रमायाः	"	"
षष्ठी	"	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे	हे रमे	हे रमाः

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप प्रायः 'रमा' की तरह होते हैं ।
कुछ ऐसे शब्द निम्नलिखित हैं—

माला = द्वार

लज्जा = शर्म

शाला = स्थान

भार्या = पत्नी	विद्या = विद्या	गङ्गा = गङ्गा
लता = बेल	निद्रा = नींद	शोभा = शोभा
शिला = पत्थर	कन्या = लड़की	प्रमदा = युवती
तृष्णा = प्यास	कला = हुनर	आज्ञा = आज्ञा
क्षमा = क्षमा	क्रीडा = खेल	छाया = छाया
प्रजा = प्रजा	देवता = देवता	कथा = कहानी
व्यथा = मानसिक दुःख	छात्रा = छात्रा	रसना = जीभ

निम्नलिखित आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के दो-दो रूप होते हैं, जिनमें एक रूप रमा के समान होता है—

नासिका = नाक	निशा = रात	जरा = बुढ़ापा
--------------	------------	---------------

अम्वा (माता) शब्द के रूप रमा शब्द के समान ही होते हैं; केवल सम्बोधन के एकवचन में 'हे अम्ब' रूप होता है।

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग मति (बुद्धि) शब्द

प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	"	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	"	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	"	"
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	"	मतिषु
सम्बोधन	हे मते	हे मती	हे मतयः

नीचे लिखे इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'मति' के समान होते हैं—

श्रुति = वेद	रीति = तरीका	स्मृति = शास्त्र
कीर्ति = यश	मुक्ति = मोक्ष	विभूति = ऐश्वर्य
स्तुति = प्रशंसा		सृष्टि = संसार
विपत्ति = दुःख	नीति = नीति	प्रीति = प्रेम

भूति = ऐश्वर्य	गति = चाल	रात्रि = रात
प्रकृति = स्वभाव	भक्ति = भक्ति	बुद्धि = बुद्धि
भूमि = पृथिवी	भित्ति = दीवार	विभक्ति = विभक्ति

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग (नदी) शब्द

प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	"	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	"	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	"	"
षष्ठी	"	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

प्रायः ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप नदी की तरह होते हैं। कुछ शब्द निम्नलिखित हैं—

जननी = माता	नलिनी = कमलिनी	पुरी = नगरी
महिषी = रानी	नारी = स्त्री	पुत्री = कन्या
मही = पृथिवी	राज्ञी = रानी	सखी = सहेली
विदुषी = विदुषी	पत्नी = स्त्री	कौमुदी = चन्द्रिका
दासी = दासी	पृथिवी = जमीन	रजनी = रात
विभावरी = रात	कुमारी = कुमारी	धात्री = धाय
देवी = देवी	भगिनी = बहन	शोधनी = झाड़ू

लक्ष्मी, तरी (नौका), तन्त्री (वीणा आदि की तार) आदि शब्दों के प्रथमा एकवचन में लक्ष्मीः, तरीः, तन्त्रीः आदि रूप होते हैं; शेष सब रूप नदी की तरह होते हैं।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग धी (बुद्धि) शब्द

प्रथमा	धीः	धियौ	धियः
द्वितीया	धियम्	धियौ	धियः

तृतीया	धिया	धीभ्याम्	धीभिः
चतुर्थी	धियै, धिये	"	धीभ्यः
पञ्चमी	धियाः, धियः	"	"
षष्ठी	" "	धियोः	धियाम्
सप्तमी	धियाम्, धियि	"	धीषु
सम्बोधन	हे धीः	हे धियौ	हे धियः

श्री (लक्ष्मी), भी (डर), ह्री (लज्जा) आदि शब्दों के रूप धी के समान होते हैं ।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग स्त्री (स्त्री) शब्द

प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	"	स्त्रियः, स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	"	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	"	"
षष्ठी	"	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	"	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग धेनु (गौ) शब्द

प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीयः	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	"	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः, धेनोः	"	"
षष्ठी	" "	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	"	धेनुषु
सम्बोधन	हे धनो	हे धेनू	हे धेनवः

इसी प्रकार रज्जु (रस्सी), तनु (शरीर), हनु (ठोड़ी) आदि

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग वधू (बहू) शब्द

प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	"	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	"	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वाः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूपु
सम्बोधन	हे वधु	वे वध्वौ	हे वध्वः

इसी प्रकार चमू (सेना) आदि शब्दों के रूप होते हैं।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग भू (पृथिवी) शब्द

प्रथमा	भूः	भुवौ	भुवः
द्वितीया	भुवम्	भुवौ	भुवः
तृतीया	भुवा	भूभ्याम्	भूभिः
चतुर्थी	भुवै, भुवे	भूभ्याम्	भूभ्यः
पञ्चमी	भुवाः, भुवः	भूभ्याम्	भूभ्यः
षष्ठी	भुवाः, भुवः	भुवोः	भुवाम्, भूनाम्
सप्तमी	भुवाम्, भुवि	भुवोः	भूपु
सम्बोधन	हे भूः	हे भुवौ	हे भुवः

इसी प्रकार भ्रू (भौह), सुभ्रू (सुन्दर भौह वाली) आदि शब्दों के रूप भी होते हैं।

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग मातृ (माता) शब्द

प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	"	मातृः

शेष पितृ शब्द के समान (देखो पृष्ठ २५)

दुहितृ (लड़की) शब्द के रूप भी मातृ के समान होते हैं।

	ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग स्वस् (वहन) शब्द		
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	"	स्वसृः
	शेष मातृ शब्द के समान ।		

	ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग यां (आकाश) शब्द		
प्रथमा	यौः	यावौ	यावः
	शेष गो शब्द के समान (देवो षष्ठ २५) ।		

	औकारान्त स्त्रीलिङ्ग नौ (नौका) शब्द		
प्रथमा	नौः	नावौ	नावः
द्वितीया	नावम्	"	नावः
तृतीया	नावा	नौभ्याम्	नौभिः
चतुर्थी	नावे	"	नौभ्यः
पञ्चमी	नावः	"	"
षष्ठी	नावः	नावोः	नावाम्
सप्तमी	नावि	"	नौपु
सम्बोधन	हे नौः	हे नावौ	हे नावः

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के सत्र विभक्तियों और वचनों में रूप लिखो—
लता, श्रुति, वाणी, स्त्री, श्री, हनु, चमू, भ्रू, दुहितृ ।

२. रूप लिखो—

- (क) कन्या शब्द का षष्ठी बहुवचन में ।
- (ख) बुद्धि शब्द का सप्तमी एकवचन में ।
- (ग) गौरी शब्द का सम्बोधन एकवचन में ।

३. निम्नलिखित रूप किस शब्द के किस विभक्ति के किस वचन में हैं—
नारीणाम्, विभक्त्याम्, धेन्वोः, यवोः, नौपु ।

अजन्त नपुंसकलिङ्ग

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग गृह (घर) शब्द

प्रथमा	गृहम्	गृहे	गृहाणि
द्वितीया	"	"	"

शेष पुँलिङ्ग राम शब्द की तरह (देखो पृष्ठ २१)

प्रायः सभी अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप गृह की तरह होते हैं । कुछ शब्दों की सूची आगे दी जाती है—

धन = धन	वन = जंगल	कार्य = काम
चित्त = चित्त	रत्न = रत्न	सुख = सुख
दुःख = दुःख	पाप = पाप	फल = फल
नेत्र = आँख	मुख = मुख	पुष्प = फूल
कुसुम = फूल	वचन = वचन	नयन = आँख
पुस्तक = पुस्तक	चक्र = चक्र	विप = ज़हर
वस्त्र = कपड़ा	नगर = नगर	तत्त्व = सचाई
सुवर्ण = सोना	नख = नाखून	पुण्य = पुण्य
कमल = कमल	उदर = पेट	पीयूष = अमृत
लवण = नमक	हिम = बर्फ	मित्र = मित्र
पद = कदम	उद्यान = बाग	क्षेत्र = खेत
भोजन = भोजन	राज्य = राज्य	वैर = शत्रुता
गीत = गान	स्तेय = चोरी	भूषण = ज़ेवर
भेषज = दवाई	कर्तव्य = कर्तव्य	नृत्य = नाच
स्थान = स्थान	आभरण = ज़ेवर	बल = शक्ति

हृदय, उदक, मांस आदि शब्दों के दो-दो रूप होते हैं । एक गृह की भाँति और दूसरा उससे भिन्न ।

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग वारि (पानी) शब्द

प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	"	"	"

तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	"	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	"	"
षष्ठी	"	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	"	वारिषु
सम्बोधन	हे वारे, हे वारि	हे वारिणी	हे वारीणि

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप प्रायः इसी तरह होते हैं ।

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग दधि (दही) शब्द

प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	"	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	"	"
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दध्नि, दधनि	"	दधिषु
सम्बोधन	हे दधे, हे दधि	हे दधिनी	हे दधीनि

अस्थि (हड्डी), अक्षि (आँख) और सक्थि (जंघा) शब्दों के रूप इसी भाँति होते हैं ।

उकारान्त नपुंसकलिङ्ग मधु (शहद) शब्द

प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	"	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	"	"
षष्ठी	"	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	"	मधुषु
सम्बोधन	हे मधो, हे मधु	हे मधुनी	हे मधुनि

इसी प्रकार अम्बु (जल), वसु (धन), अश्रु (आंसू) और वस्तु आदि शब्दों के रूप होते हैं ।

अभ्यास

- (१) पुस्तक, मित्र और धातु शब्द के सब विभक्तियों और वचनों में रूप लिखो ।
- (२) निम्नलिखित रूप किस शब्द की किस विभक्ति के किस वचन में हैं—
मधूनि, वारिणी, अस्थनः, दधीनि ।
- (३) निम्नलिखित रूपों को शुद्ध करो ।
फलान्, वारये, मधूभ्याम् ।

हलन्त पुँल्लिङ्ग

चकारान्त पुँल्लिङ्ग पयोमुच् (बादल) शब्द

प्र०, सं०	पयोमुक्-ग	पयोमुचौ	पयोमुचः
द्वितीया	पयोमुचम्	पयोमुचौ	पयोमुचः
तृतीया	पयोमुचा	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भिः
चतुर्थी	पयोमुचे	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भ्यः
पंचमी	पयोमुचः	"	"
षष्ठी	"	पयोमुचोः	पयोमुचाम्
सप्तमी	पयोमुचि	"	पयोमुचु

जकारान्त पुँल्लिङ्ग भिषज् (वैद्य) शब्द

प्रथमा, सं०	भिषक्, भिषग्	भिषजौ	भिषजः
द्वितीया	भिषजम्	"	"
तृतीया	भिषजा	भिषग्भ्याम्	भिषग्भिः

शेष पयोमुच की तरह ।

इसी प्रकार वणिज् (बनिया), ऋत्विज् (यज्ञ करने वाला), जलमुच् (बादल) आदि शब्दों के रूप होते हैं ।

जकारान्त पुल्लिङ्ग सम्राज (महाराजा) शब्द

प्र०, सं०	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः
द्वि०	सम्राजम्	"	"
तृ०	सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः
च०	सम्राजे	"	सम्राड्भ्यः
पं०	सम्राजः	"	"
ष०	"	सम्राजोः	सम्राजाम्
स०	सम्राजि	"	सम्राट्सु

तकारान्त पुल्लिङ्ग भूभृत् (पहाड़) शब्द

प्र०, सं०	भूभृत्, द्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वितीया	भूभृतम्	"	"
तृतीया	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः
चतुर्थी	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
पंचमी	भूभृतः	"	"
षष्ठी	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्
सप्तमी	भूभृति	"	भूभृत्सु

इसी प्रकार मरुत् (वायु) आदि तकारान्त शब्द

तकारान्त पुल्लिङ्ग भगवत् (परमात्मा) 'शब्द

प्र०	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
द्वि०	भगवन्तम्	"	भगवतः
तृ०	भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः
सं०	हे भगवन्	हे भगवन्तौ	हे भगवन्तः

शेष भूभृत् की भाँति ।

श्रीमत्, गोमत्, बलवत्, भवत् (आप), बुद्धिमत्, धीमत्, यावत्, तावत् आदि मत्वन्त तथा वत्वन्त शब्दों के रूप भगवत् की तरह होते हैं ।

तकारान्त पुल्लिङ्ग ददत् (देता हुआ) शब्द

प्र०, सं०	ददत्	ददतौ	ददतः
द्वि०	ददतम्	ददतौ	ददतः

शेष भूभृत् की भाँति ।

जाग्रत्, शासत् आदि शत्रन्त शब्दों के रूप ददत् की तरह ही होते हैं ।

तकारान्त पुल्लिङ्ग गच्छत् (जाता हुआ) शब्द

प्र०, सं०	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वि०	गच्छन्तम्	"	गच्छतः
तृ०	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः

शेष भूभृत् की भाँति ।

पठत्, चलत्, पश्यत्, दीव्यत्, कुर्वत्, चोरयत् आदि शत्रन्त शब्दों के रूप गच्छत् की तरह होते हैं ।

तकारान्त पुल्लिङ्ग महत् (महान्) शब्द

प्र०	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वि०	महान्तम्	महान्तौ	महतः
तृ०	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
सं०	हे महन्	हे महान्तौ	हे महान्तः

शेष भगवत् शब्द की तरह ।

दकारान्त पुल्लिङ्ग तमोनुद् (सूर्य) शब्द

प०	तमोनुत् , द्	तमोनुदौ	तमोनुदः
द्वि०	तमोनुदम्	"	"
तृ०	तमोनुदा	तमोनुद्भ्याम्	तमोनुद्भिः
च०	तमोनुदे	"	तमोनुद्भ्यः
पं०	तमोनुदः	"	"
प०	"	तमोनुदोः	तमोनुदाम्
स०	तमोनुदि	"	तमोनुत्सु
सं०	हे तमोनुत् , द्	तमोनुदौ	तमोनुदः

दकारान्त पुल्लिङ्ग सुहृद् (मित्र) शब्द

प्र०, सं० सुहृत्-द् सुहृदौ सुहृदः

शेष तमोनुद् की तरह ।

नकारान्त पुल्लिङ्ग राजन् (राजा) शब्द

प्र०	राजा	राजानौ	राजानः
द्वि०	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृ०	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
च०	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पं०	राज्ञः	"	"
प०	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
स०	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
सं०	हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः

नकारान्त पुल्लिङ्ग आत्मन् (आत्मा) शब्द

प्र०	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वि०	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृ०	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
च०	आत्मने	"	आत्मभ्यः
पं०	आत्मनः	"	"
प०	"	आत्मनोः	आत्मनाम्
स०	आत्मनि	"	आत्मसु
सं०	हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मानः

यज्वन् , अध्वन् (मार्ग), अश्मन् (पत्थर) आदि शब्दों के रूप आत्मन् की तरह होते हैं ।

नकारान्त पुल्लिङ्ग श्वन् (कुत्ता) शब्द

प्र०	श्व	श्वानौ	श्वानः
द्वि०	श्वानम्	श्वानौ	शुनः
तृ०	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः

च०	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
पं०	शुनः	"	"
ष०	शुनः	शुनोः	शुनाम्
स०	शुनि	"	श्वसु
सं०	हे श्वन्	हे श्वानौ	हे श्वानः

नकारान्त पुल्लिङ्ग युवन् (युवक) शब्द

प्र०	युवा	युवानौ	युवानः
द्वि०	युवानम्	"	यूनः
तृ०	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
च०	यूने	"	युवभ्यः
पं०	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
ष०	"	यूनोः	यूनाम्
स०	यूनि	"	युवसु
सं०	हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः

नकारान्त पुल्लिङ्ग मघवन् (इन्द्र) शब्द

प्र०	मघवा	मघवानौ	मघवानः
द्वि०	मघवानम्	मघवानौ	मघोनः
तृ०	मघोना	मघवभ्याम्	मघवभिः
च०	मघोने	"	मघवभ्यः
पं०	मघोनः	"	"
ष०	"	मघोनोः	मघोनाम्
स०	मघोनि	"	मघवसु
सं०	हे मघवन्	हे मघवानौ	हे मघवानः

मघवन् शब्द के दो रूप होते हैं—एक ऊपर दिया गया है, दूसरा भगवत् शब्द के समान होता है।

इन्नन्त पुल्लिङ्ग पथिन् (मार्ग) शब्द

प्र० सं०	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
----------	--------	---------	---------

द्वि०	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
तृ०	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
च०	पथे	"	पथिभ्यः
पं०	पथः	"	"
ष०	"	पथोः	पथाम्
स०	पथि	"	पथिषु

इसी प्रकार मथिन् शब्द के रूप होते हैं ।

इन्नन्त पुँल्लिङ्ग करिन् (हाथी) शब्द

प्र०	करी	करिणौ	करिणः
द्वि०	करिणम्	"	"
तृ०	करिणा	करिभ्याम्	करिभिः
च०	करिणे	"	करिभ्यः
पं०	करिणः	"	"
ष०	करिणः	करिणोः	करिणाम्
स०	करिणि	"	करिषु
सं०	हे करिन्	हे करिणौ	हे करिणः

धनिन् , गुणिन् , मानिन् , बलिन् , प्राणिन् , दण्डिन् , शरीरिन् , शशिन् , कामिन् , किरीटिन् , मनीषिन् , मेधाविन् , मायाविन् , अंशु-मालिन् , पक्षिन् , श्रेष्ठिन् , तपस्विन् , तेजस्विन् , अपराधिन् , प्रियवादिन् सत्यभाषिन् , आदि इन्नन्त शब्दों के रूप 'करिन्' की तरह होते हैं ।

शकारान्त पुँल्लिङ्ग दृश् (आँख) शब्द

प्र०, सं०	दृक्-न्	दृशौ	दृशः
द्वि०	दृशम्	"	"
तृ०	दृशा	दृग्भ्याम्	दृग्भिः
च०	दृशे	"	दृग्भ्यः
पं०	दृशः	"	"
ष०	दृशः	दृशोः	दृशाम्

स० दृशि दृशोः दृलु
तादृश्, यादृश्, एतादृश् आदि शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

सकारान्त पुँल्लिङ्ग श्रेयस् (उत्तम) शब्द

प्र०	श्रेयान्	श्रेयांसौ	श्रेयांसः
द्वि०	श्रेयांसम्	"	श्रेयसः
तृ०	श्रेयसा	श्रेयोभ्याम्	श्रेयोभिः
च०	श्रेयसे	श्रेयोभ्याम्	श्रेयोभ्यः
पं०	श्रेयसः	"	"
ष०	"	श्रेयसोः	श्रेयसाम्
स०	श्रेयसि	"	श्रेयस्सु

इसी प्रकार यस अन्त वाले तुलनात्मक विशेषण प्रेयस्, ज्यायस्, गरीयस्, लघीयस्, नेदीयस्, कनीयस्, दवीयस् आदि के रूप होते हैं।

सकारान्त पुँल्लिङ्ग पुंस् (पुरुष) शब्द

प्र०	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
द्वि०	पुमांसम्	"	पुंसः
तृ०	पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभिः
च०	पुंसे	"	पुंभ्यः
पं०	पुंसः	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
ष०	"	पुंसोः	पुंसाम्
स०	पुंसि	"	पुंसु
सं०	हे पुमन्	हे पुमांसौ	हे पुमांसः

सकारान्त पुँल्लिङ्ग विद्वस् (विद्वान्) शब्द

प्र०	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वि०	विद्वांसम्	"	विदुपः
तृ०	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
च०	विदुषे	"	विद्वद्भ्यः
पं०	विदुषः	"	"

प०	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
स०	विदुषि	"	विद्वत्सु
सं०	हे विद्वन्	हे विद्वंसौ	हे विद्वंसः
सकारान्त पुंल्लिङ्ग चन्द्रमस (चन्द्रमा) शब्द			
प्र०	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वि	चन्द्रमसम्	"	"
तृ०	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
च०	चन्द्रमसे	"	चन्द्रमोभ्यः
पं०	चन्द्रमसः	"	"
ष०	"	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
स०	चन्द्रमसि	"	चन्द्रमसु
सं०	हे चन्द्रमः	हे चन्द्रमसौ	हे चन्द्रमसः

वेधस्, दुर्मनस्, सुमनस्, आदि शब्दों के रूप भी इसी प्रकार होते हैं। सुमनस् शब्द नित्य बहुवचन में प्रयुक्त होता है।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के रूप लिखो :—

भूभृत्, इच्छत्, महत्, गुणिन्, यादृश।

२. रूप लिखो—

युवन् शब्द का सप्तमी बहुवचन में। पथिन् शब्द का प्रथमा द्विवचन में।

पुंस् शब्द का तृतीया द्विवचन में। चन्द्रमस् शब्द का सम्बोधन एकवचन में।

३. निम्नलिखित को शुद्ध करो—

राजनौ, मधवानाम्, धीमान्तौ, पुंसभ्यः।

हलन्त स्त्रीलिङ्ग

चकारान्त स्त्रीलिङ्ग वाच् (वाणी) शब्द

प्रथमा, सं०	वाक्-ग	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	"	"

तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भः
चतुर्थी	वाचे	"	वाग्भ्यः
पञ्चमी	वाचः	"	"
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	"	वाल्

जकारान्त स्त्रीलिङ्ग रुज् (रोग) शब्द

प्र०, सं०	रुक्-न्	रुजौ	रुजः
द्वि०	रुजम्	"	"
तृ०	रुजा	रुग्भ्याम्	रुग्भिः
च०	रुजे	"	रुग्भ्यः
पं०	रुजः	"	"
ष०	"	रुजोः	रुजाम्
स०	रुजि	"	रुजु

इसी प्रकार स्रज् (माला) शब्द के रूप होते हैं ।

तकारान्त स्त्रीलिङ्ग सरित् (नदी) शब्द

प्र०, सं०	सरित्	सरितौ	सरितः
द्वि०	सरितम्	सरितौ	सरितः
तृ०	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
च०	सरिते	"	सरिद्भ्यः
पं०	सरितः	"	"
ष०	"	सरितोः	सरिताम्
स०	सरिति	"	सरित्सु

पकारान्त स्त्रीलिङ्ग आप् (पानी) शब्द

आप् शब्द नित्य बहुवचन में प्रयुक्त होता है

प्र०	—	—	आपः
द्वि०	—	—	अपः
तृ०	—	—	अद्भिः

च०	—	—	अद्भ्यः
पं०	—	—	"
ष०	—	—	अपाम्
स०	—	—	अप्सु

शकारान्त स्त्रीलिङ्ग दिश् (दिशा) शब्द

प्रथमा, सं०	दिक्, ग	दिशौ	दिशः
द्वितीया	दिशम्	दिशौ	दिशः
तृतीया	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
चतुर्थी	दिशे	"	दिग्भ्यः
पञ्चमी	दिशः	"	"
षष्ठी	"	दिशोः	दिशाम्
सप्तमी	दिशि	"	दिक्षु

हलन्त नपुंसकलिङ्ग

तकारान्त नपुंसकलिङ्ग जगत् (संसार) शब्द

प्र०, सं०	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वि०	जगत्	जगती	जगन्ति
तृ०	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
च०	जगते	"	जगद्भ्यः
पं०	जगतः	"	"
ष०	"	जगतोः	जगताम्
स०	जगति	जगतोः	जगत्सु

तकारान्त नपुंसकलिङ्ग (महत्) शब्द

महत् शब्द के संबोधन, प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में महान्ति रूप बनता है। शेष जगत् के समान।

नकारान्त नपुंसकलिङ्ग नामन् (नाम) शब्द

प्र०	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
द्वि०	"	" "	"

तृ०	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
च०	नाम्ने	"	नामभ्यः
पं०	नाम्नः	"	"
प०	"	नाम्नोः	नाम्नाम्
स०	नाम्नि, नामनि	"	नामसु
सं०	हे नाम, हे नामन्	हे नाम्नी, हे नामनी	हे नामानि

नकारान्त नपुंसकलिङ्ग शर्मन् (सुख) शब्द

प्रथमा, सं०	शर्म	शर्मणी	शर्माणि
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	शर्मणा	शर्मभ्याम्	शर्मभिः
चतुर्थी	शर्मणे	शर्मभ्याम्	शर्मभ्यः
पंचमी	शर्मणः	"	"
षष्ठी	"	शर्मणोः	शर्मणाम्
सप्तमी	शर्मणि	"	शर्मसु

इसी प्रकार ब्रह्मन् (ईश्वर) और कर्मन् (कर्म) शब्दों के रूप भी होते हैं। ब्रह्मन् शब्द के सम्बोधन में एकवचन में हे ब्रह्मन् हे ब्रह्म दो रूप होते हैं।

नकारान्त नपुंसकलिङ्ग अहन् (दिन) शब्द

प्र०, सं०	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
द्वि०	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
तृ०	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
च०	अह्ने	"	अहोभ्यः
पं०	अह्नः	"	"
प०	"	अह्नोः	अह्नाम् ।
स०	अह्नि, अहनि	अह्नोः	अहस्सु

सकारान्त नपुंसकलिङ्ग मनस् (मन) शब्द

प्र०, सं०	मनः	मनसी	मनांसि
-----------	-----	------	--------

द्वि०	मनः	मनसी	मनांसि
तृ०	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
च०	मनसे	"	मनोभ्यः
पं०	मनसः	"	"
प०	"	मनसोः	मनसाम्
स०	मनसि	"	मनस्सु

इसी प्रकार नभस् (आकाश), तमस् (अन्धकार), रजस् (धूलि), शिरस् (शिर), सरस् (तालाब), यशस् (यश), अम्भस् (जल), चेतस् (मन), वयस् (आयु), रक्षस् (राक्षस), वासस् (वस्त्र), वचस् (वचन), छन्दस् (वेद) और श्रेयस् (कल्याण) आदि शब्दों के रूप भी होते हैं।

सकारान्त नपुंसकलिङ्ग पयस् (दूध) शब्द

प्रथमा	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पयः	"	"
तृतीया	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
चतुर्थी	पयसे	"	पयोभ्यः
पञ्चमी	पयसः	"	"
षष्ठी	"	पयसोः	पयसाम्
सप्तमी	पयसि	"	पयस्सु
सम्बोधन	हे पयः	हे पयसी	हे पयांसि

सकारान्त नपुंसकलिङ्ग धनुस् (धनुष) शब्द

प्र०, सं०	धनुः	धनुषी	धनूपि
द्वि०	"	"	"
तृ०	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
च०	धनुषे	"	धनुर्भ्यः
पं०	धनुषः	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
प०	धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्

स०

धनुषि

धनुषो

धनुषु

अभ्यास

१. सृज्, सरित्, समिध् और पयस् शब्दों के सब विभक्तियों और सब वचनों में रूप लिखो ।

२. रूप लिखो—

(क) जगत् शब्द का प्रथमा बहुवचन में ।

(ख) नामन् शब्द का सप्तमी एकवचन में ।

३. निम्नलिखित रूप किस शब्द की किस विभक्ति के किस वचन में हैं—
आपदि, पयः, वासांसि, चक्षुषा ।

४. निम्नलिखित रूपों को शुद्ध करो—

गिर्भ्याम्, जगतौ, नामेन, शर्मस्य ।

५. निम्नलिखित श्लोकों के अर्थ लिखो और मोटे टाइप में मुद्रित शब्दों के कारको को स्पष्ट करो ।

(क) विद्या ददाति विनयं, विनयान् याति पात्रताम् ।

पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनान् धर्मं ततः सुखम् ॥

(ख) वित्तं बन्धुर्वयः कर्म, विद्या भवति पञ्चमी ।

एतानि मान्यस्थानानि, गरीयो यद् यदुत्तरम् ।

(ग) उपकारिषु यः साधुः, साधुत्वे तस्य को गुणः ।

अपकारिषु यः साधुः, स साधुः कथ्यते बुधैः ॥

(घ) एकमेवाक्षरं यस्तु, गुरुः शिष्यं प्रबोधयेत् ।

पृथिव्यां नास्ति तद् द्रव्यं, यद् दत्त्वा चानृणी भवेत् ॥

(ङ) उपकारिणि विश्रब्धे, शुद्धमतौ यः समारचति पापम् ।

तं जनमसत्यसन्धं, भगवति ! वसुधे कथं बहसि ॥

(च) मनसि वचसि काये जागरे स्वप्नसंगे,

यदि मम पतिभावो राघवादन्यपुंसि ।

तदिह दह ममाङ्गं पावनं पावकेदं

सुकृतदुस्तिभाजां त्वं हि कर्मैकसाक्षी ॥

(छ) एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये ।
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये ।
तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये ।
ये तु घ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे ॥

६. कारकों के प्रयोग का ध्यान करते हुए अनुवाद करो :—

(क) मनुष्य का सुख सत्याचरण में है। श्रीराम ने गौतममुनि की पत्नी अहल्या का उद्धार किया। श्रीकृष्ण का मित्र सुदामा निर्धन ब्राह्मण था। पत्नी पति की आज्ञा का पालन करे—ऐसा शास्त्र कहते हैं। जैन समाज में साधुओं का परम आदर होता है। पिता की आज्ञा से राम ने राज्य-सुख का भी त्याग किया था। हिन्दुओं की गौ में परम श्रद्धा है, वे उसे माता मानते हैं।

शकुन्तला वेलों पर जल फेंकती थी। मनुष्य अपनी बुद्धि से काम करे। ऋषियों के आश्रम नदियों के तट पर होते थे। प्राचीन भारत की स्त्रियाँ विदुषी होती थीं। हम माता के आशीर्वाद से दीर्घायु प्राप्त कर सकते हैं। रक्षाबन्धन बहनों का त्योहार है।

प्रतिदिन फलों को खाओ—स्वास्थ्य लाभ होगा। स्वच्छ जल पीओ। दूध दही का सेवन करो। मधु का प्रयोग भी स्वास्थ्य के लिए हितकर है।

(ख) वैद्य (भिषक्) की चिकित्सा में विश्वास रखो; अवश्य लाभ होगा। शुद्ध वायु (मरुत्) में प्रातः सायं भ्रमण करो। बुद्धिमान् (धीमान्) पुरुष स्वास्थ्यरक्षा के सब उपायों का प्रयोग करता है। मार्ग में जाता हुआ (गच्छत्) मनुष्य कभी मल त्याग न करे। राजा उनको दण्ड देता है, जो समाज के स्वास्थ्य का नाश करते हैं। अपने (आत्मन्) स्वास्थ्य की रक्षा के साथ दूसरों की स्वास्थ्यरक्षा भी हमारा धर्म है। यह कुत्तो (श्वन्) का स्वभाव है, जहाँ जायें वहाँ गंदा कर दें। जवान (युवन्) मनुष्य तो अवश्य दूर खेतों में बाहर प्रातःकाल जाएँ। मार्ग में (पथिन्) मलत्याग करना पाप समझें। चन्द्रमा (शशिन्) की चाँदनी में भ्रमण करने से पुरुष (पुंस्) का स्वास्थ्य अच्छा होता है, आँखों (दृश्) को शान्ति प्राप्त होती है। विद्वान् लोगों का कथन है, शरीर सबसे प्रथम साधन है।

द्रौपदी की वाणी (वाक्) के दोष से महाभारत हुआ था। अविवेक बहुत आपत्तियों (आपद्) का स्थान होता है। राजा हरिश्चन्द्र का यश सब दिशाओं (दिश्) में फैल गया। वृद्धों की असीसों से (आशिप्) आयु, विद्या, यश और बल की वृद्धि होती है। जगत् में उन्हीं का नाम रहता है, जो शुभ कर्मों (कर्मन्) का आचरण करते हैं। दिन-दिन (अहन्) मनुष्य अपने कर्मों का निरीक्षण करे और मन में सदाचरण का निश्चय करे।

षष्ठ अध्याय उपपद विभक्तियाँ

समीपवर्ती पद के योग से जो विभक्तियाँ प्रयुक्त होती हैं, उन्हें उपपद विभक्तियाँ कहते हैं।

उपपद विभक्तियों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

द्वितीया—निम्नलिखित शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है :—

अन्तरेण, अन्तरा, अभितः, परितः, उभयतः, सर्वतः उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः, धिक्, विना, निकषा, प्रति, उप, अधि, अनु, समया, ऋते। यथा—

(क) विद्यामन्तरेण जनस्य न सुखम्—विद्या के विना मनुष्य को सुख नहीं मिलता।

(ख) ग्राममभितः नदी वर्त्तते—ग्राम के चारों तरफ नदी है।

(ग) निकषा ग्रामं नदी वर्त्तते—ग्राम के पास नदी है।

(घ) गृहं प्रति गच्छति—वह घर की तरफ जाता है।

(ङ) मृगमनुधावति—वह मृग के पीछे भागता है।

(च) आसनमध्यास्ते = वह आसन पर बैठता है।

(छ) ज्ञानं विना (ऋते) न मुक्तिः—ज्ञान के विना मुक्ति नहीं होती।

(ज) धिक् पापिनं पुत्रम्—पापी पुत्र को धिक्कार है।

तृतीया—निम्नलिखित शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है :—

१. अलम्, कृतम्, सह तथा सह के समानार्थक साकम्, समम्, सार्धम् आदि शब्द ।

(क) अलं विवादेन—भगड़े से बस ।

(ख) कृतमेभिः विलापैः—इन विलापों से बस ।

(ग) शशिना सह याति कौमुदी—चन्द्रमा के साथ चाँदनी चली जाती है ।

२. जिस विकृत अङ्ग से देही का विकार लक्षित होता है, तद्वाचक शब्दों के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है—

अक्षणा काणः, पृष्ठेन कुञ्जः

चतुर्थी—निम्नलिखित शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है :—

रुच, क्रुध, द्रुह्, स्पृह् तथा ईर्ष्या, असूया अर्थ की धातुओं के योग में तथा नमः, स्वस्ति, अलम् (समर्थ) शब्दों के योग में ।

(क) मद्यं फलं रोचते—मुझे फल अच्छा लगता है ।

(ख) गुरुः शिष्याय क्रुध्यति—गुरु शिष्य पर गुस्से होता है ।

(ग) विश्वामित्रो वसिष्ठाय द्रुह्यति—विश्वामित्र वसिष्ठ से द्रोह करता है ।

(घ) स धनाय स्पृहयति—वह धन को इच्छा करता है ।

(ङ) नमो ब्राह्मणाय—ब्राह्मण को नमस्कार ।

(च) भूतेभ्यः स्वस्ति अस्तु—प्राणियों का कल्याण हो ।

पञ्चमी—निम्नलिखित शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है ।

प्रभृति, आरभ्य, वहिः, अनन्तरम्, ऊर्ध्वम्, पृथक्, विना, ऋते इत्यादि ।

(क) जन्मनः प्रभृति (आरभ्य) मया मांसं न भुक्तम्—जन्म से

मैंने मांस नहीं खाया ।

(ख) ग्रामाद् बहिः अस्माकं विद्यालयोऽस्ति—ग्राम से बाहर हमारा विद्यालय है ।

(ग) अध्ययनादनन्तरं स क्रीडति—पढ़ने के बाद वह खेलता है ।

(घ) ज्ञानात् विना (ऋते) न मुक्तिः—ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती ।

(ङ) गृहात् पृथक् मे भोजनशाला अस्ति—घर से अलग मेरी भोजनशाला है ।

पष्ठो—दूर, समीप, तुल्य शब्दों के योग में पञ्चमी और षष्ठी दोनों का प्रयोग होता है ।

१. नगरस्य (नगरात्) दूरं गृहम्—शहर से घर दूर है ।

२. ग्रामस्य (ग्रामात्) समीपमाश्रमम्—गाँव के पास ही आश्रम है ।

३. चन्द्रस्य (चन्द्रात्) तुल्यं मुखम्—चन्द्र के समान मुख ।

सप्तमी—निर्धारण (चुनाव) अर्थ में सप्तमी या षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है । स्निह् , अनुरञ्ज् , रम् धातुओं के साथ सप्तमी का प्रयोग होता है ।

१. नृणां (नृपु) ब्राह्मणः श्रेष्ठः—मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है ।

२. गवां (गोपु) कृष्णा बहुक्षारा—गोवों में काली गौ बहुत दूध देती है ।

३. छात्राणां (छात्रेषु) मैत्रः पटुः—विद्यार्थियों में मैत्र चतुर है ।

४. बालेऽस्मिन् स्निह्यति मे मनः—इस बालक में मेरा मन स्नेह रखता है ।

५. राजनि प्रजा अनुरज्यन्ति—राजा में प्रजा प्रेम करती है ।

६. ब्रह्मणि रमते मनः—ब्रह्म में मन रमण करता है ।

अभ्यास

१. ऋते, विना, अनन्तरम् , अन्तरेण, प्रभृति के योग में कौन-सी विभक्तियों आती हैं ? इनको वाक्यों में प्रयोग करो ।

२. शुद्ध करो—

(क) रामस्य सह गच्छ ।

(ख) धिक् ब्राह्मणाय पलाण्डुभोजिने ।

(ग) रामस्य विना न कोऽपि समर्थः समुद्रं लङ्घयितुम् ।

(घ) चक्षुषोः अन्धः ।

(ङ) दीनस्य प्रति दया कर्तव्या ।

३. निम्नलिखित श्लोको में निर्दिष्ट उपपद विभक्तियों को स्पष्ट करो ।

श्लोकों के अर्थ भी लिखो—

(क) शशिना सह याति कौमुदी, सह मेघेन तडित् प्रलीयते ।

प्रमदा पतिवर्त्मगा इति प्रतिपन्नं हि विचेतनैरपि ॥

(ख) न विना परवादेन, रमते दुर्जनो जनः ।

काकः सर्वरसान् भुङ्क्ते, विनाऽमेध्यं न तृयति ।

(ग) गत्सङ्गतीह विदिता तव भक्तिहेतुः

साप्यद्य नास्ति तव पण्डितमानिनो मे ।

तामन्तरेण न हि सा क्व च बोधवार्ता

तस्मात् त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो ॥

सप्तम अध्याय

सर्वनाम शब्द

जो पद संज्ञा के स्थान पर उसके अर्थ को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहा जाता है; जैसे—“बालकाः पठन्ति, तान् शिक्षकः अध्यापयति” वाक्य में ‘तान्’ पद ‘बालकान्’ पद के स्थान पर आया है, अतः यह सर्वनाम है ।

सर्वनामों का प्रयोग तीनों लिङ्गों में होता है । पुँल्लिङ्ग संज्ञा-शब्दों के स्थान में पुँल्लिङ्ग सर्वनाम, स्त्रीलिङ्ग संज्ञा-शब्दों के स्थान में स्त्रीलिङ्ग

सर्वनाम, तथा नपुंसकलिङ्ग संज्ञा-शब्दों के स्थान पर नपुंसकलिङ्ग सर्वनाम शब्दों का प्रयोग होता है ।

अधिकतर प्रयोग में आने वाले सर्वनाम शब्द निम्नलिखित हैं—
सर्व, तद्, यद्, किम्, युष्मद्, अस्मद्, इदम् तथा अदस् ।

सर्वनाम शब्दों के कारक और वचन भी संज्ञा-शब्दों के सदृश ही होते हैं । इनका सम्बोधन नहीं होता ।

सर्व (सत्र) शब्द

पुंलिङ्ग

प्रथमा	सर्वः	सर्वो	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

शेष पुंलिङ्ग की तरह ।

अन्य शब्द का नपुंसकलिङ्ग में प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में अन्यत् रूप होता है; इसके शेष सब रूप सर्व शब्द की भाँति होते हैं।

पूर्व (पहला) शब्द

पुँल्लिङ्ग

प्र०	पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे, पूर्वाः
द्वि०	पूर्वम्	"	पूर्वान्
तृ०	पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेः
च०	पूर्वस्मै	"	पूर्वेभ्यः
पं०	पूर्वस्मात्, पूर्वात्	"	"
ष०	पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्
स०	पूर्वस्मिन्	पूर्वयोः	पूर्वेषु

स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में पूर्व शब्द के रूप सर्व शब्द की तरह होते हैं।

तद् (वह) शब्द

पुँल्लिङ्ग

प्र०	सः	तौ	ते
द्वि०	तम्	तौ	तान्
तृ०	तेन	ताभ्याम्	तैः
च०	तस्मै	"	तेभ्यः
पं०	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
ष०	तस्य	तयोः	तेषाम्
स०	तस्मिन्	"	तेषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	सा	ते	ताः
द्वि०	ताम्	"	ताः
तृ०	तया	ताभ्याम्	ताभिः

च०	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पं०	तस्याः	"	"
ष०	"	तयोः	तासाम्
स०	तस्याम्	तयोः	तासु
नपुंसकलिङ्ग			
प्र०	तत्	ते	तानि
द्वि०	"	"	"

शेष पुँलिङ्ग की तरह
एतद् (यह) शब्द

पुँलिङ्ग

प्र०	एषः	एतौ	एते
द्वि०	एतम् , एनम्	एतौ , एनौ	एतान् , एनान्
तृ०	एतेन , एनेन	एताभ्याम्	एतेभिः
च०	एतस्मै	"	एतेभ्यः
पं०	एतस्मात्	"	"
ष०	एतस्य	एतयोः , एनयोः	एतेषाम्
स०	एतस्मिन्	" "	एतेषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	एषा	एते	एताः
द्वि०	एताम् , एनाम्	एते , एने	एताः , एनाः
तृ०	एतया , एनया	एताभ्याम्	एताभिः
च०	एतस्यै	"	एताभ्यः
पं०	एतस्याः	"	"
ष०	"	एतयोः , एनयोः	एतासाम्
स०	एतस्याम्	" "	एतासु

नपुंसकलिङ्ग

प्र०	एतत्	एते	एतानि
------	------	-----	-------

द्वि० एतत्, एनत् एते, एने एतानि, एनानि
शेष पुँल्लिङ्ग की तरह ।

यद् (जो) शब्द

पुँल्लिङ्ग

प्र०	यः	यौ	ये
द्वि०	यम्	यौ	यान्
तृ०	येन	याभ्याम्	यैः
च०	यस्मै	"	येभ्यः
पं०	यस्मात्	"	"
ष०	यस्य	ययोः	येषाम्
स०	यस्मिन्	ययोः	येषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	या	ये	याः
द्वि०	याम्	"	"
तृ०	यया	याभ्याम्	याभिः
च०	यस्यै	"	याभ्यः
पं०	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
ष०	यस्याः	ययोः	यासाम्
स०	यस्याम्	"	यासु

नपुंसकलिङ्ग

प्र०	यत्	ये	यानि
द्वि०	"	"	"

शेष पुँल्लिङ्ग की तरह ।

किम् (कौन) शब्द

पुँल्लिङ्ग

प्रथमा	कः	कौ	के
--------	----	----	----

द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

शेषे पुल्लिङ्ग तरह

युष्मद् (तुम्) शब्द

तीनों लिङ्गों में

प्र०	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वि०	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृ०	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
च०	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पं०	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
ष०	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
स०	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अस्मद् (मैं) शब्द

तीनों लिङ्गों में

प्र०	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वि०	माम् , मा	आवाम् , नौ	अस्मान् , नः
तृ०	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
च०	मह्यम् , मे	आवाभ्याम् , नौ	अस्मभ्यम्
पं०	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
ष०	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम् , नः
स०	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् और अस्मद् शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं ।

इदम् (यह) शब्द

पुँल्लिङ्ग

प्र०	अयम्	इमौ	इमे
द्वि०	इमम् , एनम्	इमौ, एनौ	इमान् , एनान्
तृ०	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
च०	अस्मै	"	एभ्यः
पं०	अस्मात्	"	"
ष०	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
स०	अस्मिन्	" "	एषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	इयम्	इमे	इमाः
द्वि०	इमाम् , एनाम् ,	इमे, एने	इमाः, एनाः
तृ०	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
च०	अस्यै	"	आभ्यः
पं०	अस्याः	"	"
ष०	"	अनयोः, एनयोः	आसाम्

स०	अस्याम्	अनयोः, एनयोः	आसु
		नपुंसकलिङ्ग	
प्र०	इदम्	इमे	इमानि
द्वि०	इदम्, एनत्	इमे, एने	इमानि, एनानि
	शेष पुँल्लिङ्ग की तरह ।		

अदस् (वह) शब्द

पुँल्लिङ्ग

प्र०	असौ	अमू	अमी
द्वि०	अमुम्	अमू	अमून्
तृ०	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
च०	अमुष्मै	"	अमीभ्यः
पं०	अमुष्मात्	"	"
ष०	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
स०	अमुष्मिन्	"	अमीषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	असौ	अमू	अमूः
द्वि०	अमूम्	"	"
तृ०	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
च०	अमुष्यै	"	अमूभ्यः
पं०	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
ष०	"	अमुयोः	अमूषाम्
स०	अमुष्याम्	"	अमूषु

नपुंसकलिङ्ग

प्र०	अदः	अमू	अमूनि
द्वि०	"	"	"

शेष पुँल्लिङ्ग की तरह

उभ (दोनों) शब्द

उभ शब्द के रूप केवल द्विवचन में होते हैं ।

	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्र०	उभौ	उभे	उभे
द्वि०	"	"	"
तृ०	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
च०	"	"	"
पं०	"	"	"
ष०	उभयोः	उभयोः	उभयोः
स०	"	"	"

अभ्यास

१. सर्वनाम किसे कहते हैं ।

२. निम्नलिखित सर्वनामों के रूप लिखो—

सर्व (पुँल्लिङ्ग), एतद् (स्त्रीलिङ्ग), युष्मद् (नपुंसकलिङ्ग) ।

३. रूप लिखो—

किम् शब्द का स्त्रीलिङ्ग में षष्ठी बहुवचन में ।

अस्मद् शब्द का तृतीया द्विवचन में ।

यत् शब्द का स्त्रीलिङ्ग में चतुर्थी एकवचन में ।

४. शुद्ध करो—

सर्वाय, युष्माभ्याम्, अस्येषु ।

५. निम्नलिखित श्लोको में सर्वनाम शब्दों को विभक्तियों पहचानो तथा उनके अर्थ करो :—

(क) यत् पृथिव्यां ब्रीहियवं, हिरण्यं पशवः स्त्रियः ।

नालमेकस्य तत् सर्वं, इति पश्यन्न मुह्यति ॥

(ख) येन केन प्रकारेण, यस्य कस्यापि जन्तुनः ।

सन्तोषं जनयेत् प्राज्ञः, तदेवेश्वरपूजनम् ॥

(ग) क्वासं क च गमिष्यामि, कश्चाहं किमिहागतः ।

को बन्धुर्मम कस्याहम्, इत्यात्मानं विचिन्तय ॥

(घ) यस्मिन् यथा वर्तते यो मनुष्यः

तस्मिन् तथा वर्तितव्यं स धर्मः ।

मायाचारो मायया वर्तितव्यः

साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः ॥

(ङ) न कश्चिदपि जानाति, किं कस्य श्वो भविष्यति ।

अतः श्वः करणीयानि, कुर्यादश्वैव बुद्धिमान् ॥

अष्टम अध्याय

विशेषण

जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम के गुण, अवस्था, संज्ञा तथा परिमाण आदि का बोध हो, उसे विशेषण (adjective) कहते हैं ।

नीलं नभः, प्रभूतं धनं, त्रिचतुराः बालकाः, इमानि पुस्तकानि, इत्यादि वाक्यों में नीलं, प्रभूतं, त्रिचतुराः तथा इमानि शब्द क्रमशः नभः, धनं, बालकाः तथा पुस्तकानि के विशेषण हैं । ये विशेषण शब्दों को विशेषित (qualify) करते हैं, इसलिए इन्हें विशेषित करने वाला अथवा विशेषण कहते हैं । संस्कृत भाषा में ऐसे विशेषण शब्दों का बहुत प्रयोग किया जाता है, अतः इनका समुचित ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए ।

(१) विशेषण शब्दों के लिङ्ग, विभक्ति और वचन विशेष्य के लिङ्ग, विभक्ति और वचन के अनुसार होते हैं । यथा—मनोहरः अश्वः, मनोहराः अश्वाः, मनोहरं फलम्, सुन्दरे लते, सुन्दराणि पुष्पाणि इत्यादि ।

(२) विशेषण शब्दों से तारतम्य (Degrees of Comparison) का भी बोध होता है । इसके लिए 'तर' 'तम' प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है । कुछ विशेषण शब्दों के उदाहरण आगे दिये जाते हैं—

स्वरूपवाचक Positive degree	तुलनावाचक Comparative	अतिशयवाचक Superlative
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
गुरु	गुरुतर	गुरुतम
लघु	लघुतर	लघुतम
महत्	महत्तर	महत्तम
बलवत्	बलवत्तर	बलवत्तम

यह स्पष्ट है कि दो में किसी एक की उत्कृष्टता दिखाने के लिए तुलनावाचक 'तर' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है और सब में किसी एक की उत्कृष्टता दिखाने के लिए अतिशयवाचक 'तम' का प्रयोग किया जाता है।

(३) क्रिया तथा अव्यय शब्दों के पीछे 'तर' 'तम' अथवा 'तराम्' 'तमाम्' का उपर्युक्त अर्थों में ही प्रयोग किया जाता है। यथा—

रोदितितराम्, रोदितितमाम्। जल्पतितराम्, जल्पतितमाम्।
उच्चैस्तर, उच्चैस्तम। नीचैस्तर, नीचैस्तम। इत्यादि।

(४) तर, तम प्रत्ययों के अर्थ में ही ईयम् और इष्ट प्रत्ययों का भी प्रयोग होता है। परन्तु ये प्रत्यय कुछ निश्चित गुणवाचक विशेषणों के पीछे ही लग सकते हैं। तर, तम प्रत्यय किसी भी विशेषण के साथ लगाये जा सकते हैं।

विशेषण शब्दों के रूप अजन्त अथवा हलन्त शब्दों की तरह लिङ्गानुसार बन सकते हैं। यथा—(अजन्त पुं०) प्रियः, प्रियौ, प्रियाः, (स्त्री०) प्रिया, प्रिये, प्रियाः; (नपुं) प्रियम्, प्रियं, प्रियाणि आदि। (हलन्त पुं०) महान्, महान्तौ महान्तः, (स्त्री०) महती, महत्यौ, महत्यः; (नपुं०) महत्, महती, महान्ति।

इष्ट-प्रत्ययान्त शब्दों के रूप लिङ्गानुसार नर, लता, फल के सदृश बनाये जा सकते हैं। यथा—(पुं०) ज्येष्ठः, ज्येष्ठौ, ज्येष्ठाः;

(स्त्री०) ज्येष्ठा, ज्येष्ठे, ज्येष्ठाः; (नपुं०) ज्येष्ठम्, ज्येष्ठे, ज्येष्ठानि ।
ईयस्-प्रत्ययान्त शब्दों के रूप नीचे दिय जाते हैं ।

प्रेयस् (बहुत प्यारा) पुल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	प्रेयान्	प्रेयांसौ	प्रेयांसः
द्वितीया	प्रेयांसम्	"	प्रेयसः
तृतीया	प्रेयसा	प्रेयोभ्याम्	प्रेयोभिः
चतुर्थी	प्रेयसे	"	प्रेयोभ्यः
पञ्चमी	प्रेयसः	"	"
षष्ठी	"	प्रेयसोः	प्रेयसाम्
सप्तमी	प्रेयसि	"	प्रेयस्सु
सम्बोधन	हे प्रेयन्	हे प्रेयांसौ	हे प्रेयांसः

स्त्रीलिङ्ग

	प्रेयसी	प्रेयस्यौ	प्रेयस्यः
प्रथमा	प्रेयसी	प्रेयस्यौ	प्रेयस्यः
द्वितीया	प्रेयसीम्	प्रेयस्यौ	प्रेयसीः
तृतीया	प्रेयस्या	प्रेयसीभ्याम्	प्रेयसीभिः
चतुर्थी	प्रेयस्यै	"	प्रेयसीभ्यः
पञ्चमी	प्रेयस्याः	"	"
षष्ठी	प्रेयस्याः	प्रेयस्योः	प्रेयसीनाम्
सप्तमी	प्रेयस्याम्	"	प्रेयसीषु
सम्बोधन	हे प्रेयसि	हे प्रेयस्यौ	हे प्रेयस्यः

नपुंसकलिङ्ग

	प्रेयः	प्रेयसी	प्रेयांसि
प्रथमा	प्रेयः	प्रेयसी	प्रेयांसि
द्वितीया	प्रेयः	प्रेयसी	प्रेयांसि
सम्बोधन	हे प्रेयः	हे प्रेयसी	हे प्रेयांसि

शेष पुल्लिङ्ग की तरह

अभ्यास

१. ईयस् और तम प्रत्यय किन अर्थों में प्रयुक्त होते हैं ? उदाहरणों से स्पष्ट करो ।

२. अनुवाद करो—

(क) ये दो घोड़े सुन्दर हैं । ये सब फल मीठे हैं । हिमालय ऊँचा पर्वत है । राम लक्ष्मण दो बलवान भाई थे । ऊँचे वृक्षों पर सुन्दर पक्षी मधुर शब्द कर रहे थे । मनुष्य मैले वस्त्र को पसन्द नहीं करता । एक प्यासा पथिक मार्ग में बैठा था । यह संसार नश्वर है । इसमें सब पदार्थ अस्थिर हैं । शुभ कामों का फल शुभ होता है । विद्वान् मनुष्य का सम्मान अपने देश में ही नहीं, सब देशों में होता है । इस रमणीय बाग में एक स्वच्छ सरोवर पर दो सुन्दर हरिण खेल रहे थे ।

(ख) विद्या और बल में विद्या बड़ी है । इन दो बालकों में वह छोटा है । उन दो फलों में यह फल मुझे अधिक प्रिय है । मेरा घर तेरे घर से अधिक दूर है । इन दो सख्याओं में कौन सी संख्या बड़ी है । इन दो कन्याओं में माता को यह कन्या अधिक प्यारी है । तुम दोनों में कौन बड़ा है ? मैं राजेन्द्रकुमार से छोटा हूँ । इन नौ फलों में कौन सा फल अधिक कोमल है ।

(ग) भारत में जगन्नाथ का मन्दिर सब से बड़ा है । हिमालय सब पर्वतों से ऊँचा है । सब नदियों में गंगा का पानी सबसे अधिक स्वच्छ है । पशुओं में हाथी सबसे भारी है । छोटे पुत्र माता को सबसे प्यारे होते हैं । पाप और पुण्य में पुण्य की विजय होती है । दशरथ की सब पत्नियों में कौशल्या बड़ी थी । दशरथ का सबसे बड़ा तथा सबसे अधिक गुणवान पुत्र राम था । लक्ष्मण राम का छोटा भाई था ।

३. अधोनिर्दिष्ट में विशेषण शब्दों को स्पष्ट करते हुए श्लोकों के अर्थ करो ।

(क) सन्तुष्टस्य निरीहस्य, स्वात्मारामस्य यत्सुखम् ।

कुतस्तत् कामलोभेन, धावतोऽर्थेहया दिशः ॥

(ख) कुतस्त्वा कश्मलमिदं, विषमे समुपस्थितम् ।

अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥

- (ग) भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः
 नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घनाः ।
 अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः
 स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ॥
- (घ) गङ्गातीरे हिमगिरिशिलाबद्धपद्मासनस्य ।
 ब्रह्मध्यानाभ्यसनविधिना योगनिद्रां गतस्य ।
 किं तैर्भाव्यं मम सुदिवसैः यत्र ते निर्विशङ्काः ।
 कण्ड्वयन्ते जरटहरिणाः स्वाङ्गमङ्गैः मदीयैः ।
-

नवम अध्याय

संख्यावाची शब्द (Numerals)

संख्यावाची शब्द विशेषण शब्दों के अवान्तर भेद ही हैं। अतः इनके लिङ्ग, विभक्ति और वचन भी संज्ञा के अनुसार ही होते हैं। इनका प्रयोग संज्ञा शब्दों के अनुकूल तीनों लिङ्गों में किया जाता है। नीचे एक से दस पर्यन्त संख्यावाची शब्दों के रूप दिये जाते हैं—

एक (एक) शब्द

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पंचमी	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्
षष्ठी	एकस्य	”	एकस्य
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

एक शब्द ‘एक’ अर्थ में नित्य एकवचनान्त होता है। ‘कई’ अर्थ में

इसके बहुवचन में 'सर्व' की तरह रूप होते हैं।

द्वि (दो) शब्द

(द्वि शब्द केवल द्विवचन में ही होता है।)

	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	"	"	"
पंचमी	"	"	"
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	"	"	"

त्रि (तीन) शब्द

('त्रि' शब्द केवल बहुवचन में ही होता है।)

	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	"	"
तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पञ्चमी	"	"	"
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

चतुर् (चार) शब्द

(चतुर शब्द भी नित्य बहुवचन में ही होता है।)

	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्र०	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वि०	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि

तृ०	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
च०	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पं०	"	"	"
प०	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
स०	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

‘पञ्चन्’ से ले कर ‘दशन्’ तक शब्द तीनों लिङ्गों में समान होते हैं और सदा बहुवचन में होते हैं ।

पञ्चन् [पाँच]

प्र०	पञ्च
द्वि०	"
तृ०	पञ्चभिः
च०	पञ्चभ्यः
पं०	"
प०	पञ्चानाम्
स०	पञ्चसु

सप्तन् (सात)

प्र०	सप्त
द्वि०	"
तृ०	सप्तभिः
च०	सप्तभ्यः
पं०	"
प०	सप्तानाम्
स०	सप्तसु

नवन् (नौ)

प्र०	नव
द्वि०	"

षष् [छः]

प्र०	षट्
द्वि०	"
तृ०	षड्भिः
च०	षड्भ्यः
पं०	"
प०	षण्णाम्
स०	षट्सु, षट्सु

अष्टन् (आठ)

प्र०	अष्टौ, अष्ट
द्वि०	" "
तृ०	अष्टाभिः, अष्टभिः
च०	अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः
पं०	" "
प०	अष्टानाम्
स०	अष्टासु, अष्टसु

दशन् (दश)

प्र०	दश
द्वि०	"

तृ०	नवभिः	तृ०	दशभिः
च०	नवभ्यः	च०	दशभ्यः
पं०	"	पं०	"
ष०	नवानाम्	ष०	दशानाम्
स०	नवसु	स०	दशसु

कति (कितना) शब्द

(कति शब्द भी नित्य बहुवचनान्त है ।)

प्र०	कति
द्वि०	कति
तृ०	कतिभिः
च०	कतिभ्यः
पं०	"
ष०	कतीनाम्
स०	कतिषु

गणना

दस तक संख्याएँ ऊपर दी गई हैं। इसके आगे की संख्यायें दो संख्यावाचक शब्दों को मिलाने से बनती हैं। यथा एक + दश = एकादश (ग्यारह), चतुर + दश = चतुर्दश (चौदह)।

द्वि, त्रि और अष्टन् जब अन्य शब्दों से मिलते हैं तो उनमें कुछ परिवर्तन हो जाते हैं जैसे द्वि को द्वा—द्वादश, त्रि को त्रयस्—त्रयोदश, अष्टन् को अष्टा = अष्टादश। पञ्चन्, सप्तन् आदि के नकार का लोप हो जाता है। दश के योग में 'एक' को 'एका' हो जाता है—एकादश। १९, २९, ३९ आदि की रचना में 'नव' अथवा 'एकोन' का प्रयोग किया जाता है। विद्यार्थियों के लिए इन संख्यावाचक शब्दों (Cardinals) की तालिका नीचे दी जाती है।

संख्यावाचक शब्दों का एक और प्रकार भी है, जिसे क्रमवाचक

अथवा पूरण (Ordinal) कहते हैं । एक, द्वि, त्रि, चतुर और षष् से क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और षष्ठ पूरण बनते हैं । पञ्चन्, तथा सप्तन् से दशन् तक की संख्याओं के पूरण 'न्' को 'म' करने से बनते हैं । दश के बाद एकादश आदि में कोई विकार नहीं होता । केवल विंशति आदि के दो रूप बनते हैं । एक तो अन्त में 'तम' लगाने से—यथा विंशतितमः—दूसरा 'ति' का लोप करने से—यथा विंशः आदि । संख्यावाचक शब्दों के साथ ही क्रमवाचक शब्द भी नीचे दिये जाते हैं । यहाँ इनके केवल पुँलिङ्ग रूप ही दिये गये हैं ।

अङ्क संख्यावाचक	पूरण
१ एकः	प्रथमः
२ द्वौ	द्वितीयः
३ त्रयः	तृतीयः
४ चत्वारः	चतुर्थः
५ पञ्च	पञ्चमः
६ षट्	षष्ठः
७ सप्त	सप्तमः
८ अष्ट	अष्टमः
९ नव	नवमः
१० दश	दशमः
११ एकादश	एकादशः
१२ द्वादश	द्वादशः
१३ त्रयोदश	त्रयोदशः
१४ चतुर्दश	चतुर्दशः
१५ पञ्चदश	पञ्चदशः
१६ षोडश	षोडशः
१७ सप्तदश	सप्तदशः
१८ अष्टादश	अष्टादशः

अङ्क संख्यावाचक

पूरण

१९ { नवदश
एकोनविंशतिः

नवदशः

एकोनविंशतितमः

एकोनविंशः

२० विंशतिः

विंशतितमः

विंशः

२१ एकविंशतिः

एकविंशतितमः

एकविंशः

२२ द्वाविंशतिः

द्वाविंशतितमः

द्वाविंशः

२३ त्रयोविंशतिः

त्रयोविंशतितमः

त्रयोविंशः

२४ चतुर्विंशतिः

चतुर्विंशतितमः

चतुर्विंशः

२५ पञ्चविंशतिः

पञ्चविंशतितमः

पञ्चविंशः

२६ षड्विंशतिः

षड्विंशतितमः

षड्विंशः

२७ सप्तविंशतिः

सप्तविंशतितमः

सप्तविंशः

२८ अष्टाविंशतिः

अष्टाविंशतितमः

अष्टाविंशः

२९ { नवविंशतिः
एकोनत्रिंशत्

नवविंशतितमः

नवविंशः

एकोनत्रिंशत्तमः

एकोनत्रिंशः

३० त्रिंशत्

त्रिंशत्तमः

त्रिंशः

३१ एकत्रिंशत्

एकत्रिंशत्तमः

एकत्रिंशः

३२ द्वात्रिंशत्

द्वात्रिंशत्तमः

द्वात्रिंशः

३३ त्रयस्त्रिंशत्

त्रयस्त्रिंशत्तमः

त्रयस्त्रिंशः

३४ चतुस्त्रिंशत्

चतुस्त्रिंशत्तमः

चतुस्त्रिंशः

३५ पञ्चत्रिंशत्

पञ्चत्रिंशत्तमः

पञ्चत्रिंशः

३६ षट्त्रिंशत्

षट्त्रिंशत्तमः

षट्त्रिंशः

३७ सप्तत्रिंशत्

सप्तत्रिंशत्तमः

सप्तत्रिंशः

३८ अष्टात्रिंशत्

अष्टात्रिंशत्तमः

अष्टात्रिंशः

३९ { नवत्रिंशत्
एकोनचत्वारिंशत्

नवत्रिंशत्तमः

नवत्रिंशः

एकोनचत्वारिंशत्तमः

एकोनचत्वारिंशः

४० चत्वारिंशत्

चत्वारिंशत्तमः

चत्वारिंशः

४१ एकचत्वारिंशत्

एकचत्वारिंशत्तमः

एकचत्वारिंशः

अङ्क	संख्यावाचक	पूरण	
४२	{ द्वाचत्वारिंशत् द्विचत्वारिंशत्	द्वाचत्वारिंशत्तमः द्विचत्वारिंशत्तमः	द्वाचत्वारिंशः द्विचत्वारिंशः
४३	त्रयश्चत्वारिंशत्	त्रयश्चत्वारिंशत्तमः	त्रयश्चत्वारिंशः
४४	चतुश्चत्वारिंशत्	चतुश्चत्वारिंशत्तमः	चतुश्चत्वारिंशः
४५	पञ्चचत्वारिंशत्	पञ्चचत्वारिंशत्तमः	पञ्चचत्वारिंशः
४६	षट्चत्वारिंशत्	षट्चत्वारिंशत्तमः	षट्चत्वारिंशः
४७	सप्तचत्वारिंशत्	सप्तचत्वारिंशत्तमः	सप्तचत्वारिंशः
४८	अष्टचत्वारिंशत्	अष्टचत्वारिंशत्तमः	अष्टचत्वारिंशः
४९	{ नवचत्वारिंशत् एकोनपञ्चाशत्	नवचत्वारिंशत्तमः एकोनपञ्चाशत्तमः	नवचत्वारिंशः एकोनपञ्चाशः
५०	पञ्चाशत्	पञ्चाशत्तमः	पञ्चाशः
६०	षष्टिः	षष्टितमः	
७०	सप्ततिः	सप्ततितमः	
८०	अशीतिः	अशीतितमः	
९०	नवतिः	नवतितमः	
१००	शतम्	शततमः	
१०००	सहस्रम्	सहस्रतमः	
१००००	अयुतम्	अयुततमः	
१०००००	लक्षम्	लक्षतमः	

शत से अधिक संख्या बनाने के लिए 'अधिक' या 'उत्तर' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

यथा—१२५ = पञ्चविंशति + अधिक + शतम् = पञ्चविंशत्यधिक-शतम्, १९९ = नवनवत्युत्तरशतम्।

२१५ के लिए संस्कृत शब्द 'पञ्चदशाधिकद्विशतम्' है। एवं ४३५ = पञ्चत्रिंशदधिकचतुश्शतम्। १९३७ = सप्तत्रिंशदधिकनवशताधिकसहस्रम्। ५४३२७ = सप्तविंशत्यधिक-त्रिचत्वारिंशच्छताधिकपञ्चायुतम्।

पञ्चन् से ले कर अष्टादशन् पर्यन्त सब शब्द तथा नवदशन् शब्द सदा बहुवचनान्त एवं तीनों लिङ्गों में एक समान होते हैं। एकोनविंशति से ले कर नवनवति पर्यन्त संख्यावाचक सब शब्द सदा एकवचनान्त रहते हैं परन्तु इन सब के विशेष्य बहुवचनान्त ही होते हैं, यथा—विंशतिः नराः इत्यादि। एकोनविंशति से लेकर नवनवति पर्यन्त समस्त शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति आदि इकारान्त शब्दों के रूप मति शब्द की तरह होते हैं और त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् आदि शब्दों के रूप भूभृत् के समान होते हैं। किन्तु ये सब तीनों लिङ्गों के विशेषण होते हैं, यथा—विंशतिः बालकाः, विंशतिः बालिकाः, विंशतिः फलानि। शत, सहस्र, अयुत, लक्ष आदि शब्द नपुंसकलिङ्ग में हैं, उनके रूप फल शब्द के समान होते हैं। आवृत्ति-बोधक होने पर शतादि शब्दों का द्विवचन तथा बहुवचन भी हो जाता है। यथा = द्वे शते (दो सौ), त्रीणि शतानि (तीन सौ)।

अभ्यास

१. ५५, ६३, ६४, १२६, २३५, ४६७, ७८६, ६६६, ११२५, १६६३, ३४३५२, २४३४३१ के संख्यावाची शब्द लिखो।

२. अनुवाद करो—

(क) मुझे पाँच फल दो। उसे सात पुस्तकें दो। मैं अपने नौकर को बारह रुपये प्रति मास देता हूँ। उसके दो पुत्र तथा तीन कन्याएँ थीं। कुम्हार के चार भाई थे। वह पाँचो भाइयों में सबसे बड़ा था।

(ख) इस श्रेणी में दश बालक तथा चार कन्याएँ पढ़ती हैं। हमारे विद्यालय में १३३५ छात्र तथा ६८ अध्यापक हैं।

(ग) ये तीन फूल अति सुन्दर हैं। इन तीनों कन्याओं में कौन गाना जानती है। रामचन्द्र १४ वर्ष तक वन में रहे। श्रेणी में चौथी कन्या कौन सी है? सहदेव पाँचवाँ भाई था।

३. मोटे टाइप में छपे हुए शब्दों को स्पष्ट करते हुए श्लोकों के अर्थ लिखो ।
- (क) परस्परं विरोधे तु, वयं पञ्च शतं च ते ।
 अन्यैः सह विरोधे तु, वयं पञ्चाधिकं शतम् ।
- (ख) पञ्चमेऽहनि षष्ठे वा, शाकं पचति स्वे गृहे ।
 अट्टणी चाऽप्रवासी च स वारिचर मोदते ॥
- (ग) तृष्णे त्वमपि तृष्णान्धा, त्रिषु स्थानेषु वर्तसे ।
 व्याधितेष्वनपत्येषु, जरापरिणतेषु च ॥
- (घ) तृणानि भूमिरुदकं वाक् चतुर्थी च सूत्रता ।
 एतान्यपि सतां गेहे, नोच्छिद्यन्ते कदाचन ॥
- (ङ) लालयेत् पञ्च वर्षाणि, दश वर्षाणि ताडयेत् ।
 प्राप्ते तु षोडशे वर्षे, पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥

दशम अध्याय

स्त्री-प्रत्यय

संस्कृत में पुँल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए चार मुख्य प्रत्यय हैं—आ, ई, ऊ, ति । यथा बाल से बाला, पुत्र से पुत्री, श्वशुर के श्वश्रू तथा युवन से युवति ।

इन प्रत्ययों के सम्बन्ध में निश्चित नियम स्थिर नहीं किये जा सकते, तथापि कुछ आवश्यक प्रयोग स्मरण रखे जा सकते हैं ।

आ

१. अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों में 'आ' लगाने से स्त्रीलिंग बन जाता है । यथा—सुता, वत्सा, कान्ता, शान्ता, पठिता इत्यादि ।

२. जिन शब्दों के अन्त में 'क' हो उनमें भी 'आ' लगाने से स्त्रीलिंग बनता है, साथ ही 'क' से पूर्व 'अ' को 'इ' हो जाता है । यथा—कारिका, पाठिका, पाचिका, परिव्राजिका, दर्शिका, मूषिका इत्यादि ।

उपत्यका, अधित्यका, कन्यका आदि कुछ शब्दों में 'क' से पूर्व 'अ' को 'इ' नहीं होता ।

ई

३. गौर आदि अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों में 'ई' लगाने से स्त्रीलिङ्ग बनता है । यथा—गौरी, सुन्दरी, मातामही, नर्तकी, पार्वती, पितामही, आदि ।

इनके अतिरिक्त कुमारी, किशोरी, पुत्री, मासिकी, चतुर्थी, चतुर्दशी षोडशी, यादृशी, तादृशी आदि शब्द भी ईकारान्त ही बनते हैं ।

४. ह्रस्व ऋकारान्त, इन्नन्त, नकारान्त, वत् मत् प्रत्ययान्त, वस् ईयस् एयस् अच् प्रत्ययान्त शब्दों में भी 'ई' लगाने से स्त्रीलिङ्ग बनता है । यथा—

कर्तृ + ई = कर्त्री

धीमत् + ई = धीमती

राजन् + ई = राज्ञी

श्वन् + ई = शुनी

गन्तृ + ई = गन्त्री

विद्वस् + ई = विदुषी

मानिन् + ई = मानिनी

गरीयस् + ई = गरीयसी

भवत् + ई = भवती

श्रेयस् + ई = श्रेयसी

बलवत् + ई = बलवती

प्रत्यच् + ई = प्रतीची

श्रीमत् + ई = श्रीमती

उदच् + ई = उदीची

५. शत्रन्त शब्दों का स्त्रीलिङ्ग भी 'ई' प्रत्यये लगाने से बनता है ।

यथा—गच्छन्ती, पश्यन्ती, तिष्ठन्ती, पिबन्ती, वदन्ती, स्मरन्ती, अदती, जिघ्रती, जाग्रती, जुह्वती, बिभ्यती, ददती, नश्यन्ती, दीव्यन्ती, आप्नुवन्ती, इच्छन्ती, कुर्वन्ती, गृह्णन्ती, चोरयन्ती, आदि ।

६. जातिवाचक अकारान्त शब्दों के बाद भी 'ई' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिङ्ग रूप बनते हैं । यथा—ब्राह्मणी, मृगी, हंसी, काकी, शूकरी, मयूरी, बकी, सिंही, बिडाली, महिषी आदि । परन्तु अज आदि कुछ अकारान्त जातिवाचक शब्दों के अन्त में नियम १ के अनुसार 'आ' ही लगाया जाता है । यथा—अजा, अश्वा, चटका, कोकिला ।

७. गुणवाचक उकारान्त शब्दों के बाद 'ई' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिङ्ग रूप बनते हैं। यथा—गुरु—गुर्वी, मृदु—मृद्वी, साधु—साध्वी, लघु—लघ्वी आदि।

८. इन्द्र आदि शब्दों के बाद भी 'ई' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिङ्ग रूप बनते हैं, साथ ही 'आन्' का आगम भी हो जाता है। यथा—इन्द्राणी, वरुणानी, मातुलानी, क्षत्रियाणी, आचार्यानी इत्यादि।

परन्तु स्वयं व्याख्यात्री (आप पढ़ाने वाली) के अर्थ में 'आ' प्रत्यय से 'आचार्या' रूप बनता है। इसी तरह उपाध्याय की स्त्री उपाध्यायानी तथा स्वयं व्याख्यात्री उपाध्याया कहलाती है। शूद्र की स्त्री शूद्री परन्तु वर्ण से शूद्र स्त्री शूद्रा कहलाती है।

ऊ

९. यह प्रत्यय उकारान्त मनुष्यवाची शब्दों के पीछे लगता है। यथा—कुरु, श्वश्रू, पङ्गू इत्यादि।

ति

१०. युवन् शब्द के साथ 'ति' प्रत्यय आता है और मध्य के न का लोप हो जाता है। युवन् + ति = युवति।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीप्रत्ययान्त रूप बनाओ—

बालक, वाचक, आचार्य, उपाध्याय, शूद्र, ब्राह्मण, श्रीमत्, बलवत्, श्रोतृ, गुणवत्, राजन्, काक, हंस, पङ्गु, युवन्, मृग, तरुण, श्वन्, सिंह, मूपक।

२. अनुवाद करो—

(क) यह लड़की हमारे विद्यालय में पढ़ती है।

(ख) तुम्हारी घोड़ी बहुत सुन्दर है।

(ग) बिल्ली ने चुहिया को पकड़ लिया।

(घ) नानी रात को कहानी सुनाती है।

(ङ) यह आपकी बड़ी कृपा है।

३. अधोनिर्दिष्ट स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों को स्पष्ट करते हुए श्लोको के अर्थ लिखो :—

- (क) बालोऽपि नावमन्तव्यो मनुष्य इति भूमिपः ।
महती देवता ह्येषा नररूपेण तिष्ठति ॥
- (ख) आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण ,
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात् ।
दिनस्य पूर्वार्द्ध-परार्द्ध भिन्ना ,
छायेव मैत्री खलसञ्जनानाम् ॥
- (ग) हते भीष्मे हते द्रोणे, कर्णे च त्रिदिवं गते ।
आशा बलवती राजन्, शल्यो जेष्यति पाण्डवान् ॥
- (घ) श्वश्रूश्चशुरयोः पादौ, जोपन्ती सुगुणान्विता ।
मातृपितृपरा नित्यं, या नारी सा तपोधना ॥

एकादश अध्याय

अव्यय (Indeclinables)

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।

वचनेषु च सर्वेषु यत्र व्येति तदव्ययम् ॥

अव्यय शब्द वे हैं जो तीनों लिङ्गों में, सब विभक्तियों में तथा सब वचनों में एक समान रहते हैं, और कभी बदलते नहीं। ये अव्यय शब्द क्रियाविशेषण आदि के रूप में प्रयुक्त होते हैं। संस्कृत में अव्यय बहुत हैं। नित्य के प्रयोग में आने वाले कुछ अव्यय नीचे दिये जाते हैं।

तत्र = वहाँ

अत्र = यहाँ

क, कुत्र = कहाँ

यत्र = जहाँ

अधुना = अब

तदानीम् = तब

यतः = क्योंकि

अतः = इसलिए

सर्वत्र = सब जगह
 यदा = जब
 तदा = तब
 कदा = कब
 एव = ही
 एवम् = इस तरह
 यदि = अगर
 जातु = कदाचित्
 नूष्णीम् = चुपचाप
 नूनम् = निश्चय से
 पश्चात् = पीछे
 सर्वदा = हमेशा
 इदानीम् = अब
 वृथा = व्यर्थ
 सम्यक् = अच्छी तरह
 सहसा = एकदम
 मनाक् = थोड़ा
 उच्चैः = ऊँचे
 नीचैः = नीचे
 शीघ्रम् = जल्दी से
 शनैः = धीरे से
 सुष्ठु = अच्छा
 प्रातः = प्रातःकाल
 सायम् = सायंकाल
 अलम् = बस
 विना = बिना
 अथ = तब, अब, पीछे, अनंतर

ततः = उसके बाद
 यावत् = जब तक
 तावत् = तब तक
 कथम् = किस तरह
 इत्थम् = इस तरह
 यथा = जिस तरह
 तथा = उस तरह
 सर्वथा = सब तरह
 अद्य = आज
 श्वः = आने वाला कल
 ह्यः = बीता हुआ कल
 पुरः = आगे
 प्रायः = बहुधा
 इति = यह, समाप्त
 इह = यहाँ
 उपरि = ऊपर
 ऋते = बिना
 किल = निश्चय से
 खलु = निश्चय से
 च = और
 ध्रुवम् = निश्चय से
 धिक् = धिक्कार
 न = नहीं
 पृथक् = अलग
 पुनः = फिर
 बहिः = बाहर
 वत् = समान

अथवा = अथवा
अपि = भी
अहो = आश्चर्यसूचक
इव = समान

साक्षात् = साक्षात्
वा = अथवा
हन्त = खेद-सूचक शब्द
पुरा = प्राचीन काल में

अभ्यास

१. अव्यय का लक्षण लिखो। पाँच अव्ययों का वाक्यों में प्रयोग करो।
२. अनुवाद करो—
जहाँ मोहन का घर है वहाँ मेरा भी है। तू रात को कहाँ रहेगा? यहाँ ही मेरे पास क्यों नहीं ठहरता? जब सूर्योदय होता है तब अन्धकार भाग जाता है। अब हमारा देश निर्धन है।

३. निम्नलिखित श्लोकों के अर्थ लिखो और अव्यय शब्दों को पहचानो—

(क) यथा चित्तं तथा वाचो, यथा वाचस्तथा क्रियाः।

चित्ते वाचि क्रियायां च, साधूनामेकरूपता ॥

(ख) यदा चायं न विभेति, यदा चास्मान्न विभ्यति।

यदा नेच्छति न द्वेष्टि, ब्रह्म सम्पद्यते तदा ॥

(ग) यावन्न साक्षरा माता, तावत् तद्बालबालिकाः।

निरक्षरा हि तिष्ठन्ति, विनोपायसहस्रकैः ॥

(घ) इदमद्य करिष्यामि, श्वः कर्तास्मीति वादिनम्।

कालो हरति संप्राप्तो, नदीवेग इव द्रुमम् ॥

(ङ) यत्रापि कुत्रापि गता भवन्ति,

हंसा महीमण्डलमण्डनाय।

हानिस्तु तेषां हि सरोवराणां,

येषां मरालैः सह विप्रयोगः ॥

(च) यदि सत्सङ्गनिरतो भविष्यसि भविष्यसि।

अथ दुर्जनसंसर्गे पतिष्यसि पतिष्यसि ॥

द्वादश अध्याय

उपसर्ग (Prefixes)

उपसर्ग भी अव्यय होते हैं ।

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यः प्रतीयते ।

प्रहाराऽहार-संहार-विहार-परिहारवत् ॥

अर्थात् उपसर्ग वे शब्दांश हैं जो क्रिया तथा अन्य शब्दों के आदि में लग कर उनके अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर देते हैं और उनके अर्थ को बदल देते हैं । यथा—प्रहार=मारना, आहार=भोजन, संहार=नाश करना, विहार=खेलना, परिहार=दूर करना, आदि ।

उपसर्ग ये हैं—प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, पर, उप ।

उपसर्गों के योग से धातु का अर्थ बदल जाता है । कई परस्मैपदी धातु उपसर्गों के योग में आत्मनेपदी हो जाते हैं । यथा—तिष्ठति, प्रतिष्ठते । जयति—विजयते, पराजयते । क्रीणाति—विक्रीणीते ।

नीचे उपसर्गों के अर्थ दिये जाते हैं :—

प्र = प्रकर्ष (उत्कर्ष सामर्थ्य आदि)—प्रभाव, प्रहार, प्रबल ।

परा = पीछे, विरुद्ध—पराजय, पराभव ।

अप = परे, दूर, बुरा—अपनयन, अपमान, अपशब्द ।

सम् = अच्छा, साथ, पूर्ण—संस्कार, सङ्गम, सन्तोष ।

अनु = पीछे, समान—अनुज, अनुचर, अनुरूप ।

अव = नीचे, हीन—अवतार, अवनति, अवगुण ।

निस्, निर् = निषेध, बाहर—निश्चल, निर्बल, निर्गत ।

दुस्, दुर् = कठिन, बुरा—दुस्तर, दुष्कर, दुराचार ।

वि = भिन्न, विशेष—विदेश, विख्यात, विज्ञान ।

आ (आङ्) = तक, ओर, समेत—आजीवन, आकर्ण, आगमन,
आबालवृद्ध ।

नि = नीचे, बहुत—निरोध, निधान, निपात ।

अधि = ऊपर, श्रेष्ठ—अधिकार, अध्यक्ष, अधिपति ।

अपि = निकट, ऊपर—अपिधान, अपिहित ।

अति = अधिक, ऊपर—अतिदीन, अतिरिक्त ।

सु = अच्छा, सम्यक्तया—सुपुत्र, सुगम, सुकर्म ।

उन् = ऊपर, श्रेष्ठ—उन्नति, उत्पत्ति, उत्कर्ष ।

अभि = ओर, निकट—अभ्यागत, अभिमुख ।

प्रति = सामने, प्रतिकूल, प्रत्येक—प्रत्यक्ष, प्रतिवादी, प्रतिदिन ।

परि = आस पास, सब तरफ, पूर्ण—परिक्रमा, परिजन, परितोष ।

उप = समीप, गौण—उपकूल, उपगङ्गा, उपवन ।

अभ्यास

१. उपसर्ग का लक्षण लिखो । वे धातुओं के साथ प्रयुक्त हो कर किस प्रकार उनके अर्थ बदल देते हैं—उदाहरणों से स्पष्ट करो ।

२. निम्नलिखित वाक्यों को समझो और उनके हिन्दी में अर्थ करो:—

कामात् क्रोधः प्रभवति । कविः काव्यं प्रणयति । पथिकः ग्रामं प्रतिष्ठते ।
भीमः शत्रून् पराजयते । अर्जुनः कर्णं पराभवति । माता पुत्रस्य दुःखमपहरति,
अपनयति वा । गुरुः शिष्यं संस्करोति । महादेवः प्रलयकाले विश्वं संहरति । धर्म-
संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे ।

लक्ष्मणो राममनुगच्छति । पुत्रः पितरमनुकरोति । माता स्वतनयमनुनयति ।
नाहमवगच्छामि भवदभिप्रायम् । गङ्गा स्वर्गादवतरति । नृपतिः विवादं निर्णयति ।
सरितः पर्वतेभ्यो निस्सरन्ति । सत्यं विजयते सदा । मृगाः नदीतीरेषु विहरन्ति ।
मुनयः फलान्याहरन्ति । गुरुः शिष्यमादिशति ।

कृपणो धनं निदधाति । आचार्य आसनमध्यास्ते । शिष्यः सदाचारेण
सुखमधिगच्छति । हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् । राजा प्रजामुन्नयति ।
उद्धरेदात्मनाऽत्मानम् । अभिभवति कोपः कशीयांसम् । तत्त्वविदः सृष्टितत्वानि

प्रतिपादयन्ति । राघवो वैदेहीं परिणयति । परिभवति जनमनित्यता । अनुसूया सीतामुपदिशति । गुरुः शिष्यमुपनयति ।

त्रयोदश अध्याय

समास (Compound)

दो या दो से अधिक परस्पर सापेक्ष शब्दों के मिलने से जब कोई स्वतन्त्र शब्द बनता है तो इस मेल को समास कहा जाता है, और इस प्रकार मिले हुए शब्दों को समस्त अथवा सामासिक शब्द कहते हैं। समस्त शब्दों के बीच के विभक्ति-प्रत्ययों का साधारणतया लोप हो जाता है।

समस्त शब्द को पुनः विभक्ति सहित पदों में पृथक्-पृथक् रख देने का नाम विग्रह है। समास के छः मुख्य भेद हैं—

१. अव्ययीभाव

२. कर्मधारय

३. द्विगु

४. द्वन्द्व

५. तत्पुरुष

६. बहुव्रीहि

१. अव्ययीभाव (Adverbial)—अव्ययीभाव वह समास है जिसमें पूर्वपद अव्यय हो। इसमें प्रथम खण्ड की प्रधानता होती है। समस्तपद भी अव्यय हो जाता है और नपुंसकलिंग एकवचन में प्रयुक्त होता है। जैसे—

शक्तिमनतिक्रम्य = यथाशक्ति

रथस्य पश्चात् = अनुरथम्

गंगायः समीपम् = उपगङ्गम्

प्रत्यक्षम्, परोक्षम्, समक्षम्, स्तृष्णम् आदि भी इसी के उदाहरण हैं।

२. कर्मधारय (Appositional)—कर्मधारय वह समास है जिसमें विशेष्य विशेषण भाव से दो पदों का मेल होता है। दोनों पद उपमान-

उपमेय भाव से भी सम्बद्ध हो सकते हैं। कर्मधारय समास में दोनों पद समानाधिकरण अर्थात् समान कारक में होते हैं।

जैसे—

नीलं कमलम् = नीलकमलम्

कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः

पीतम् अम्बरम् = पीताम्बरम्

घन इव श्यामः = घनश्यामः

पुरुषो व्याघ्र इव = पुरुषव्याघ्रः

‘पुरुषव्याघ्रः’ में पुरुष उपमेय है (जिसकी उपमा वा तुलना की जा रही है।) तथा व्याघ्र उपमान है। (जिससे उपमा वा तुलना की जा रही है।) महाराजः, महावनम्, महादेवः, मुखकमलम्, करकिसलयः आदि भी कर्मधारय के उदाहरण हैं।

३. द्विगु (Numeral)—द्विगु समास वह है जिसमें पूर्व पद संख्यावाची शब्द हो।

यह कर्मधारय का उपभेद माना जाता है क्योंकि संख्यावाची शब्द विशेषण ही होते हैं और साधारणतया इनमें समुदाय का अर्थ प्रकट होता है।

जैसे—

त्रयाणां लोकानां समाहारः = त्रिलोकी

पञ्चानां वटानां समाहारः = पञ्चवटी

अष्टानामध्यायानां समाहारः = अष्टाध्यायी

त्रयाणां पथां समाहारः = त्रिपथम्

त्रयाणां भुवनानां समाहारः = त्रिभुवनम्

समाहार का अर्थ समूह है, प्रायः इसी अर्थ में द्विगु समास की रचना होती है। द्विगु समास नपुंसकलिङ्ग अथवा स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होता है।

४. द्वन्द्व (Copulative)—जिस समास में प्रत्येक पद की प्रधा-

नता हो और विग्रह में 'च' का प्रयोग किया जाय वह द्वन्द्व समास है। यह तीन प्रकार का है—

क. इतरेतर द्वन्द्व—जिसमें पृथक् पृथक् प्रत्येक पद का समान महत्त्व हो। जैसे—रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ। कृष्णश्च अर्जुनश्च = कृष्णार्जुनौ। यदि दो शब्दों से अधिक शब्द समस्त हों तो बहुवचन होगा। जैसे—रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च शत्रुघ्नश्च = रामलक्ष्मण-भरतशत्रुघ्नाः। समस्त पद का लिङ्ग वही होता है जो अंतिम शब्द का हो।

ख. समाहार द्वन्द्व—जिसमें समूह का महत्त्व हो, पृथक् पृथक् पद का नहीं। इसमें मिलने वाले शब्द चाहे किसी लिंग के क्यों न हो समस्त पद नपुंसकलिंग तथा एकवचनान्त हो जाता है। जैसे—पाणी च पादौ च = पाणिपादम्। अहिश्च नकुलश्च = अहिनकुलम्।

ग. एकशेष द्वन्द्व—जहाँ दो पदों में से एक शेष रह जाय और दोनों का अर्थ बोध करावे। जैसे माता च पिता च = पितरौ। श्वश्च श्वशुरश्च = श्वशुरौ। भ्राता च स्वसा च = भ्रातरौ। पुत्रश्च दुहिता च = पुत्रौ।

५. तत्पुरुष (Determinative)—जिसमें उत्तरपद की प्रधानता हो और विग्रह में द्वितीया से सप्तमी तक विभक्तियों का प्रयोग हो, वह तत्पुरुष समास है। इसके छः भेद हैं। विग्रह करते समय जो विभक्ति लगाई जाय उसी के अनुसार इसका भेद किया जाता है।

द्वितीया तत्पुरुष—ग्रामं गतः = ग्रामगतः

नरकं पतितः = नरकपतितः

दुःखम् अतीतः = दुःखातीतः

तृतीया तत्पुरुष—हरिणा त्रातः = हरित्रातः

नखैः भिन्नः = नखभिन्नः

चतुर्थी तत्पुरुष—यूपाय दारु = यूपदारु

हवनाय सामग्री = हवनसामग्री

पञ्चमी तत्पुरुष—धर्मात् भ्रष्टः = धर्मभ्रष्टः

चौरात् भीतः = चौरभीतः

षष्ठी तत्पुरुष—गङ्गायाः जलम् = गंगाजलम्

राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः

सप्तमी तत्पुरुष—आतपे शुष्कः = आतपशुष्कः

तैले पक्कः = तैलपक्कः

न्याये निपुणः = न्यायनिपुणः

तत्पुरुष समास में अन्त के पद के अनुसार ही लिंग, विभक्ति और वचन होते हैं।

तत्पुरुष के दो अन्य गौण भेद भी हैं।

(क) नञ् तत्पुरुष—जिसमें निषेधार्थक 'न' का किसी पद के साथ समास होता है। 'न' के साथ समास होते हुए 'न्' का लोप हो जाता है और केवल 'अ' रह जाता है। पर यदि 'न' का किसी ऐसे शब्द के साथ समास हो जिसके आदि में स्वर हो तो 'न' को अन् हो जाता है।

जैसे—न ब्राह्मणः = अब्राह्मणः; न ज्ञानम् = अज्ञानम्; न अश्वः = अनश्वः इत्यादि।

(ख) अलुक् तत्पुरुष—जिसमें पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता। जैसे—

द्वितीया अलुक् = विश्वम्भरः

तृतीया अलुक् = सहस्राकृतम्

चतुर्थी अलुक् = परस्मैपदम्

पञ्चमी अलुक् = स्तोकांमुक्तः

षष्ठी अलुक् = बाधस्पतिः

सप्तमी अलुक् = युधिष्ठिरः

संस्कृत में तत्पुरुष समास का बहुत प्रयोग पाया जाता है।

६. बहुव्रीहि (Possessive)—जिस समास में पूर्व अथवा उत्तर कोई भी पद प्रधान न हो बल्कि अन्य पद की प्रधानता हो और विग्रह

में 'यत्' शब्द के किसी रूप का प्रयोग होता हो वह बहुव्रीहि कहाता है। यह समस्त शब्द सदा विशेषण होता है। हिन्दी में अर्थ करने पर इसमें 'वाला' का भाव पाया जाता है।

यथा—

पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः
 चक्रं पाणौ यस्य सः = चक्रपाणिः
 न विद्यमानः पुत्रः यस्य सः = अपुत्रः
 विमलम् उदकं यस्मिन् तद् = विमलोदकम्
 प्राप्तं उदकं यम् सः = प्राप्तोदकः
 उपहृतः पशुः यस्मै सः = उपहृतपशुः
 कुशो हस्ते यस्य सः = कुशहस्तः
 निर्गता घृणा यस्मात् सः = निर्घृणः
 दीर्घे अक्षिणी यस्य सः = दीर्घाक्षः
 धृता मा ला येन सः = धृतमालः
 निर्गतं भयं यस्मात् सः = निर्भयः

'इव' तथा 'सह' के अर्थ प्रकाशित होने पर भी बहुव्रीहि समास होता है। यथा = चन्द्रस्य प्रभा इव प्रभा यस्याः सा = चन्द्रप्रभा। पुत्रेण सह = सपुत्रः। वृकस्य उदरं इव उदरं यस्य सः = वृकोदरः (भीमः)।

बहुव्रीहि समास में पदान्त 'ऋ' तथा 'ई' के बाद प्रायः सुविधा के लिए 'क' लगाया जाता है। यथा—सभर्तृका, सपत्नीकः, बहुव्रीकः, बहुभ्रातृकः, जीवत्पितृकः इत्यादि।

कई समस्त पदों में विग्रह करने पर अर्थानुसार दो-दो समास भी होते हैं। यथा 'महाबाहुः' का 'महान्तौ बाहु यस्य सः' यह विग्रह किया जाय तो बहुव्रीहि समास होगा। परन्तु 'महाश्चासौ बाहुः' यदि यह विग्रह किया जाय तो कर्मधारय समास होगा।

समास-संचेप

समास	लक्षण	उदाहरण
१. अव्ययीभाव	जिसमें पूर्वपद अव्यय हो।	यथाशक्ति
२. कर्मधारय	जिसमें विशेष्य विशेषण हों।	नीलकमलम्
३. द्विगु	जिसमें पूर्वपद संख्यावाची हो।	त्रिलोकी
४. द्वन्द्व	जिसमें सब पद प्रधान हों।	रामलक्ष्मणौ
५. तत्पुरुष	जिसमें उत्तरपद प्रधान हो।	गङ्गाजलम्
६. बहुव्रीहि	जिसमें अन्य पद प्रधान हो।	पीताम्बरः

अभ्यास

१. इनमें समास पहचानो और विग्रह करके समास का नाम लिखो—

महात्मा, वाक्पटुः, सरसिजम्, नृसिंहः, पितरौ, करपल्लवः, पाणिनिकृतम्, राज्यसुखलोभः, महारथः, त्यक्तजीविताः, वृकोदरः, विशालाक्षी, अनावश्यकम्, वीतरागः, अशिक्षितः, राजपुत्रः, महापुरुषः, विद्याधनम्, सदाचारः, नवरात्रम्, सप्तद्वीपा, अनन्यमानसा, त्रिलोचनः, प्रत्यहम्, निर्मलिकम्, जनाधिपः, दारत्यागी, रुधिरप्रदिग्धान्, हृदयदौर्बल्यम्, पितृसमः, अधार्मिकः, बहुक्षीरा ।

२. मोटे टाइप में दिये हुए पदों का समास करते हुए अनुवाद करो—

दशरथ के राम लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न चार लड़के थे। दशरथ ने

राम के अभिषेक का निश्चय किया । माता कैकेयी अपने पुत्र भरत के लिए राज्य-अभिषेक चाहती थी । उसने अपने पति से पहले दिये हुए दो वर माँगे । एक से राम का वन में रहना, दूसरे से भरत का अभिषेक । राम चौदह वर्षों के लिए वन को चले गये । राम की पत्नी सती सीता भी वन को गई । राम का अनुज लक्ष्मण भी अपने भाई की सेवा के लिए वन में साथ गया ।

३. समस्त शब्दों का विग्रह करते हुए निम्न श्लोकों के अर्थ लिखो—

(क) अनेकसंशयोच्छेदि, परोक्षार्थस्य दर्शकम् ।

सर्वस्य लोचनं शास्त्रं, यस्य नास्त्यन्ध एव सः ॥

(ख) सुखार्थी यस्त्यजेद्विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ।

सुखार्थिनः कुतो विद्या, कुतो विद्यार्थिनः सुखम् ॥

(ग) योषिद्विरण्याभरणाम्बरादि—

द्रव्येषु मायारचितेषु मूढः ।

प्रलोभितात्मा ह्युपभोगबुद्ध्या

पतङ्गवत् नश्यति नष्टबुद्धिः ॥

(घ) अस्मिन् महामोहमये कदाहे

सूर्याग्निना रात्रिदिवेन्धनेन ।

मासर्तुदर्वीपरिघट्टनेन

भूतानि कालः पचतीति वार्ता ॥

(ङ) रोगशोकपरीतापबन्धनव्यसनानि च ।

आत्मापराधवृक्षाणां फलान्येतानि देहिनाम् ॥

(च) अचिन्त्यरूपो भगवान्निरञ्जनो विश्वम्भरो ज्ञानमयश्चिदात्मा ।

विशोधितो येन हृदि क्षणं नो, वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

४. उपरिलिखित श्लोकों में जहाँ जहाँ सन्धि है, वहाँ सन्धिच्छेद भी करो ।

चतुर्दश अध्याय

धातु-प्रकरण

(Conjugation of Verbs)

१. धातु तथा लकार—

संस्कृत में क्रिया शब्दों को धातु कहते हैं। धातुओं के रूप दश लकारों (Tenses and Moods) में बनते हैं। परन्तु मुख्य लकार निम्नलिखित पाँच ही हैं :—

१. लट्	वर्तमान	Present Tense
२. लृट्	भविष्यत्	Second Future
३. लोट्	आज्ञा	Imperative Mood
४. लङ्	भूतकाल	Past Imperfect
५. विधिलिङ्	विधि	Potential Mood

इन्हीं लकारों में धातुओं के रूप यहाँ लिखे जाएँगे।

२. गण—धातुओं को रचना के अनुसार दस भागों में बाँटा गया है। इन्हें गण कहते हैं। ये दस गण निम्नलिखित हैं—

१. भ्वादिगण—जिसमें धातुओं के रूप 'भू' धातु की तरह होते हैं।

२. अदादिगण	"	"	"	'अद्'	"	"	"	"
३. जुहोत्यादिगण	"	"	"	'हु'	"	"	"	"
४. दिवादिगण—	"	"	"	'दिब्'	"	"	"	"
५. स्वादिगण—	"	"	"	'सु'	"	"	"	"
६. तुदादिगण—	"	"	"	'तुद्'	"	"	"	"
७. रुधादिगण—	"	"	"	'रुध्'	"	"	"	"
८. तनादिगण—	"	"	"	'तन्'	"	"	"	"
९. व्रयादिगण—	"	"	"	'क्री'	"	"	"	"
१०. चुरादिगण—	"	"	"	'चुर्'	"	"	"	"

३. परस्मैपद तथा आत्मनेपद—

प्रत्येक गण में कुछ धातु परस्मैपदी, कुछ आत्मनेपदी, तथा कुछ उभयपदी कहलाते हैं।

परस्मैपदी धातुओं में लकारों (विशेषतया लट्) में निम्नलिखित प्रत्ययों का प्रयोग होता है—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	तः	न्ति
मध्यम पुरुष	सि	थः	थ
उत्तम पुरुष	मि	वः	मः

आत्मनेपदी धातुओं में लकारों (विशेषतया लट्) में निम्नलिखित प्रत्ययों का प्रयोग होता है—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ते	इते	न्ते
मध्यम पुरुष	से	इथे	ध्वे
उत्तम पुरुष	इ	वहे	महे

उभयपदी धातुओं में दोनों प्रकार के प्रत्ययों का प्रयोग होता है, अतः दोनों प्रकार के रूप बनते हैं।

४. पुरुष और वचन—

वक्ता या लेखक अपने लिए उत्तम पुरुष, श्रोता या पाठक के लिए मध्यम पुरुष और इन दोनों से भिन्न व्यक्ति या वस्तु के लिए प्रथम पुरुष का प्रयोग करता है। इसी प्रकार एक व्यक्ति के लिए एकवचन, दो के लिए द्विवचन और दो से अधिक के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है।

इस प्रकार प्रत्येक धातु के प्रत्येक लकार में सब पुरुषों और सब वचनों में पृथक् पृथक् रूप होते हैं ।

आगे भ्वादिगण तथा अन्य गणों के मुख्य मुख्य धातुओं के रूप दिये जाते हैं । प्रायः मुख्य के अनुसार अन्य सब धातुओं के रूप बनाये जा सकते हैं । धातुओं के लृट् लकार में विशेष परिवर्तन होते हैं, उन परिवर्तनों को विशेषतया स्मरण कर लेना चाहिए ।

भ्वादिगण

(क) परस्मैपदी धातु

भू (होना)

	एक०	लट्	द्वि०	बहु०
प्र० पुरुष	भवति		भवतः	भवन्ति
म० "	भवसि		भवथः	भवथ
उ० "	भवामि		भवावः	भवामः
		लृट्		
प्र० पुरुष	भविष्यति		भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० "	भविष्यसि		भविष्यथः	भविष्यथ
उ० "	भविष्यामि		भविष्यावः	भविष्यामः
		लोट्		
प्र० पुरुष	भवतु, भवतात्		भवताम्	भवन्तु
म० "	भव, भवतात्		भवतम्	भवत
उ० "	भवानि		भवाव	भवाम
		लङ्		
प्र० पुरुष	अभवत्		अभवताम्	अभवन्
म० "	अभवः		अभवतम्	अभवत
उ० "	अभवम्		अभवाव	अभवाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
म० "	भवेः	भवेतम्	भवेत
उ० "	भवेयम्	भवेव	भवेम

भाववाच्य—लट्—भूयते, लृट्—भविष्यते, लोट्—भूयताम्, लङ्—अभूयत आदि ।

प्रेरणार्थक—भावयति, भावयते ।

कृदन्त—क्त—भूतः (पुं०), क्तवतु—भूतवान् (पुं०), क्त्वा—भूत्वा, तुम्—भवितुम्, तव्यत्—भवितव्य, अनीय—भवनीय, यत्—भव्य, शतृ—भवन् (पुं०) ।

भिन्न भिन्न उपसर्गों के योग से धातुओं के भिन्न भिन्न अर्थ हो जाते हैं । यथा—

प्र + भू—प्रभवति = उत्पन्न होता है ।

परा + भू—पराभवति = पराजित करता है ।

अनु + भू—अनुभवति = अनुभव करता है ।

सम् + भू—सम्भवति = उत्पन्न होता है ।

प्र + आ + दुर् + भू—प्रादुर्भवति = प्रकट होता है ।

हस् (हँसना)

लट्

प्र० पु०	हसति	हसतः	हसन्ति
म० "	हससि	हसथः	हसथ
उ० "	हसामि	हसावः	हसामः

लृट्

प्र० पु०	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
म० "	हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ
उ० "	हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	हसतु, हसतात्	हसताम्	हसन्तु
म० "	हस, हसतान्	हसतम्	हसत
उ० "	हसानि	हसाव	हसाम

लङ्

प्र० पु०	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
म० "	अहसः	अहसतम्	अहसत
उ० "	अहसम्	अहसाव	अहसाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	हसेत्	हसेताम्	हसेयुः
म० "	हसेः	हसेतम्	हसेत
उ० "	हसेयम्	हसेव	हसेम

भाववाच्य—लट्—हस्यते, लृट्—हसिष्यते, लोट्—हस्यताम्, लङ्—अहस्यत ।

प्रेरणार्थक—हासयति, हासयते ।

कृदन्त—क्त—हसितम् (नपुं०), क्तवतु—हसितवान् (पुं०), क्त्वा—हसित्वा, तुम्—हसितुम्, तव्यत्—हसितव्य, अनीय—हसनीय, शतृ—हसन् (पुं०) ।

पठ् (पठ्ना)

लट्

प्र० पु०	पठति	पठतः	पठन्ति
म० "	पठसि	पठथः	पठथ
उ० "	पठामि	पठावः	पठामः

लृट्

प्र० पु०	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
म० "	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उ० "	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	पठतु, पठतात्	पठताम्	पठन्तु
म० "	पठ, पठतात्	पठतम्	पठत
उ० "	पठानि	पठाव	पठाम

लङ्

प्र० पु०	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म० "	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ० "	अपठम्	अपठाव	अपठाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
म० "	पठेः	पठेतम्	पठेत
उ० "	पठेयम्	पठेव	पठेम

कर्मवाच्य—लट्—पठ्यते, लृट्—पठिष्यते, लोट्—पठ्यताम्
लङ्—अपठ्यत ।

प्रेरणार्थक—पाठयति ।

कृदन्त—क्त—पठितम् (नपुं०), क्तवतु—पठितवान् (पुं०),
क्त्वा—पठित्वा, तुम्—पठितुम्, तव्यत्—पठितव्य, अनीय—
पठनीय, शतृ—पठन् (पुं०) ।

रक्ष् (रक्षा करना)

लट्

प्र० पु०	रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति
म० "	रक्षसि	रक्षथः	रक्षथ
उ० "	रक्षामि	रक्षावः	रक्षामः

लृट्

प्र० पु०	रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति
म० पु०	रक्षिष्यसि	रक्षिष्यथः	रक्षिष्यथ
उ० पु०	रक्षिष्यामि	रक्षिष्यावः	रक्षिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	रक्षतु, रक्षतात्	रक्षताम्	रक्षन्तु
म० "	रक्ष, रक्षतात्	रक्षतम्	रक्षतः
उ० "	रक्षाणि	रक्षाव	रक्षाम

लङ्

प्र० पु०	अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्
म० "	अरक्षः	अरक्षतम्	अरक्षत
उ० "	अरक्षम्	अरक्षाव	अरक्षाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	रक्षेत्	रक्षेताम्	रक्षेयुः
म० "	रक्षेः	रक्षेतम्	रक्षेत
उ० "	रक्षेयम्	रक्षेव	रक्षेम

कर्मवाच्य—लट्—रक्ष्यते, लृट्—रक्षिष्यते, लोट्—रक्ष्यताम्,
लङ्—अरक्ष्यत ।

प्रेरणार्थक—रक्षयति, रक्षयते ।

कृदन्त-क्त—रक्षितः (पुं०), क्तवतु—रक्षितवान् (पुं०),
कृत्या—रक्षित्वा, तुम्—रक्षितुम्, तव्यत्—रक्षितव्य, अनीय—
रक्षणीय, शतृ—रक्षन् (पुं०) ।

वद् (बोलना)

लट्

प्र० पु०	वदति	वदतः	वदन्ति
म० "	वदसि	वदथः	वदथ
उ० "	वदामि	वदावः	वदामः

लृट्

प्र० पु०	वदिष्यति	वदिष्यसः	वदिष्यन्ति
म० "	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ
उ० "	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	वदतु, वदतात्	वदताम्	वदन्तु
म० "	वद, वदतात्	वदतम्	वदत
उ० "	वदानि	वदाव	वदाम

लङ्

प्र० पु०	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
म० "	अवदः	अवदतम्	अवदत
उ० "	अवदम्	अवदाव	अवदाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
म० "	वदेः	वदेतम्	वदेत
उ० "	वदेयम्	वदेव	वदेम

कर्मवाच्य—लट्—उद्यते, लृट्—वदिष्यते, लोट्—उद्यताम् ।

लङ्—औद्यत ।

प्रेरणार्थक—वादयति, वादयते ।

कृदन्त—कृत—उदितः (पु०), क्तवतु—उदितवान्, (पु०)
 क्त्वा—उदित्वा, तुम्—वदितुम्, तव्यत्—वदितव्य, अनीय—वदनीय,
 शतृ—वदन् (पु०) ।

उपसर्गों के योग में—

वि + वद्—विवदते = विवाद करता है ।

प्रति + वद्—प्रतिवदति = उत्तर देता है ।

सं + वद्—संवदति = समाचार देता है ।

पच् (पकाना)

लट्

प्र० पु०	पचति	पचतः	पचन्ति
म० "	पचसि	पचथः	पचथ
उ० "	पचामि	पचावः	पचामः

		लृट्	
प्र० पु०	पद्यति	पद्यतः	पद्यन्ति
म० "	पद्यसि	पद्यथः	पद्यथ
उ० "	पद्यामि	पद्यावः	पद्यामः

		लोट्	
प्र० पु०	पचतु, पचतान्	पचताम्	पचन्तु
म० "	पच, पचतात्	पचतम्	पचत
उ० "	पचानि	पचाव	पचाम

		लङ्	
प्र० पु०	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
म० "	अपचः	अपचतम्	अपचत
उ० "	अपचम्	अपचाव	अपचाम

		विधि लिङ्	
प्र० पु०	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
म० "	पचेः	पचेतम्	पचेत
उ० "	पचेयम्	पचेव	पचेम

कर्मवाच्य—लट्—पच्यते, लृट्—पद्यते, लोट्—पच्यताम्
लङ्—अपच्यत ।

प्रेरणार्थक—पाचयति ।

कृदन्त—क्त—पक्वम् (नपुं०), क्तवतु—पक्ववान् (पुं०), क्त्वा—
पक्त्वा, तुम्—पक्तुम्, तव्यत्—पक्तव्य, अनीय—पचनीय, शतृ—
पचन् (पुं०), शानच्—पचमान ।

नम् (भुक्ना)

		लट्	
प्र० पु०	नमति	नमतः	नमन्ति
म० "	नमसि	नमथः	नमथ
उ० "	नमामि	नमावः	नमामः

		लृट्	
प्र० पु०	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
म० "	नंस्यसि	नंस्यथः	नंस्यथ
उ० "	नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः

		लोट्	
प्र० पु०	नमतु, नमतात्	नमताम्	नमन्तु
म० "	नम, नमतात्	नमतम्	नमत
उ० "	नमानि	नमाव	नमाम

		लङ्	
प्र० पु०	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
म० "	अनमः	अनमतम्	अनमत
उ० "	अनमम्	अनमाव	अनमाम

		विधिलिङ्	
प्र० पु०	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
म० "	नमः	नमेतम्	नमेत
उ० "	नमेयम्	नमेव	नमेम

भाववाच्य—लृट्—नम्यते, लृट्—नंस्यते, लोट्—नम्यताम्, लङ्—अनम्यत ।

प्रेरणार्थक—नमयति ।

कृदन्त—क्त—नतः (पुं०), क्वतु—नतवान् (पुं०), क्त्वा—नत्वा, तुम्—नन्तुम्, तव्यत्—नन्तव्य, अनीय—नमनीय, शतृ—नमन् (पुं०) ।

गम् (गच्छ)—(जाना)

		लट्	
प्र० पु०	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
म० "	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उ० "	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

		लृट्	
प्र० पु०	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
म० "	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उ० "	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

		लोट्	
प्र० पु०	गच्छतु, गच्छतात्	गच्छताम्	गच्छन्तु
म० "	गच्छ, गच्छतात्	गच्छतम्	गच्छत
उ० "	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

		लङ्	
प्र० पु०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म० "	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उ० "	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

		विधिलिङ्	
प्र० पु०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
म० "	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उ० "	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

कर्मवाच्य—लट्—गम्यते, लृट्—गमिष्यते, लोट्—गम्यताम्, लङ्—अगम्यत ।

प्रेरणार्थक—गमयति ।

कृदन्त—क्त—गतः (पुं०), क्तवतु—गतवान् (पुं०), क्त्वा—गत्वा, तुम्—गन्तुम्, तव्यत्—गन्तव्य, अनीय—गमनीय, शतृ—गच्छन् (पुं०) ।

उपसर्गों के योग में—

अधि + गम्—अधिगच्छति = प्राप्त करता है ।

अव + गम्—अवगच्छति = जानता है, समझता है ।

आ + गम्—आगच्छति = आता है ।

अनु + गम्—अनुगच्छति = पीछे चलता है ।

निर् + गम्—निर्गच्छति = निकलता है ।

दृश् (पश्य)—(देखना)

लट्

प्र० पु०	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
म० "	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उ० "	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लृट्

प्र० पु०	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
म० "	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उ० "	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट्

प्र० पु०	पश्यतु, पश्यतात्	पश्यताम्	पश्यन्तु
म० "	पश्य, पश्यतात्	पश्यतम्	पश्यत
उ० "	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

लङ्

प्र० पु०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
म० "	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उ० "	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
म० "	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उ० "	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

कर्मवाच्य—लट्—दृश्यते, लृट्—द्रक्ष्यते, लोट्—दृश्यताम्, लङ्—अदृश्यत ।

प्रेरणार्थक—दर्शयति ।

कृदन्त—क्त—दृष्टः (पुं०), क्तवतु—दृष्टवान् (पुं०), क्त्वा—दृष्ट्वा, तुम्—दृष्टुम्, तव्यत्—दृष्टव्य, अनीय—दर्शनीय, शतृ—पश्यन् (पुं०) ।

सद् (सीद्)— (बैठना, दुःखी होना)

लट्

प्र० पु०	सीदति	सीदतः	सीदन्ति
म० "	सीदसि	सीदथः	सीदथ
उ० "	सीदामि	सीदावः	सीदामः

लृट्

प्र० पु०	सत्स्यति	सत्स्यतः	सत्स्यन्ति
म० "	सत्स्यसि	सत्स्यथः	सत्स्यथ
उ० "	सत्स्यामि	सत्स्यावः	सत्स्यामः

लोट्

प्र० पु०	सीदतु, सीदतात्	सीदताम्	सीदन्तु
म० "	सीद, सीदतात्	सीदतम्	सीदत
उ० "	सीदानि	सीदाव	सीदाम

लङ्

प्र० पु०	असीदत्	असीदताम्	असीदन्
म० "	असीदः	असीदतम्	असीदत
उ० "	असीदम्	असीदाव	असीदाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	सीदेत्	सीदेताम्	सीदेयुः
म० "	सीदेः	सीदेतम्	सीदेत
उ० "	सीदेयम्	सीदेव	सीदेम

भाववाच्य—(लट्)—सीद्यते, लृट्—सत्स्यते, लोट्—सीद्यताम्, लङ्—असीद्यत ।

प्रेरणार्थक—सीदयति ।

कृदन्त—क्त—सन्नः (पुं०), क्तवतु—सन्नवान् (पुं०), क्त्वा—सत्त्वा, तुम्—सत्तुम्, तव्यत्—सत्तव्य, शतृ—सीदन् (पुं०) ।

उपसर्गों के योग में—

नि + सीद्—निषीदति = बैठता है ।

प्र + सीद्—प्रसीदति = प्रसन्न होता है ।

वि + सीद्—विषीदति = दुःखी होता है ।

स्था (तिष्ठ)—(ठहरना)

लट्

प्र० पु०	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
म० "	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उ० "	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लृट्

प्र० पु०	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
म० "	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उ० "	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

लोट्

प्र० पु०	तिष्ठतु, तिष्ठतात्	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
म० "	तिष्ठ, तिष्ठतात्	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उ० "	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लङ्

प्र० पु०	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
म० "	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उ० "	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
म० "	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उ० "	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

भाववाच्य—लट्—स्थीयते, लृट्—स्थास्यते, लोट्—स्थीयताम्, लङ्—अस्थीयत ।

प्रेरणार्थक—स्थापयति, स्थापयते ।

कृदन्त—क्त—स्थितः (पुं०), क्तवतु—स्थितवान् (पुं०), क्त्वा-
स्थित्वा, तुमुन्—स्थातुम्, तव्यत्—स्थातव्य, शतृ—तिष्ठन् (पुं०) ।

उपसर्गों के योग में—

उत् + स्था—उत्तिष्ठति = उठता है । उत्तिष्ठते = यत्न करता है ।

प्र + स्था—प्रतिष्ठते = प्रस्थान करता है ।

स्मृ (याद करना)

लट्

प्र० पु०	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
म० "	स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ
उ० "	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः

लृट्

प्र० पु०	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
म० "	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ
उ० "	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	स्मरतु, स्मरतात्	स्मरताम्	स्मरन्तु
म० "	स्मर, स्मरतात्	स्मरतम्	स्मरत
उ० "	स्मराणि	स्मराव	स्मराम

लङ्

प्र० पु०	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
म० "	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
उ० "	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
म० "	स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत
उ० "	स्मरेयम्	स्मरेव	स्मरेम

कर्मवाच्य—लट्—स्मर्यते, लृट्—स्मरिष्यते, लोट्—स्मर्यताम्
लङ्—अस्मर्यत ।

प्रेरणार्थक—स्मारयति ।

कृदन्त—क्त—स्मृतः (पुं०), क्तवतु—स्मृतवान् (पुं०), क्त्वा-
स्मृत्वा, तुमुन्—स्मर्तुम्, तव्यत्—स्मर्तव्य, अनीय—स्मरणीय, शतृ—
स्मरन् (पुं०) ।

उपसर्ग के योग में—

वि + स्मर—विस्मरति = भूलता है ।

पा (पिब्)—(पीना)

		लट्		
प्र० पु०	पिबति	पिबतः	पिबन्ति	
म० "	पिबसि	पिबथः	पिबथ	
उ० "	पिबामि	पिबावः	पिबामः	
		लृट्		
प्र० पु०	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति	
म० "	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ	
उ० "	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः	
		लोट्		
प्र० पु०	पिबतु, पिबतात्	पिबताम्	पिबन्तु	
म० "	पिब, पिबतात्	पिबतम्	पिबत	
उ० "	पिबानि	पिबाव	पिबाम	
		लङ्		
प्र० पु०	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्	
म० "	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत	
उ० "	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम	
		विधिलिङ्		
प्र० पु०	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः	

म० पु०	पिबे:	पिबेतम्	पिबेत
उ० "	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम
कर्मवाच्य—लट्—पीयते, लृट्—पास्यते, लोट्—पीयताम् , लङ्—अपीयत ।			

प्रेरणार्थक—पाययति ।

कृदन्त—क्त—पीतम् (नपुं०), क्तवतु—पीतवान् (पुं०), क्त्वा—
पीत्वा, तुमुन्—पातुम्, तव्यत्—पातव्य, अनीय—पानीय, शतृ—
पिवन् (पुं०) ।

जि (जीतना)

		लट्	
प्र० पु०	जयति	जयतः	जयन्ति
म० "	जयसि	जयथः	जयथ
उ० "	जयामि	जयावः	जयामः

		लृट्	
प्र० पु०	जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति
म० "	जेष्यसि	जेष्यथः	जेष्यथ
उ० "	जेष्यामि	जेष्यावः	जेष्यामः

		लोट्	
प्र० पु०	जयतु, जयतात्	जयताम्	जयन्तु
म० "	जय, जयतात्	जयतम्	जयत
उ० "	जयानि	जयाव	जयाम

		लङ्	
प्र० पु०	अजयत्	अजयताम्	अजयम्
म० "	अजयः	अजयतम्	अजयत
उ० "	अजयम्	अजयाव	अजयाम

		विधिलिङ्	
प्र० पु०	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः

म० पु०	जयेः	जयेतम्	जयेत
उ० "	जयेयम्	जयेव	जयेम
कर्मवाच्य—लट्—जीयते, लृट्—जेष्यते, लोट्—जीयताम्, लङ्—अजीयत ।			

प्रेरणार्थक—जाययति ।

कृदन्त—क्त—जितः (पुं०), क्तवतु—जितवान् (पुं०), क्त्वा—
जित्वा, तुमुन्—जेतुम्, तव्यत्—जेतव्य, शतृ—जयन् (पुं०) ।

उपसर्गों के योग में

वि + जय—विजयते = जीतता है ।

परा + जय—पराजयते = हारता या हराता है ।

(ख) आत्मनेपदी धातु

सेव् (सेवा करना)

		लट्	
प्र० पु०	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
म० "	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उ० "	सेवे	सेवावहे	सेवामहे
		लृट्	
प्र० पु०	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
म० "	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उ० "	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे
		लोट्	
प्र० पु०	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
म० "	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उ० "	सेवै	सेवावहै	सेवामहै
		लङ्	
प्र० पु०	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त

म० पु०	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उ० "	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
म० "	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उ० "	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

कर्मवाच्य—लट्—सेव्यते, लृट्—सेविष्यते, लोट्—सेव्यताम्, लङ्—असेव्यत ।

प्रेरणार्थक—सेवयति, सेवयते ।

कृदन्त—क्त—सेवितः (पुं०), क्तवतु—सेवितवान् (पुं०), क्त्वा—सेवित्वा, तुम्—सेवितुम्, तव्यत्—सेवितव्यः (पुं०), अनीय—सेवनीयः (पुं०), शानच्—सेवमानः (पुं०) ।

लभ् (पाना)

लट्

प्र० पु०	लभते	लभेते	लभन्ते
म० "	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ० "	लभे	लभावहे	लभामहे

लृट्

प्र० पु०	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म० "	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ० "	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट्

प्र० पु०	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म० "	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ० "	लभै	लभावहै	लभामहै

लङ्

प्र० पु०	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
----------	------	----------	--------

म० पु०	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ० "	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म० "	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ० "	लभेव	लभेवहि	लभेमहि

कर्मवाच्य—लट्—लभ्यते, लृट्—लप्स्यते, लोट्—लभ्यताम् ,
लङ्—अलभ्यत ।

प्रेरणार्थक—लम्भयति, लम्भयते ।

कृदन्त—कृत—लब्धः (पुं०); क्तवतु—लब्धवान् (पुं०),
क्त्वा—लब्ध्वा, तुम्—लब्धुम्, तव्यत्—लब्धव्यः (पुं०), अनीय
लभनीयः (पुं०), शानच्—लभमानः (पुं०) ।

वृध् (बढ़ना)

लट्

प्र० पु०	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
म० "	वर्धसे	वर्धथे	वर्धध्वे
उ० "	वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे

लृट्

प्र० पु०	वर्धिष्यते	वर्धिष्येते	वर्धिष्यन्ते
म० "	वर्धिष्यसे	वर्धिष्यथे	वर्धिष्यध्वे
उ० "	वर्धिष्ये	वर्धिष्यावहे	वर्धिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्
म० "	वर्धस्व	वर्धेथाम्	वर्धध्वम्
उ० "	वर्धे	वर्धावहै	वर्धामहै

लङ्

प्र० पु०	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
----------	--------	------------	----------

म० पु०	अवर्धथाः	अवर्धेयाम्	अवर्धध्वम्
उ० "	अवर्धे	अवर्धावहि	अवर्धामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
म० "	वर्धेथाः	वर्धेयाथाम्	वर्धेध्वम्
उ० "	वर्धेय	वर्धेवहि	वर्धेमहि

भाववाच्य—लट्—वृध्यते, लृट्—वर्धिष्यते, लोट्—वृध्यताम्,
लङ्—अवर्धयत ।

प्रेरणार्थक—वर्धयति, वर्धयते ।

कृदन्त—क्त—वृद्धः, वर्धितः (पुं०), क्तवतु—वृद्धवान् (पु०),
क्त्वा—वर्धित्वा, तुम्—वर्धितुम्, तव्यत्—वर्धितव्यम् (नपुं०),
अनीय—वर्धनीयम् (नपुं०), शानच्—वर्धमानः (पुं०) ।

मुद् (प्रसन्न होना)

लट्

प्र० पु०	मोदते	मोदेते	मोदन्ते
म० "	मोदसे	मोदेथे	मोदध्वे
उ० "	मोदे	मोदावहे	मोदामहे

लृट्

प्र० पु०	मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते
म० "	मोदिष्यसे	मोदिष्येथे	मोदिष्यध्वे
उ० "	मोदिष्ये	मोदिष्यावहे	मोदिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्
म० "	मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्
उ० "	मोदै	मोदावहै	मोदामहै

लङ्

प्र० पु०	अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त
----------	-------	-----------	---------

म० पु०	अमोदेथाः	अमोदेथाम्	अमोदध्वम्
उ० "	अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्
म० "	मोदेथाः	मोदेयाथाम्	मोदेध्वम्
उ० "	मोदेय	मोदेवहि	मोहेमहि

भाववाच्य—लट्—मुद्यते, लृट्—मोदिष्यते, लोट्—मुद्यताम्,
लङ्—अमुद्यत ।

प्रेरणार्थक—मोदयति, मोदयते ।

कृदन्त—क्त—मोदितः-मुदितः (पुं०), क्तवतु—मोदितवान्-मुदित-
वान् (पुं०), क्त्वा—मोदित्वा-मुदित्वा, तुम्—मोदितुम्, तव्यत्—मोदि-
तव्यः (पुं०), अनीय—मोदनीयः (पुं०), शानच्—मोदमानः (पुं०) ।

उपसर्ग के योग में

अनु + मुद्—अनुमोदते = समर्थन करता है ।

सह् (सहन करना)

लट्

प्र० पु०	सहते	सहेते	सहन्ते
म० "	सहसे	सहेथे	सहध्वे
उ० "	सहे	सहावहे	सहामहे

लृट्

प्र० पु०	सहिष्यते	सहिष्येते	सहिष्यन्ते
म० "	सहिष्यसे	सहिष्येथे	सहिष्यध्वे
उ० "	सहिष्ये	सहिष्यावहे	सहिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	सहताम्	सहेताम्	सहन्ताम्
म० "	सहस्व	सहेथाम्	सहध्वम्
उ० "	सहै	सहावहै	सहामहै

प्र० पु०	असहत्	लङ् असहेताम्	असहन्त
म० "	असहथाः	असहेथाम्	असहध्वम्
उ० "	असहे	असहावहि	असहामहि

विधिलिङ्

कर्मवाच्य—लट्—सह्यते, लृट्—सहिष्यते, लोट्—सह्यताम्, लङ्—असह्यत ।

प्रेरणार्थक—साहयति, साहयते ।

कृदन्त—क्त—सोढः, सहितः (पुं०); क्तवतु—सोढवान्, सहितवान् (पुं०); क्त्वा—सोढ्वा, सहित्वा; तुम्—सोढुम्, सहितुम्; तव्यत्—सोढव्यम्, सहितव्यम् (नपुं०); अनीय—सहनीयम् (नपुं०); शानच्—सहमानः (पुं०) ।

(ग) उभयपदी

याच् (माँगना)

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	याचति	याचतः	याचन्ति
म० "	याचसि	याचथः	याचथ
उ० "	याचामि	याचावः	याचामः

लृट्

प्र० पु०	याचिष्यति	याचिष्यतः	याचिष्यन्ति
म० "	याचिष्यसि	याचिष्यथः	याचिष्यथ
उ० "	याचिष्यामि	याचिष्यावः	याचिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	याचतु, याचतात्	याचताम्	याचन्तु
म० "	याच, याचतात्	याचतम्	याचत
उ० "	याचानि	याचाव	याचाम

		लङ्	
प्र० पु०	अयाचत्	अयाचताम्	अयाचन्
म० "	अयाचः	अयाचतम्	अयाचत
उ० "	अयाचम्	अयाचाव	अयाचाव
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	याचेत्	याचेताम्	याचेयुः
म० "	याचेः	याचेतम्	याचेत
उ० "	याचेयम्	याचेव	याचेम
		आत्मनेपद	
		लट्	
प्र० पु०	याचते	याचेते	याचन्ते
म० "	याचसे	याचेथे	याचध्वे
उ० "	याचे	याचावहे	याचामहे
		लृट्	
प्र० पु०	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
म० "	याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
उ० "	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे
		लोट्	
प्र० पु०	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
म० "	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
उ० "	याचै	याचावहै	याचामहै
		लङ्	
प्र० पु०	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
म० "	अयाचथाः	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
उ० "	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्

म० पु०	याचेथाः	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
उ० "	याचेय	याचेवहि	याचेमहि
कर्मवाच्य—लट्—याच्यते, लृट्—याचिष्यते, लोट्—याच्यताम् , लङ्—अयाच्यत ।			

प्रेरणार्थक—याचयति, याचयते ।

कृदन्त—क्त—याचितः (पुं०), क्तवतु—याचितवान् (पुं०), क्त्वा—
याचित्वा, तुम्—याचितुम् , तव्यत्—याचितव्यः (पुं०), अनीय—
याचनीयः (पुं०), शतृ—याचन् (पुं०), शानच्—याचमानः (पुं०) ।

नी (ले जाना, पहुँचाना)

परस्मैपद

		लट्	
प्र० पु०	नयति	नयतः	नयन्ति
म० "	नयसि	नयथः	नयथ
उ० "	नयामि	नयावः	नयामः
		लृट्	
प्र० पु०	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
म० "	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उ० "	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः
		लोट्	
प्र० पु०	नयतु, नयतात्	नयताम्	नयन्तु
म० "	नय, नयतात्	नयतम्	नयत
उ० पु०	नयानि	नयाव	नयाम
		लङ्	
प्र० पु०	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
म० "	अनयः	अनयतम्	अनयत
उ० "	अनयम्	अनयाव	अनयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
म० "	नयेः	नयेतम्	नयेत
उ० "	नयेयम्	नयेव	नयेम

आत्मनेपद

प्र० पु०	नयते	नयेते	नयन्ते
म० "	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उ० "	नये	नयावहे	नयामहे

लृट्

प्र० पु०	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
म० "	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उ० "	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
म० "	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उ० "	नयै	नयावहै	नयामहै

लङ्

प्र० पु०	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
म० "	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उ० "	अनये	अनयावहि	अनयामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
म० पु०	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उ० "	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

कर्मवाच्य लट्—नीयते, लृट्—नेष्यते, लोट्—नीयताम्, लङ्—अनीयत ।

प्रेरणार्थक—नाययति, नाययते ।

उपसर्गों के योग में—

परि + नी—परिणयति = विवाह करता है ।

प्र + नी—प्रणयति = बनाता है ।

अप + नी—अपनयति = दूर करता है ।

आङ् + नी—आनयति = लाता है ।

कृदन्त—क्त—नीतः (पुं०), क्तवतु—नीतवान् (पुं०), क्त्वा—
नीत्वा, तुमुन्—नेतुम्, तव्यत्—नेतव्यः (पुं०), अनीय—नयनीयः
(पुं०), शतृ—नयन् (पुं०), शानच्—नयमानः (पुं०) ।

ह (चोरी करना)

लट्

प्र० पु०	हरति	हरतः	हरन्ति
म० "	हरसि	हरथः	हरथ
उ० "	हरामि	हरावः	हरामः

लृट्

प्र० पु०	हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति
म० "	हरिष्यसि	हरिष्यथः	हरिष्यथ
उ० "	हरिष्यामि	हरिष्यावः	हरिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	हरतु, हरतात्	हरताम्	हरन्तु
म० "	हर, हरतात्	हरतम्	हरत
उ० "	हराणि	हराव	हराम

लङ्

प्र० पु०	अहरन्	अहरताम्	अहरन्
म० "	अहरः	अहरतम्	अहरत
उ० "	अहरम्	अहराव	अहराम

विधिलिङ्

प्र० पु०	हरेत्	हरेताम्	हरेयुः
----------	-------	---------	--------

म० पु०	हरेः	हरेतम्	हरेत
उ० "	हरेयम्	हरेव	हरेम

आत्मनेपद

		लट्	
प्र० पु०	हरते	हरेते	हरन्ते
म० "	हरसे	हरेथे	हरध्वे
उ० "	हरे	हरावहे	हरामहे

		लृट्	
प्र० पु०	हरिष्यते	हरिष्येते	हरिष्यन्ते
म० "	हरिष्यसे	हरिष्येथे	हरिष्यध्वे
उ० "	हरिष्ये	हरिष्यावहे	हरिष्यामहे

		लोट्	
प्र० पु०	हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
म० "	हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्
उ० "	हरै	हरावहै	हरामहै

		लङ्	
प्र० पु०	अहरत	अहरेताम्	अहरन्त
म० "	अहरथाः	अहरेथाम्	अहरध्वम्
उ० "	अहरे	अहरावहि	अहरामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	हरेत	हरेयोताम्	हरेरन्
म० "	हरेथाः	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
उ० "	हरेय	हरेवहि	हरेमहि

कर्मवाच्य—लट्—ह्रियते, लृट्—हरिष्यते, लोट्—ह्रियताम्, लङ्—अह्रियत ।

प्रेरणार्थक—हारयति, हारयते ।

उपसर्गों के योग में—

प्र + हृ—प्रहरति = प्रहार करता है ।

आ + हृ—आहरति = लाता है, खाता है ।

सं + हृ—संहरति—संहार करता है ।

वि + हृ—विहरति = खेलता है ।

परि + हृ—परिहरति = दूर करता है ।

कृदन्त—क्त—हृतम् (नपुं०), क्तवतु—हृतवान् (पुं०), क्त्वा—हृत्वा, तुमुन्—हर्तुम्, तव्यत्—हर्तव्यम् (नपुं०), अनोय—हरणीयम् (नपुं०), शतृ—हरन् (पुं०), शानच्—हरमाणः (पुं०) ।

भ्वादिगण धातुकोश

परस्मैपदी

पत्—गिरना । पतति, पतिष्यति, पततु, अपतत्, पतेत् ।

वस्—रहना । वसति, वत्स्यति, वसतु, अवसत्, वसेत् ।

यच्छ्—देना । यच्छति, दास्यति, यच्छतु, अयच्छत्, यच्छेत् ।

चल्—हिलना, चलना । चलति, चलिष्यति, चलतु, अचलत्, चलेत् ।

अर्च्—पूजा करना । अर्चति, अर्चिष्यति, अर्चतु, आर्चत्, अर्चेत् ।

धाव्—दौड़ना । धावति, धाविष्यति, धावतु, अधावत्, धावेत् ।

दह्—जलाना । दहति, धक्ष्यति, दहतु, अदहत्, दहेत् ।

खाद्—खाना । खादति, खादिष्यति, खादतु, अखादत्, खादेत् ।

जप्—जपना । जपति, जपिष्यति, जपतु, अजपत्, जपेत् ।

अर्ज्—कमाना । अर्जति, अर्जिष्यति, अर्जतु, आर्जत्, अर्जेत् ।

घ्रा (जिघ्र्)—सूँघना । जिघ्रति, घ्रास्यति, जिघ्रतु, अजिघ्रत्, जिघ्रेत् ।

निन्द्—निन्दा करना । निन्दति, निन्दिष्यति, निन्दतु, अनिन्दत्, निन्देत् ।

वाञ्छ्—चाहना । वाञ्छति, वाञ्छिष्यति, वाञ्छतु, अवाञ्छत्, वाञ्छेत् ।

क्रीड्—खेलना । क्रीडति, क्रीडिष्यति, क्रीडतु, अक्रीडत्, क्रीडेत् ।

भ्रम्—घूमना । भ्रमति, भ्रमिष्यति, भ्रमतु, अभ्रमत्, भ्रमेत् ।

तर्—तैरना । तरति, तरिष्यति, तरतु, अतरत्, तरेत् ।

काङ्क्ष्—चाहना । काङ्क्षति, काङ्क्षिष्यति, काङ्क्षतु, अकाङ्क्षत्, काङ्क्षेत् ।

श्रु—सुनना । शृणोति, श्रोष्यति, शृणोतु, अशृणोत्, शृणुयात् ।

आत्मनेपदी

यत्—यत्न करना । यतते, यतिष्यते, यतताम्, अयतत, यतेत ।

शङ्क्—शंका करना । शङ्कते, शङ्किष्यते, शङ्कताम्, अशङ्कत, शङ्केत ।

क्षम्—क्षमा करना । क्षमते, क्षंस्यते, क्षमताम्, अक्षमत, क्षमेत ।

भाष्—बोलना । भाषते, भाषिष्यते, भाषताम्, अभ्राषत, भापेत ।

कल्प्—समर्थ होना । कल्पते, कल्पिष्यते, कल्पताम्, अकल्पत, कल्पेत ।

श्लाघ्—प्रशंसा करना । श्लाघते, श्लाघिष्यते, श्लाघताम्, अश्लाघत, श्लाघेत ।

आरम्—शुरू करना । आरभते, आरप्स्यते, आरभताम्, आरभत, आरभेत ।

शुभ्—शोभा देना । शोभते, शोभिष्यते, शोभताम्, अशोभत, शोभेत ।

ध्वंस्—नष्ट होना । ध्वंसते, ध्वंसिष्यते, ध्वंसताम्, अध्वंसत, ध्वंसेत ।

स्वस्—खिसकना । स्वंसते, स्वंसिष्यते, स्वंसताम्, अस्वंसत, स्वंसेत ।

भ्राज्—शोभा देना । भ्राजते, भ्राजिष्यते, भ्राजताम्, अभ्राजत, भ्राजेत ।

शिन्—शिखा देना । शिञ्चते, शिञ्चिष्यते, शिञ्चताम्, अशिञ्चत, शिञ्चेत ।

एध्—बढ़ना । एधते, एधिष्यते, एधताम्, ऐधत, एधेत ।

कम्प्—काँपना । कम्पते, कम्पिष्यते, कम्पताम्, अकम्पत, कम्पेत ।

वदि (वन्द्)—नमस्कार करना, स्तुति करना । वन्दते, वन्दिष्यते, वन्दताम्, अवन्दत, वन्देत ।

ईच्—देखना । ईक्षते, ईक्षिष्यते, ईक्षताम्, ऐक्षत, ईक्षेत ।

अभ्यास

अनुवाद करो—

१. हम सब काशी विश्वविद्यालय में पढ़ते हैं । तुम दोनों कहाँ पढ़ोगे ? हमारी सम्मति में तुम दोनो भी काशी विश्वविद्यालय में पढ़ो । मेरा बड़ा भाई भी वहाँ पढ़ा था, मेरा छोटा भाई भी शायद वहीं पढ़े ।

२. प्रातः उठ कर माता-पिता को नमस्कार करो । जो प्रातः उठता है, वह सुख पाता है । तुम दोनो उस कुएँ पर जाओ और पानी पियो । यदि तू यहाँ न टहरेगा तो मैं घर नहीं जाऊँगा । मनुष्य संसार में सदाचार से जीवन व्यतीत करे ।

३. श्रवण बोला—मैं अपने माता-पिता की सेवा करता था, उनको तीर्थों पर ले जाता था । धर्माचरण से मनुष्य सुख पाता है । मोर बरसात में खुश होते हैं । ईश्वर सब शुभ-अशुभ कर्मों को देखता है ।

४. संसार में जो ऊपर चढ़ता है, वह अवश्य नीचे गिरता है । मुनि लोग आश्रमों में रहते थे, विद्यार्थियों को विद्या दान देते थे, और ईश्वर की प्रार्थना करते थे । मनुष्य धर्मपूर्वक जीविका को कमाये, पाप की कमाई न खाये, किसी के धन को छीनने की इच्छा न करे । मैं बाग में प्रातःकाल भ्रमण करता हूँ । वहीं खेलता हूँ, फूलों को सूँघता हूँ, किरणों के साथ दौड़ता हूँ, तालाब में स्नान करता हूँ, और तैरता हूँ ।

५. यदि तू यत्न करेगा, परीक्षा में अवश्य पास हो जायगा । असफल होऊँगा, ऐसी शंका न कर । मैंने यदि कटुभाषण किया हो तो आप क्षमा करेंगे । विनयशील बालक की सब प्रशंसा करते हैं, वह संसार में कठिन कार्यों को करने में समर्थ होता है । वह जो कार्य आरम्भ करता है, उसमें सफल होता है । उसका उत्साह कभी नष्ट नहीं होता । वह अपने मार्ग से नहीं खिसकता । उसका धैर्य बढ़ता है । वह विघ्नों से नहीं काँपता । वह समाज में शोभा पाता है ।

अदादिगण
(क) परस्मैपदी
अद् (खाना)

		लट्	
प्र० पु०	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
म० "	अत्तिस्	अत्थः	अत्थ
उ० "	अद्भि	अद्भः	अद्भः

		लृट्	
प्र० पु०	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
म० "	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
उ० "	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

		लोट्	
प्र० पु०	अत्तु, अत्तात्	अत्ताम्	अदन्तु
म० "	अद्भि, अत्तात्	अत्तम्	अत्त
उ० पु०	अदानि	अदाव	अदाम

		लङ्	
प्र० पु०	आदन्	आत्ताम्	आदन्
म० "	आदः	आत्तम्	आत्त
उ० "	आदम्	आद्भ	आद्भ

		विधिलिङ्	
प्र० पु०	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
म० "	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
उ० "	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

कर्मवाच्य—लट्—अद्यते, लृट्—अत्स्यते, लोट्—अद्यताम्,
लङ्—आद्यत ।

प्रेरणार्थक—आदयति, आदयते ।

कृदन्त—क्त—जग्धम् (नपुं०), क्तवतु—जग्धवान् , अन्नवान् (पुं०),
 क्त्वा—जग्ध्वा, तुमुन्—अत्तम् , तव्यत्—अत्तव्यम् (नपुं०) अनीय—
 अदनीयम् (नपुं०), शत्—अदन् (पुं०) ।

अस् (होना)

लट्

प्र० पु०	अस्ति	स्तः	सन्ति
म० "	असि	स्थः	स्थ
उ० "	अस्मि	स्वः	स्मः

लृट्

प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० "	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० "	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट्

प्र० पु०	अस्तु, स्तात्	स्ताम्	सन्तु
म० "	एधि, स्तात्	स्तम्	स्त
उ० "	असानि	असाव	असाम

लङ्

प्र० पु०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म० "	आसीः	आस्तम्	आस्त
उ० "	आसम्	आस्व	आस्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्यात्	स्याताम्	स्युः
म० "	स्याः	स्यातम्	स्यात
उ० "	स्याम्	स्याव	स्याम

अस् धातु के कर्मवाच्य में, प्रेरणार्थक और कृदन्त में वे ही रूप होंगे जो भू धातु के होते हैं, क्योंकि इन स्थानों में 'अस्' को 'भू' हो जाता है । कृदन्त—शत्—सन् (पुं०) ।

ब्रू* (बोलना)

प्र० पु०	ब्रवीति, आह	लट् ब्रूतः, आहतुः	ब्रुवन्ति, आहुः
म० "	ब्रवीषि, आत्थ	ब्रूथः, आहथुः	ब्रूथ
उ० "	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः

प्र० पु०	वक्ष्यति	लट् वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
म० "	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
उ० "	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः

प्र० पु०	ब्रवीतु, ब्रूतात्	लोट् ब्रूताम्	ब्रुवन्तु
म० "	ब्रूहि, ब्रूतात्	ब्रूतम्	ब्रूत
उ० "	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम

प्र० पु०	अब्रवीत्	लङ् अब्रूताम्	अब्रुवन्
म० "	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
उ० "	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

प्र० पु०	ब्रूयात्	विधिलिङ् ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
म० "	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उ० "	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

कर्मवाच्य—लट्—उच्यते, लृट्—वक्ष्यते, लोट्—उच्यताम्,
लङ्—अच्यत ।

प्रेरणार्थक—वाचयति, वाचयते ।

*ब्रू उभयपदी धातु हैं, पर हाई स्कूल परीक्षा के लिए इनके परस्मैपद के रूप जानना ही आवश्यक है अतः आत्मनेपद के रूप नहीं दिये गये ।

कृदन्त—क्त—उक्तः (पुँ०), क्तवतु—उक्तवान् (पुँ०), क्त्वा—
उक्त्वा, तुमुन्—वक्तुम्, तव्यत्—वक्तव्य, अनीय—वचनीय, शतृ—
ब्रुवन्, शानच्—ब्रुवाणः (पुँ०), एयत्—वाच्यः, वाक्यम् ।

रुद् (रोना)

लट्

प्र० पु०	रोदिति	रुदितः	रुदन्ति
म० "	रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ
उ० "	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः

लृट्

प्र० पु०	रोदिष्यति	रोदिष्यतः	रोदिष्यन्ति
म० "	रोदिष्यसि	रोदिष्यथः	रोदिष्यथ
उ० "	रोदिष्यामि	रोदिष्यावः	रोदिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	रोदितु, रुदितात्	रुदिताम्	रुदन्तु
म० "	रुदिहि, रुदितात्	रुदितम्	रुदित
उ० "	रोदानि	रोदाव	रोदाम

लङ्

प्र० पु०	अरोदत्, अरोदीत्	अरुदिताम्	अरुदन्
म० "	अरोदः, अरोदीः	अरुदितम्	अरुदित
उ० "	अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम

विधिलिङ्

प्र० पु०	रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः
म० "	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात
उ० "	रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम

भाववाच्य—लट्—रुद्यते, लृट्—रोदिष्यते, लोट्—रुद्यताम्
लङ्—अरुद्यत ।

प्रेरणार्थक—रोदयति, रोदयते ।

कृदन्त—क्त—रुदितः (पुं०), क्तवतु—रुदितवान् (पुं०), क्त्वा—
रुदित्वा, तुमुन्—रोदितुम्, तव्यत्—रोदितव्यः (पुं०), अनीय—रोदनीयः
(पुं०), शतृ—रुदन् (पुं०) ।

दुह् (दुहना)

लट्

प्र० पु०	दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति
म० "	धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध
उ० "	दोह्यि	दुह्यः	दुह्यः

लृट्

प्र० पु०	धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति
म० "	धोक्ष्यसि	धोक्ष्यथः	धोक्ष्यथ
उ० "	धोक्ष्यामि	धोक्ष्यावः	धोक्ष्यामः

लोट्

प्र० पु०	दोग्धु, दुग्धात्	दुग्धाम्	दुहन्तु
म० "	दुग्धि, दुग्धात्	दुग्धम्	दुग्ध
उ० "	दोहानि	दोहाव	दोहाम

लङ्

प्र० पु०	अधोक्-न्	अदुग्धाम्	अदुहन्
म० "	अधोक्-न्	अदुग्धम्	अदुग्ध
उ० "	अदोहम्	अदुह्य	अदुह्य

विधिलिङ्

प्र० पु०	दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः
म० "	दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात
उ० "	दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम

कर्मवाच्य—लट्—दुह्यते, लृट्—धोक्ष्यते, लोट्—दुह्यताम्
लङ्—अदुह्यत ।

प्रेरणार्थक—दोहयति, दोहयते ।

कृदन्त—क्त—दुग्धः (पुँ०), क्तवतु—दुग्धवान् (पुँ०), क्त्वा—
दुग्ध्वा, तुमुन्—दोग्धुम्, तव्यत्—दोग्धव्यः (पुँ०), अनीय—दोहनीयः
(पुँ०), रयत्—दोह्यः (पुँ०), शतृ—दुहन् (पुँ०), शानच्—दुहानः (पुँ०) ।

स्वप् (सोना)

लट्

प्र० पु०	स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति
म० "	स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ
उ० "	स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः

लट्

प्र० पु०	स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः	स्वप्स्यन्ति
म० "	स्वप्स्यसि	स्वप्स्यथः	स्वप्स्यथ
उ० "	स्वप्स्यामि	स्वप्स्यावः	स्वप्स्यामः

लोट्

प्र० पु०	स्वपितु, स्वपितात्	स्वपिताम्	स्वपन्तु
म० "	स्वपिहि, स्वपितात्	स्वपितम्	स्वपित
उ० "	स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम

लङ्

प्र० पु०	अस्वपत्, अस्वपीत्	अस्वपिताम्	अस्वपन्
म० "	अस्वपः, अस्वपीः	अस्वपितम्	अस्वपित
उ० "	अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
म० "	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
उ० "	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम

भाववाच्य—लट्—सुप्यते, लृट्—स्वप्स्यते, लोट्—सुप्यताम्,
लङ्—असुप्यत ।

प्रेरणार्थक—स्वापयति, स्वापयते ।

कृदन्त—क्त—सुप्तः (पुँ०), क्तवतु—सुप्तवान् (पुँ०), क्त्वा—सुप्त्वा,
तुमुन—स्वप्तुम्, तव्यत्—स्वप्तव्यः (पुँ०), अनीय—स्वपनीयः (पुँ०),
शतृ—स्वपन् (पुँ०) ।

हन् (मारना)

लट्

प्र० पु०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म० "	हंसि	हथः	हथ
उ० "	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लृट्

प्र० पु०	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
म० "	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उ० "	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	हन्तु, हतात्	हताम्	घ्नन्तु
म० "	जहि, हतात्	हतम्	हत
उ० "	हनानि	हनाव	हनाम

लङ्

प्र० पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
म० "	अहन्	अहतम्	अहत
उ० "	अहनम्	अहन्व	अहन्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
म० "	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उ० "	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

कर्मवाच्य—लट्—हन्यते, लृट्—हनिष्यते, लोट्—हन्यताम्,
लङ्—अहन्यत ।

प्रेरणार्थक—घातयति, घातयते ।

कृदन्त—क्त—इतः (पुं०), क्तवतु—इतवान् (पुं०), क्त्वा—हुत्वा,
तुमुन्—हन्तुम्, तव्यत्—हन्तव्यः (पुं०), अनीय—हननीयः (पुं०),
शतृ—घ्नन् (पुं०), ण्यत्—घात्यः (पुं०) ।

इ (जाना)

प्र० पु०	एति	लट् इतः	यन्ति
म० "	एषि	इथः	इथ
उ० "	एमि	इवः	इमः

प्र० पु०	एष्यति	लृट् एष्यतः	एष्यन्ति
म० "	एष्यसि	एष्यथः	एष्यथ
उ० "	एष्यामि	एष्यावः	एष्यामः

प्र० पु०	एतु, इतात्	लोट् इताम्	यन्तु
म० "	इहि, इतात्	इतम्	इत
उ० "	अयानि	अयाव	अयाम

प्र० पु०	ऐत्	लङ् ऐताम्	आयन्
म० "	ऐः	ऐतम्	ऐत
उ० "	आयम्	ऐव	ऐम

प्र० पु०	इयात्	विधिलिङ् इयाताम्	इयुः
म० "	इयाः	इयातम्	इयात
उ० "	इयाम्	इयाव	इयाम

कर्मवाच्य—लट्—ईयते, लृट्—एष्यते, लोट्—ईयताम्, लङ्—
ऐयत ।

प्रेरणार्थक—गमयति, गमयते ।

कृदन्त—क्त—इतः (पुँ०), क्तवतु—इतवान् (पुँ०), क्त्वा—
इत्वा, तुमुन्—एतुम्, तव्यत्—एतव्यः (पुँ०), अनीय—अयनीयः (पुँ०),
शतृ—यन् (पुँ०) ।

(ख) आत्मनेपदी

आस् (बैठना)

लट्

प्र० पु०	आस्ते	आसाते	आसते
म० "	आस्से	आसाथे	आध्वे
उ० "	आसे	आस्वहे	आस्महे

लृट्

प्र० पु०	आसिष्यते	आसिष्येते	आसिष्यन्ते
म० "	आसिष्यसे	आसिष्येथे	आसिष्यध्वे
उ० "	आसिष्ये	आसिष्यावहे	आसिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्
म० पु०	आस्व (आस्व)	आसाथाम्	आध्वम्
उ० "	आसै	आसावहै	आसामहै

लङ्

प्र० पु०	आस्त	आसाताम्	आसत
म० "	आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्
उ० "	आसि	आस्वहि	आस्महि

विधिलिङ्

प्र० पु०	आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्
म० "	आसीथाः	आसीयाथाम्	आसीध्वम्
उ० "	आसीय	आसीवहि	आसीमहि

कर्मवाच्य—लट्—आस्यते, लृट्—आसिष्यते, लोट्—आस्यताम्,
लङ्—आस्यत ।

प्रेरणार्थक—आसयति, आसयते ।

कृदन्त—क्त—आसितः (पुं०), क्तवतु—आसितवान् (पुं०),
क्त्वा—आसित्वा, तुमुन्—आसितुम्, तव्यत्—आसितव्यः (पुं०),
अर्नाय—आसनीयः (पुं०), शानच्—आसीनः (पुं०) ।

उपसर्ग के योग में—

उप + आस्—उपास्ते = उपासना करता है ।

शी (सोना)

लट्

प्र० पु०	शेते	शयाते	शेरते
म० "	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उ० "	शये	शेवहे	शेमहे

लृट्

प्र० पु०	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
म० "	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उ० "	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

लोट

प्र० पु०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
म० "	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उ० "	शयै	शयावहै	शयामहै

लङ्

प्र० पु०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
म० "	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
उ० "	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
म० "	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उ० "	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

कर्मवाच्य—लट्—शय्यते, लृट्—शयिष्यते, लोट्—शय्यताम्
लङ्—अशय्यत ।

प्रेरणार्थक—शाययति, शाययते ।

कृदन्त—क्त—शयितः (पुं०), क्तवतु—शयितवान् (पुं०); क्त्वा—
शयित्वा, तुम्—शयितुम्, तव्यत्—शयितव्यः, (पुं०) अनीय—
शयनीयः, (पुं०), शानच्—शयानः (पुं०) ।

उपसर्ग के योग में—

अनु + शी—अनुशेते = पश्चात्ताप करता है ।

अदादिगण धातुकोश

परस्मैपदी

पा—रक्षा करना । पाति, पास्यति, पातु, अपात्, पायात् ।

जागृ—जागना । जागर्ति, जागरिष्यति, जागर्तु-जागृतान्, अजागः,
जागृयात् ।

विद्—जानना । वेत्ति-वेद, वेदिष्यति, वेत्तु-वितान्, विदाङ्करोतु-
विदाङ्कृतान्, अवेत्-द्, विद्यात् ।

शास—शासन करना । शास्ति, शासिष्यति, शास्तु-शिष्टान्,
अशात्-द्, शिष्यात् ।

आत्मनेपदी

सू—उत्पन्न करना । सूते, सोष्यते-सविष्यते, सुताम्, असूत,
सुवीत ।

अधि + इ—पढ़ना । अधीते, अध्येष्यते, अधीताम्, अध्यैत,
अधीयीन ।

अभ्यास

अनुवाद करो—

१. मनुष्य जैसा अन्न खाता है, वैसा ही उसका मन होता है । जो पशुओं
को मारते हैं और उनका मांस खाते हैं, उनका मन निर्दय तथा क्रूर हो जाता

है । मनुष्य कभी किसी जीव को न मारे । बलवान् निर्बल की रक्षा करे ।

२. एक राजा था । उसके तीन मन्त्री थे । वे सदा उसकी स्तुति करते थे । राजा जो कहता था मन्त्री भी वही बोलते थे । वे कदापि अप्रिय सत्य का भाषण न करते थे । उस राजा का राज्य शीघ्र नष्ट हो गया ।

३. जब बालक रोता है, माता उसे दूध देती है । वन में एक अचला एक आश्रम में बैठी थी और रो रही थी । एक महात्मा आये । उन्होंने पूछा—देवी, तू क्यों रोती है । जब संसार सोता है, संयमी पुरुष तब जागता है । वह जानता है कि जो सोता है वह खोता है ।

जुहोत्यादिगण (क) परस्मैपदी हु (हवन करना)

लृट्

प्र० पु०	जुहोति	जुहुतः	जुहति
म० "	जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ
उ० "	जुहोमि	जुहुवः	जुहुम

लृट्

प्र० पु०	होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति
म० "	होष्यसि	होष्यथः	होष्यथ
उ० "	होष्यामि	होष्यावः	होष्यामः

लोट्

प्र० पु०	जुहोतु, जुहुतात्	जुहुताम्	जुहतु
म० "	जुहुधि, जुहुतात्	जुहुतम्	जुहुत
उ० "	जुह्वानि	जुह्वाव	जुह्वाम

लङ्

प्र० पु०	अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः
म० "	अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत
उ० "	अजुह्वम्	अजुहुव	अजुहुम

विभिलिङ्

प्र० पु०	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
म० "	जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात्
उ० "	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम
कर्मवाच्य—लट्—हूयते, लृट्—होष्यते, लोट्—हूयताम्, लङ्—अहूयत ।			

कृदन्त—क्त—हुतः (पुं०), क्तवतु—हुतवान् (पुं०), क्त्वा—हुत्वा, तुमुन्—होतुम्, तव्यत्—होतव्यः (पुं०), अनीय—हवनीयः (पुं०), शतृ—जुह्वत् (पुं०) ।

भी (डरना)

लट्

प्र० पु०	विभेति	विभितः, विभीतः	विभ्यति
म० "	विभेषि	विभिथः, विभीथः	विभिथ, विभीथ
उ० "	विभेमि	विभिवः, विभीवः	विभिमः, विभीमः

लृट्

प्र० पु०	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
म० "	भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ
उ० "	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

लोट्

प्र० पु०	विभेत्, विभितात् विभीतात्	{ विभिताम् विभीताम्	विभ्यतु
म० "	विभिहि. विभितात् विभीहि, विभीतात् }	{ विभितम् विभीतम् }	विभित विभीत }
उ०, "	विभयानि	विभयाव	विभयाम

लङ्

प्र० पु०	अविभेत् अविभिताम् अविभीताम् }	अविभयुः
----------	-------------------------------------	---------

म० पु०	अविभेः	अविभितम् अविभीतम् }	अविभित अविभीत }
उ० "	अविभयम्	अविभिव अविभीव }	अविभिम अविभीम }

विधिलिङ्

प्र० पु०	विभियात् विभीयात् }	विभियाताम् विभीयाताम् }	विभियुः विभीयुः }
म० "	विभियाः विभीयाः }	विभियातम् विभीयातम् }	विभियात विभीयात }
उ० "	विभियाम् विभीयाम् }	विभियाव विभीयाव }	विभियाम विभीयाम }

भाववाच्य—लट्—भीयते, लृट्—भेद्यते, लोट्—भीयताम्,
लङ्—अभीयत ।

प्ररणाथक—भापयति, भापयते, भीषयते ।

कृदन्त—क्त—भीतः (पु०), क्तवतु—भीतवान् (पु०), क्त्वा—
भीत्वा, तुम्—भेतुम्, तव्यत्—भेतव्यम् (पु०), अनीय—भयनीयः
(पु०), शतृ—विभ्यत् (पु०) ।

(ख) उभयपदी

दा (देना)

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	ददाति	दत्तः	ददति
म० "	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ० "	ददामि	दद्वः	दद्वः

लृट्

प्र० पु०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म० "	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ

उ० पु०	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः
प्र० पु०	ददातु, दत्तात्	लोट् दत्ताम्	ददतु
म० "	देहि, दत्तात्	दत्तम्	दत्त
उ० "	ददानि	ददाव	ददाम
प्र० पु०	अददात्	लङ् अदत्ताम्	अददुः
म० "	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ० "	अददाम्	अदद्व	अदद्व
प्र० पु०	दद्यात्	विधिलिङ् दद्याताम्	दद्युः
म० "	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उ० "	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

आत्मनेपद

प्र० पु०	दत्ते	लट् ददाते	ददते
म० "	दत्से	ददाथे	ददध्वे
उ० "	ददे	दद्वहे	दद्वहे
प्र० पु०	दास्यते	लुट् दास्येते	दास्यन्ते
म० "	दास्यसे	दस्येथे	दास्यध्वे
उ० "	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे
प्र० पु०	दत्ताम्	लोट् ददाताम्	ददताम्
म० "	दत्स्व	ददाथाम्	ददध्वम्
उ० "	ददै	ददावहै	ददामहै

		लङ्	
प्र० पु०	अदत्त	अददाताम्	अददत
म० "	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ० "	अददि	अदद्वहि	अदद्वाहि

		विधिलिङ्	
प्र० पु०	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म० "	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उ० "	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

कर्मवाच्य—लट्—दीयते, लृट्—दास्यते, लोट्—दीयताम् ,
लङ्—अदीयत ।

प्रेरणार्थक—दापयति, दापयते ।

कृदन्त—क्त—दत्तः (पुं०), क्तवतु—दत्तवान् (पुं०), क्त्वा—दत्त्वा,
तुमुन—दातुम्, तव्यत्—दातव्यः (पुं०), अनीय—दानीयः (पुं०);
शतृ—ददत् (पुं०, नपुं०), शानच्—ददानः (पुं०), यत्—देयः (पुं०) ।

जुहोत्यादिगण धातुकोश

परस्मैपदी

ह्री—लज्जा करना—जिह्नेति, हेष्यति, जिह्नेतु, अजिह्नेत् , जिह्नीयात् ।

ह्रा—छोड़ना—जहाति, हास्यति, जहातु, अजहात् , जह्यात् ।

उभयपदी

धा—धारण करना—दधाति, धास्यति, दधातु, अदधात् , दध्यात् ;
धत्ते, धास्यते, धत्ताम् , अधत्त, दधीत ।

भृ—भरण करना—बिभर्ति, भरिष्यति, बिभर्तु, अबिभः, बिभृयात् ;
बिभृते, भरिष्यते, बिभृताम् , अबिभृत, बिभ्रीत ।

अभ्यास

अनुवाद करो—

१. ऋषि आश्रम में अग्निहोत्र करता है । प्राचीन समय में आर्य लोग

प्रातः सायं अग्निहोत्र करते थे । जो गृहस्थ प्रतिदिन हवन करेगा, उसके घर में रोग न रहेगा । तू किस लिए डरता है ? मैं डरता नहीं । पहले मैं साँपो से डरता था; परन्तु अब नहीं डरता । जब मैं साँपों को दुःख नहीं देता तो मैं क्यों डरूँ ? हिसक जीवों से वे डरते हैं, जिनके दिल में हिसा होती है । प्राचीन युग में योगी लोग शेरों से भी नहीं डरते थे ।

२. जो ईश्वर हमें सब कुछ देता है, तू उसे स्मरण कर । यदि तू प्रतिदिन उसे स्मरण करेगा तो वह तुझे संसार के सुख देगा । तू निर्धनों को धन दे, भूखे को भोजन दे, प्यासे को पानी दे, नंगों को कपड़ा दे ।

दिवादिगण

(क) परस्मैपदी

दिक् (जुआ खेलना या चमकना)*

		लट्	
प्र० पु०	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
म० "	दीव्यमि	दीव्यथः	दीव्यथ
उ० "	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः
		लृट्	
प्र० पु०	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
म० "	देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ
उ० "	देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः
		लोट्	
प्र० पु०	दीव्यतु, दीव्यतात्	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
म० "	दीव्य, दीव्यतात्	दीव्यतम्	दीव्यत
उ० "	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

* निम्नलिखित अर्थों में इस धातु का प्रयोग होता है—क्रीड़ा, विजिगीषा, व्यवहार, श्रुति, स्तुति, मोद, मद, स्वप्न, कान्ति, गति ।

लङ्

प्र० पु०	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
म० "	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उ० "	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
म० "	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
उ० "	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

कर्मवाच्य—लट्—दीव्यते, लृट्—देविष्यते, लोट्—दीव्यताम्, लङ्—अदीव्यत ।

प्रेरणार्थक—देवयति ।

कृदन्त—क्त—द्यूनः (पुं०), द्यूतम् (नपुं०), क्तवतु—देवितवान् (पुं०), क्त्वा—देवित्वा, तुमुन्—देवितुम्, तव्यत्—देवितव्यः (पुं०), अनीय—देवनीयः (पुं०), यत्—देव्यः (पुं०), शतृ—दीव्यन् (पुं०) ।

नृत् (नाचना)

लट्

प्र० पु०	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
म० "	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उ० "	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

लृट्

प्र० पु०	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
म० "	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
उ० "	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

या

प्र० पु०	नत्स्यति	नत्स्यतः	नत्स्यन्ति
म० "	नत्स्यसि	नत्स्यथः	नत्स्यथ
उ० "	नत्स्यामि	नत्स्यावः	नत्स्यामः

लोट्

प्र० पु०	नृत्यतु, नृत्यतात्	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
म० "	नृत्य, नृत्यतात्	नृत्यतम्	नृत्यत
उ० "	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

लङ्

प्र० पु०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
म० "	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उ० "	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
म० "	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उ० "	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

कर्मवाच्य—लट्—नृत्यते, लृट्—नर्तिष्यते, लोट्—नृत्यताम्,
लङ्—अनृत्यत ।

प्रेरणार्थक—नर्तयति, नर्तयते ।

कृदन्त—क्त—नृत्तः—नर्तितः (पुँ०), क्तवतु—नृत्तवान् (पुं०),
क्त्वा—नर्तिक्त्वा, तुमुन्—नर्तितुम्, तव्यत्—नर्तितव्यः (नपुँ०), अनीय—
नर्तनीयः (पुँ०), क्यप्—नृत्यम् (नपुँ०), शतृ—नृत्यन् (पुँ०) ।

नश् (नष्ट होना)

लट्

प्र० पु०	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
म० "	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उ० "	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

लृट्

प्र० पु०	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति
म० "	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
उ० "	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः

या

प्र० पु०	नङ्क्षति	नङ्क्षतः	नङ्क्षन्ति
म० "	नङ्क्षसि	नङ्क्षथः	नङ्क्षथ
उ० "	नङ्क्षामि	नङ्क्ष्यावः	नङ्क्ष्यामः

लोट्

प्र० पु०	नश्यतु, नश्यतात्	नश्यताम्	नश्यन्तु
म० "	नश्य, नश्यतात्	नश्यतम्	नश्यत
उ० "	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

लङ्

प्र० पु०	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
म० "	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत
उ० "	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
म० "	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उ० "	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

भाववाच्य—लट्—नश्यते, लृट्—नन्दयते, लोट्—नश्यताम्, लङ्—अनश्यत ।

प्रेरणार्थक—नाशयति ।

कृदन्त—क्त—नष्टः (पुं०), क्तवतु—नष्टवान् (पुं०), क्त्वा—नष्ट्वा-नशित्वा, तुमुन्—नष्टुम्-नशितुम्, तव्यत्—नाशितव्यः-नष्टव्यः (पुं०), अनीय—नशनीयः (पुं०), शतृ—नश्यन् (पुं०) ।

भ्रम् (धूमना, अस्थिर होना)

लट्

प्र० पु०	भ्राम्यति	भ्राम्यतः	भ्राम्यन्ति
म० "	भ्राम्यसि	भ्राम्यथः	भ्राम्यथ
उ० "	भ्राम्यामि	भ्राम्यावः	भ्राम्यामः

		लृट्	
प्र० पु०	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति
म० "	भ्रमिष्यसि	भ्रमिष्यथः	भ्रमिष्यथ
उ० "	भ्रमिष्यामि	भ्रमिष्यावः	भ्रमिष्यामः

		लोट्	
प्र० पु०	भ्राम्यतु, भ्राम्यतात्	भ्राम्यताम्	भ्राम्यन्तु
म० "	भ्राम्य, भ्राम्यतात्	भ्राम्यतम्	भ्राम्यत
उ० "	भ्राम्याणि	भ्राम्याव	भ्राम्याम

		लङ्	
प्र० पु०	अभ्राम्यन्	अभ्राम्यताम्	अभ्राम्यन्
म० "	अभ्राम्यः	अभ्राम्यतम्	अभ्राम्यत
उ० "	अभ्राम्यम्	अभ्राम्याव	अभ्राम्याम

		विधिलिङ्	
प्र० पु०	भ्राम्येत्	भ्राम्येताम्	भ्राम्येयुः
म० "	भ्राम्येः	भ्राम्येतम्	भ्राम्येत
उ० "	भ्राम्येयम्	भ्राम्येव	भ्राम्येम

भाववाच्य—लट्—भ्राम्यते, लृट्—भ्रमिष्यते, लोट्—भ्राम्यताम्
लङ्—अभ्राम्यत ।

प्रेरणार्थक—भ्रमयति, भ्रमयते ।

कृदन्त—क्त—भ्रान्तः (पुं०), क्तवतु—भ्रमितवान् (पुं०), क्त्वा—
भ्रान्त्वा, तुम्—भ्रमितुम्, तव्यत्—भ्रमितव्यः (पुं०), अनीय—भ्रम-
णीयः (पुं०), शतृ—भ्राम्यन्-भ्रमन् (पुं०) ।

(ख) आत्मनेपदी

युध् (युद्ध करना)

		लट्	
प्र० पु०	युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते
म० "	युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे

उ० पु०	युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे
प्र० पु०	योत्स्यते	लोट् योत्स्येते	योत्स्यन्ते
म० "	योत्स्यसे	योत्स्येथे	योत्स्यध्वे
उ० "	योत्स्ये	योत्स्यावहे	योत्स्यामहे

प्र० पु०	युध्यताम्	लोट् युध्येताम्	युध्यन्ताम्
म० "	युध्यस्व	युध्येथाम्	युध्यध्वम्
उ० "	युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै

प्र० पु०	अयुध्यत	लङ् अयुध्येताम्	अयुध्यन्त
म० "	अयुध्यथाः	अयुध्येथाम्	अयुध्यध्वम्
उ० "	अयुध्ये	अयुध्यावहि	अयुध्यामहि

प्र० पु०	युध्येत	विधिलिङ् युध्येयाताम्	युध्येरन्
म० पु०	युध्येथाः	युध्येयाथाम्	युध्येध्वम्
उ० "	युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि

भाववाच्य—लट्—युध्यते, लोट्—योत्स्यते, लोट्—युध्यताम्
लङ्—अयुध्यत ।

प्रेरणार्थक—योध्यति ।

कृदन्त—क्त—युद्धम् (नपुं०), क्वतु—युद्धवान् (पुं०), क्त्वा—
युद्ध्वा, तुम्—योद्धम्, त्व्यत्—योद्धव्यः (पुं०), अनीय—योधनीयः
(पुं०), शानच्—युध्यमानः (पुं०) ।

जन् (उत्पन्न होना)

प्र० पु०	जायते	लट् जायेते	जायन्ते
म० "	जायसे	जायेथे	जायध्वे

उ० पु०	जाये	जायावहे	जायामहे
प्र० पु०	जनिष्यते	लोट् जनिष्येते	जनिष्यन्ते
म० "	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उ० "	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे
प्र० पु०	जायताम्	लोट् जायेताम्	जायन्ताम्
म० "	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उ० "	जायै	जायावहै	जायामहै
प्र० पु०	अजायत	लोट् अजायेताम्	अजायन्त
म० "	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उ० "	अजाये	अजायावहि	अजायामहि
प्र० पु०	जायेत	विधिलिङ् जायेयाताम्	जायेरन्
म० "	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उ० "	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

भाववाच्य—लट्—जन्यते, जायते, लृट्—जनिष्यते, लोट्—जायताम्, लङ्—अजायत ।

प्रेरणार्थक—जनयति, जनयते ।

कृदन्त—क्त—जातः (पुं०), क्वतु—जातवान् (पुं०), क्त्वा—जनित्वा, तुमुन्—जनितुम्, तव्यत्—जनितव्यः (पुं०), अनीय—जननीयः (पुं०), शानच्—जायमानः (पुं०) ।

दिवादिगण धातु-कोष

परस्मैपदी

सिव—सीना—सीव्यति, सेविष्यति, सीव्यतु, असीव्यत्, सीव्येत् ।
क्षिप्—फेंकना—क्षिप्यति, क्षेप्स्यति, क्षिप्यतु, अक्षिप्यत्, क्षिप्येत् ।

पुष्—पालना—पुष्यति, पोक्ष्यति, पुष्यतु, अपुष्यत्, पुष्येत् ।
सिध्—सिद्ध करना—सिध्यति, सेत्स्यति, सिध्यतु, असिध्यत्, सिध्येत् ।

क्रुध्—क्रोध करना—क्रुध्यति, क्रोत्स्यति, क्रुध्यतु, अक्रुध्यत्, क्रुध्येत् ।

तृप्—तृप्त करना—तृप्यति, तर्पिष्यति, तृप्यतु, अतृप्यत्, तृप्येत् ।
द्रुह्—द्रोह करना—द्रुह्यति, द्रोहिष्यति-धोक्ष्यति, द्रुह्यतु, अद्रुह्यत्, द्रुह्येत् ।

कुप्—क्रोध करना—कुप्यति, कोपिष्यति, कुप्यतु, अकुप्यत्, कुप्येत् ।
व्यध्—मारना—विध्यति, व्यत्स्यति, विध्यतु, अविध्यत्, विध्येत् ।
शम्—शान्त होना—शाम्यति, शमिष्यति, शाम्यतु, अशाम्यत्, शाम्येत् ।

आत्मनेपदी

बुध्—जानना—बुध्यते, भोत्स्यते, बुध्यताम्, अबुध्यत, बुध्येत ।
मन्—मानना, समझना—मन्यते, मंस्यते, मन्यताम्, अमन्यत, मन्येत ।

विद्—होना—विद्यते, वेत्स्यते, विद्यताम्, अविद्यत, विद्येत ।

अभ्यास

अनुवाद करो—

आत्मा कभी पैदा नहीं होता और न इसका कभी नाश होता है । युधिष्ठिर ने जुआ खेला था, इसलिए वह बारह वर्ष वन में रहा । अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा कि मैं युद्ध नहीं करूँगा । श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया कि यदि तुम युद्ध न करोगे तो कौरव समझेंगे कि तुम डर कर युद्ध नहीं करते हो । जो ईश्वर से द्रोह करता है, नष्ट हो जाता है ।

स्वादिगण
(क) उभयपदी
सु (रस निकातना)

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति
म० "	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
उ० "	सुनोमि	सुनुवः, सुन्वः	सुनुमः, सुन्मः

लृट्

प्र० पु०	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति
म० "	सोष्यसि	सोष्यथः	शोष्यथ
उ० "	सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः

लोट्

प्र० पु०	सुनोतु, सुनुतात्	सुनुताम्	सुन्वन्तु
म० "	सुनु, सुनुतात्	सुनुतम्	सुनुत
उ० "	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम

लङ्

प्र० पु०	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन
म० "	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
उ० "	असुनवम्	असुनुव, असुन्व	असुनुम, असुन्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
म० "	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
उ० "	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
----------	--------	----------	---------

म० पु०	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
उ० "	सुन्वे	सुनुवहे, सुन्वहे	सुनुमहे, सुन्महे

लृट्

प्र० पु०	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
म० "	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
उ० "	सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
म० "	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
उ० "	सुनुवै	सुनवावहै	सुनवामहै

लङ्

प्र० पु०	असनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
म० "	असनुथाः	असुन्वाथाम्	असनुध्वम्
उ० "	असुन्वि	असनुवहि, असुन्वहि	असनुमहि, असुन्महि

विधिलिङ्

प्र० पु०	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
म० "	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
उ० "	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

भाववाच्य—लट्—सूयते, लृट्—सोष्यते, लोट्—सूयताम्, लङ्—असूयत ।

प्रेरणार्थक—सावयति ।

कृदन्त—क्त—सुतः (पुं०), क्वतु—सुतवान् (पुं०), क्त्वा—सुत्वा
तुम्—सोतुम्, तव्यत्—सोतव्यम्, अनीय—सवनीयम्, (पुं०),
यत्—सव्यः, शतृ—सुन्वन् (पुं०), शातृ—सुन्वानः (पुं०) ।

(ख) परस्मैपदी

आप् (प्राप्त करना)

लोट्

प्र० पु०	आप्रोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
म० "	आप्रोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
उ० "	आप्रोमि	आप्नुवः	आप्नुमः

लृट्

प्र० पु०	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
म० "	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
उ० "	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

लोट्

प्र० पु०	आप्रोतु-आप्नुतात्	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
म० "	आप्नुहि-आप्नुतात्	आप्नुतम्	आप्नुत
उ० "	आप्रवानि	आप्रवाव	आप्रवाम

लङ्

प्र० पु०	आप्रोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
म० "	आप्रोः	आप्नुतम्	आप्नुत
उ० "	आप्रवम्	आप्नुव	आप्नुम

विधिलिङ्

प्र० पु०	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
म० "	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उ० "	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

कर्मवाच्य—लट्—आप्यते, लृट्—आप्स्यते, लोट्—आप्यताम्, लङ्—आप्यत ।

प्रेरणार्थक—आपयति, आपयते ।

कृदन्त—क्त—आप्तः (पुं०), क्तवतु—आप्तवान् (पुं०), क्त्वा—आप्त्वा, तुमुन्—आप्नुम, तव्यत्—आप्तव्यः, अनीय—आपनीयः, शतृ—

आप्नुवन् (पुं०), शानच्—आप्नुवानः (पुं०), एयत्—आप्यः (पुं०) ।

उपसर्गों के योग में—

वि + आप्—व्याप्नोति = फैल जाता है ।

सम् + आप्—समाप्नोति = समाप्त करता है ।

शक् (समर्थ होना)

लट्

प्र० पु०	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
म० "	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उ० "	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

लृट्

प्र० पु०	शक्यति	शक्यतः	शक्यन्ति
म० "	शक्यसि	शक्यथः	शक्यथ
उ० "	शक्यामि	शक्यावः	शक्यामः

लोट्

प्र० पु०	शक्नोतु-शक्नुतात्	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
म० "	शक्नुहि-	शक्नुतम्	शक्नुत
उ० "	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

लङ्

प्र० पु०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
म० "	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उ० "	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

विधिलिङ्

प्र० पु०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
म० "	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उ० "	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

भाववाच्य—लट्—शक्यते, लृट्—शक्यते, लोट्—शक्यताम्, लङ्—अशक्यत ।

प्रेरणार्थक—शाकयति, शाकयते ।

कृदन्त—क्त—शक्तः, (पुँ०), क्तवतु—शक्तवान् (पुँ०), क्त्वा—
शक्त्वा, तुमुन्—शक्तुम्, तव्यत्—शक्तव्यः (पुँ०), अनीय—शकनीयः
(पुँ०), शतृ—शक्तुवन् (पुँ०), यत्—शक्यः (पुँ०) ।

स्वादिगण धातु-कोश

उभयपदी

चि—चुनना—चिनोति, चेष्टयति, चिनोतु, अचिनोत्, चिनुयात्;
चिनुते, चेष्टयते, चिनुताम्, अचिनुत, चिन्वीत ।

वृ—स्वीकार करना—वृणोति, वरिष्यति, वृणोतु, अवृणोत्,
वृणुयात्; वृणुते, वरिष्यते, वृणुताम्, अवृणुत, वृण्वीत ।

अभ्यास

अनुवाद करो—

क्या तू रामायण पढ़ सकता है ? वे सब घर पर जा सकते हैं । तुम दोनों
यहाँ ठहर सकते हो । मैं अंग्रेजी पढ़ सकता हूँ । मेरा छोटा भाई भी अंग्रेजी पढ़
सकता है । जो धर्माचरण करेगा वह सुख पा सकेगा । श्रवणकुमार माता-पिता
की सेवा करता था और अति सुख पाता था । जो पाप करता है वह दुःख ही
पाता है । मनुष्य सदा शुभ कार्य को करे तथा ससार में शाश्वत सुख को पाये ।

तुदादिगण

(क) परस्मैपदी

तुद्* (दुःख देना)

लट्

प्र० पु०	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
म० "	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उ० "	तुदामि	तुदावः	तुदामः

*तुद् धातु उभयपदी है, परन्तु हाई स्कूल परीक्षा के लिए इसके परस्मैपद
के रूप जानना काफी है ।

		लृट्	
प्र० पु०	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
म० "	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उ० "	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

		लोट्	
प्र० पु०	तुदतु, तुदतात्	तुदताम्	तुदन्तु
म० "	तुद. तुदतात्	तुदतम्	तुदत
उ० "	तुदानि	तुदाव	तुदाम

		लङ्	
प्र० पु०	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
म० "	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उ० "	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

		विधिलिङ्	
प्र० पु०	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
म० "	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उ० "	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम

कर्मवाच्य—लट्—तुद्यते, लृट्—तोत्स्यते, लोट्—तुद्यताम्, लङ्—अतुद्यत ।

प्रेरणार्थक—तोदयति, तोदयते ।

कृदन्त—क्त—तुन्नः (पुं०), क्तवतु—तुन्नवान् (पुं०), क्त्वा—तुच्वा, तुम्—तोत्तुम्, तव्यत्—तोत्तव्यः (पुं०), अनीय—तोदनीयः (पुं०), शट्—तुदन् (पुं०) ।

इष् (इच्छा करना)

		लट्	
म० पु०	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
उ० "	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उ० "	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

		लृट्	
प्र० पु०	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
म० "	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उ० "	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

		लोट्	
प्र० पु०	इच्छतु-इच्छतात्	इच्छताम्	इच्छन्तु
म० "	इच्छ-इच्छतात्	इच्छतम्	इच्छत
उ० "	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

		लङ्	
प्र० पु०	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
म० "	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उ० "	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

		विधिलिङ्	
प्र० पु०	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
म० "	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उ० "	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

कर्मवाच्य—लट्—इष्यते, लृट्—एषिष्यते, लोट्—इष्यताम्, लङ्—ऐष्यत ।

प्रेरणार्थक—एषयति, एषयते ।

कृदन्त—क्त—इष्टः (पुं०), क्तवतु—इष्टवान् (पुं०), क्त्वा—इष्ट्वा-
एषित्वा, तुमुन्—एष्टुम्-एषितुम्, तव्यत्—इष्टव्यः (पुं०), अनोय—
एषणीयः (पुं०), शतृ—इच्छन् (पुं०) ।

स्पृश् (छ्ना)

		लट्	
प्र० पु०	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति
म० "	स्पृशसि	स्पृशथः	स्पृशथ
उ० "	स्पृशामि	स्पृशावः	स्पृशामः

लृट्

प्र० पु०	स्पर्द्यति	स्पर्द्यतः	स्पर्द्यन्ति
म० "	स्पर्द्यसि	स्पर्द्यथः	स्पर्द्यथ
उ० "	स्पर्द्यामि	स्पर्द्यावः	स्पर्द्यामः

लोट्

प्र० पु०	स्पृशतु-स्पृशतात्	स्पृशताम्	स्पृशन्तु
म० "	स्पृश-स्पृशतात्	स्पृशतम्	स्पृशत
उ० "	स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम

लङ्

प्र० पु०	अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्
म० "	अस्पृशः	अस्पृशतम्	अस्पृशत
उ० "	अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयुः
म० "	स्पृशेः	स्पृशेतम्	स्पृशेत
उ० "	स्पृशेयम्	स्पृशेव	स्पृशेम

कर्मवाच्य—लट्—स्पृश्यते, लृट्—स्पर्द्यते, लोट्—स्पृश्यताम्
लङ्—अस्पृश्यत ।

प्रेरणार्थक—स्पर्शयति ।

कृदन्त—क्त—स्पृष्टः (पुं०), क्तवतु—स्पृष्टवान् (पुं०), क्त्वा—
स्पृष्ट्वा, तुमुन्—स्पृष्टुम्, तव्यत्—स्पृष्टव्यः (पुं०), अनीय—स्पर्शनीयः
(पुं०), शतृ—स्पृशान् (पुं०), क्यप्—स्पृश्यः (पुं०) ।

उपसर्ग के योग में—

उप + स्पृश् = उपस्पृशति = स्नान करता है, आचमन करता है ।

प्रच्छ् (पूछना)

लट्

प्र० पु०	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
म० "	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उ० "	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लृट्

प्र० पु०	प्रक्षयति	प्रक्षयतः	प्रक्षयन्ति
म० "	प्रक्षयसि	प्रक्षयथः	प्रक्षयथ
उ० "	प्रक्षयामि	प्रक्षयावः	प्रक्षयामः

लोट्

प्र० पु०	पृच्छतु-पृच्छतात्	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
म० "	पृच्छ-पृच्छतात्	पृच्छतम्	पृच्छत
उ० "	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

लङ्

प्र० पु०	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
म० "	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उ० "	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
म० "	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उ० "	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

कर्मवाच्य—लट्—पृच्छयते, लृट्—प्रक्षयते, लोट्—पृच्छयताम्, लङ्—अपृच्छयत ।

प्रेरणार्थक—प्रच्छयति, प्रच्छयते ।

कृदन्त—क्त—पृष्टः (पृँ०), क्तवतु—पृष्टवान् (पृँ०), क्त्वा—पृष्ट्वा, तुमुन्—पृष्टुम्, तव्यत्—पृष्टव्यः (पृँ०), अनीय—प्रच्छनीयः (पृँ०), शतृ—पृच्छन् (पृँ०) ।

(ख) आत्मनेपदी
मृ (भरना)

		लट्	
प्र० पु०	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
म० "	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
उ० "	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे
		लृट्	
प्र० पु०	मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति
म० "	मरिष्यसि	मरिष्यथः	मरिष्यथ
उ० "	मरिष्यामि	मरिष्यावः	मरिष्यामः
		लोट्	
प्र० पु०	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
म० "	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
उ० "	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै
		लङ्	
प्र० पु०	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
म० "	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
उ० "	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
म० "	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
उ० "	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि

भाववाच्य—लट्—म्रियते लृट्—मरिष्यते, लोट्—म्रियताम्
लङ्—अम्रियत ।

प्रेरणार्थक—मारयति ।

कृदन्त—क्त—मृतः (पुँ०), क्तवतु—मृतवान् (पुँ०), क्त्वा—
मृत्वा, तुमुन्—मर्तुम्, तव्यत्—मर्तव्यः (पुँ०), अनीय—मरणीयः
(पुँ०), शानच्—म्रियमाणः (पुँ०) ।

(ग) उभयपदी
मुच् (मुञ्च्) (षोडना)

परस्मैपद
लट्

प्र० पु०	मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति
म० "	मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ
उ० "	मुञ्चामि	मुञ्चावः	मुञ्चावः

लट्

प्र० पु०	मोक्षयति	मोक्षयतः	मोक्षयन्ति
म० "	मोक्षयसि	मोक्षयथः	मोक्षयथ
उ० "	मोक्षयामि	मोक्षयावः	मोक्षयामः

लोट्

प्र० पु०	मुञ्चतु-मुञ्चतात्	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु
म० "	मुञ्च-मुञ्चतात्	मुञ्चतम्	मुञ्चत
उ० पु०	मुञ्चानि	मुञ्चाव	मुञ्चाम

लङ्

प्र० पु०	अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्
म० "	अमुञ्चः	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत
उ० "	अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयुः
म० "	मुञ्चेः	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत
उ० "	मुञ्चैयम्	मुञ्चैव	मुञ्चैम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	मुञ्चते	मुञ्चेते	मुञ्चन्ते
म० "	मुञ्चसे	मुञ्चथे	मुञ्चध्वे

उ० पु०	मुञ्चे	मुञ्चावहे	मुञ्चामहे
		लृट्	
प्र० पु०	मोक्ष्यते	मोक्ष्येते	मोक्ष्यन्ते
म० "	मोक्ष्यसे	मोक्ष्येथे	मोक्ष्यध्वे
उ० "	मोक्ष्ये	मोक्ष्यावहे	मोक्ष्यामहे
		लोट्	
प्र० पु०	मुञ्चताम्	मुञ्चेताम्	मुञ्चन्ताम्
म० "	मुञ्चस्व	मुञ्चेथाम्	मुञ्चध्वम्
उ० "	मुञ्चै	मुञ्चावहै	मुञ्चामहै
		लङ्	
प्र० पु०	अमुञ्चत	अमुञ्चेताम्	अमुञ्चन्त
म० "	अमुञ्चथाः	अमुञ्चेथाम्	अमुञ्चध्वम्
उ० "	अमुञ्चे	अमुञ्चावहि	अमुञ्चामहि
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	मुञ्चेत	मुञ्चेयाताम्	मुञ्चेरन्
म० "	मुञ्चेथाः	मुञ्चेयाथाम्	मुञ्चेध्वम्
उ० "	मुञ्चेय	मुञ्चेवहि	मुञ्चेमहि

कर्मवाच्य—लट्—मुच्यते, लृट्—मोक्ष्यते, लोट्—मुच्यताम्, लङ्—अमुच्यत ।

प्रेरणार्थक—मोचयति, मोचयते ।

कृदन्त—क्त—मुक्तः (पुं०), क्तवतु—मुक्तवान् (पुं०), क्त्वा—मुक्त्वा, तुम्—मोक्तुम्, तव्यत्—मोक्तव्यः (पुं०), अनीय—मोचनीयः (पुं०), शतृ—मुञ्चन् (पुं०), शानच्—मुञ्चमानः (पुं०) ।

तुदादिगण धातुकोश

परस्मैपदी

लिख्—लिखना—लिखति, लेखिष्यति, लिखतु, अलिखत्, लिखेत् ।

सृज्—छोड़ना, बनाना—सृजति, स्रक्षति, सृजतु, असृजत्, सृजेत् ।

प्र + विश्—प्रवेश करना—प्रविशति, प्रवेक्षति, प्रविशतु, प्राविशन्, प्रविशेत् ।

आत्मनेपदी

लज्ज्—लज्जा करना—लज्जते, लज्जिष्यते, लज्जताम्, अलज्जत, लज्जेत ।

उभयपदी

विद् (विन्द्)—गाना—विन्दति, वेदिष्यति-वेत्स्यति, विन्दतु-विन्दतात्, अविन्दत्, विन्देत्; विन्दते, वेदिष्यते-वेत्स्यते, विन्दताम्, अविन्दत, विन्देत ।

अभ्यास

अनुवाद करो—

१. राम की चिन्ता सीता को दुःख देती थी । पतिव्रता पत्नी को सदा अपने पति का स्मरण करना ही पीड़ित करता है । मनुष्य चाहता कुछ है और होता कुछ है । कौन जानता था कि रावण सीता को हर ले जायगा । जो ईश्वर चाहता है वही संसार में होता है । श्रीराम हरिण के पीछे जाना न चाहते थे, परन्तु वे गये और उन्होंने उसका भयंकर परिणाम भी देखा । विधाता बलवान् है, वह जो चाहेगा वही होगा । देवदत्त अपने पिता को पत्र लिखता है ।

२. ब्राह्मण हरिजनों को नहीं छूते । यदि वे छू जायें तो कपड़ों सहित स्नान करते हैं । संसार में सब मनुष्य ईश्वर के पुत्र हैं । सब बराबर हैं । ब्राह्मण विद्यावृद्ध होते हैं, अतः माननीय तथा आदरयोग्य हैं । किसी अंग से वृणा करना उचित नहीं । यदि हरिजन स्वच्छ हो, मांस न खाता हो, अपने धर्म का पालन करता हो, उससे यदि कोई छू जाय तो कोई पाप नहीं ।

३. गुरु से प्रश्न पूछो । यदि शिष्य प्रश्न न पूछे तो बुद्धिमान नहीं हो सकता । जो संकोच को न छोड़ेगा वह विद्या को न पायेगा । संसार में बहुत से मनुष्य पैदा होते हैं और मर जाते हैं; जिसका यश है वह कभी नहीं मरता ।

रुधादिगण
उभयपदी
रुध् (रोकना)

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति
म० "	रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध
उ० "	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः

लृट्

प्र० पु०	रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति
म० "	रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ
उ० "	रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः

लोट्

प्र० पु०	रुणद्धु, रुन्धात्	रुन्धाम्	रुन्धन्तु
म० "	रुन्धि, रुन्धात्	रुन्धाम्	रुन्ध
उ० "	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम

लङ्

प्र० पु०	अरुणत्-द्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्
म० "	अरुणः, अरुणत्-द्	अरुन्धम्	अरुन्ध
उ० "	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः
म० "	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
उ० "	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते
----------	--------	----------	---------

म० पु०	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे
उ० "	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्धमहे
		लट्	
प्र० पु०	रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते
म० "	रोत्स्यसे	रोत्स्येथे	रोत्स्यध्वे
उ० "	रोत्स्ये	रोत्स्यावहे	रोत्स्यामहे
		लोट्	
प्र० पु०	रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
म० "	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्
उ० "	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै
		लङ्	
प्र० पु०	अरुन्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
म० "	अरुन्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्
उ० "	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्धमहि
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
म० पु०	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
उ० "	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि

कर्मवाच्य—लट्—रुध्यते, लट्—रोत्स्यते, लोट्—रुध्यताम्,
लङ्—अरुध्यत ।

प्रेरणार्थक—रोधयति ।

कृदन्त—क्त—रुद्धः (पुं०), क्तवतु—रुद्धवान् (पुं०), क्त्वा—
रुद्ध्वा, तुमुन्—रोद्धुम्, तव्यत्—रोद्धव्यः (पुं०), अनीय—रोधनीयः
(पुं०), शतृ—रुन्धन् (पुं०), शानच्—रुन्धानः (पुं०) ।

उपसर्गों के योग में—

वि + रुध्—विरुणद्धि = विरोध करता है ।

अनु + रुध्—अनुरुणद्धि = अनुरोध करता है ।

भुज् (पालना, खाना या भोगना)

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	भुनक्ति	भुङ्क्तः	भुञ्जन्ति
म० "	भुनक्ति	भुङ्क्थः	भुङ्क्थ
उ० "	भुनज्मि	भुञ्ज्वः	भुञ्जमः

लृट्

प्र० पु०	भोक्ष्यति	भोक्ष्यतः	भोक्ष्यन्ति
म० "	भोक्ष्यसि	भोक्ष्यथः	भोक्ष्यथ
उ० "	भोक्ष्यामि	भोक्ष्यावः	भोक्ष्यामः

लोट्

प्र० पु०	भुनक्तु, भुङ्क्तात्	भुङ्क्ताम्	भुञ्जन्तु
म० "	भुङ्ग्धि, भुङ्क्तात्	भुङ्क्तम्	भुङ्क्त
उ० "	भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम

लङ्

प्र० पु०	अभुनक्न्ग	अभुङ्क्ताम्	अभुञ्जन्
म० "	अभुनक्न्ग	अभुङ्क्तम्	अभुङ्क्त
उ० "	अभुनजम्	अभुञ्ज्व	अभुञ्जम

विधिलिङ्

प्र० पु०	भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः
म० "	भुञ्ज्याः	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात
उ० "	भुञ्ज्याः	भुञ्ज्याव	भुञ्ज्याम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
म० "	भुङ्क्ते	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे
उ० "	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्जमहे

लृट्

प्र० पु०	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते
म० "	भोक्ष्यसे	भोक्ष्यथे	भोक्ष्यध्वे
उ० "	भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	भुङ्क्ताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्
म० "	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्ग्ध्वम्
उ० "	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै

लङ्

प्र० पु०	अभुङ्क्त	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत
म० "	अभुङ्क्थाः	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्ग्ध्वम्
उ० "	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि

विधिलिङ्

प्र० पु०	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्
म० "	भुञ्जीथाः	भुञ्जीयाथाम्	भुञ्जीध्वम्
उ० "	भुञ्जीय	भुञ्जावहि	भुञ्जीमहि

कर्मवाच्य—लट्—भुज्यते, लृट्—भोक्ष्यते, लोट्—भुज्यताम्, लङ्—अभुज्यत ।

प्रेरणार्थक—भोजयते ।

कृदन्त—क्तः—भुक्तः (पुं०), क्तवतु—भुक्तवान् (पुं०), क्त्वा—भुक्त्वा, तुमुन्—भोक्तुम्, तव्यत्—भोक्तव्यः (पुं०), अनीय—भोजनीयः (पुं०), शत्—भुञ्जन् (पुं०), शानच्—भुञ्जानः (पुं०) ।

नोट—ध्यान रहे कि भुज् धातु का परस्मैपद में प्रयोग “पालन करना” अर्थ में ही होता है । खाने आदि अर्थ में आत्मनेपद का प्रयोग होता है ।

रुधादिगण धातु-कोश

उभयपदी

युज्—मिलना-जोड़ना—युनक्ति, योक्ष्यति, युनक्तु - युङ्क्तात्,
अयुनक्न्, युञ्ज्यात्; युङ्क्ते, योक्ष्यते, युङ्क्ताम्, अयुङ्क्त, युञ्जोत ।

अभ्यास

अनुवाद करो—

१. जो अपनी इन्द्रियो को रोकता है, वह शाश्वत सुख को पाता है । जो इन्द्रियो को नहीं रोकेगा वह विषयो मे लित हो कर निर्बल एवं शक्तिहीन हो जाएगा । अतः पुरुष अपने मन को विषयो से रोके । प्राचीन समय में मुनि लोग अपने चित्त को रोकते थे और लंबी आयु प्राप्त करते थे । आज हम इन्द्रियो के वश मे हैं, उन्हे नहीं रोकते, अतः जल्दी मृत्यु के मुख में गिर जाते हैं ।

२. शेर शिकार को स्वयं मारता है और तब उसे खाता है । क्षत्रिय वीर भी पृथ्वी को स्वयं जीतता है तब उसका भोग करता है । वीर जातियो ही इस वसुन्धरा का भोग करती हैं ।

तनादिगण

उभयपदी

तन् (विस्तार करना)

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
म० "	तनोषि	तनुथ	तनुथ
उ० "	तनोमि	तनुवः, तन्वः	तनुमः, तन्मः

लृट्

प्र० पु०	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति
म० "	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ
उ० "	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	तनोतु, तनुतात्	तनुताम्	तन्वन्तु
म० "	तनु, तनुतात्	तनुतम्	तनुत
उ० "	तनवानि	तनवाव	तनवाम

लङ्

प्र० पु०	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
म० "	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
उ० "	अतनवम्	अतनुव, अतन्व	अतनुम, अतन्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
म० "	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
उ० "	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	तनुते	तन्वाते	तन्वते
म० "	तनुपे	तन्वाथे	तनुध्वे
उ० "	तन्वे	तनुवहे, तन्वहे	तनुमहे, तन्महे

लृट्

प्र० पु०	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
म० "	तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे
उ० "	तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
म० "	तनुध्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
उ० "	तनवै	तनवावहै	तनवामहै

लङ्

प्र० पु०	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
----------	-------	------------	--------

म० पु०	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
उ० "	अतन्वि	अतनुवहि, अतन्वहि	अतनुमहि, अतन्महि
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
म० "	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
उ० "	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

कर्मवाच्य—लट्—तन्यते-तायते, लृट्—तनिष्यते, लोट्—
तन्यताम-तायताम्, लङ्—अतन्यत-अतायत ।

प्रेरणार्थक—तानयति, तानयते ।

कृदन्त—क्त—नतः (पुं०), क्तवतु—ततवान्, (पुं०), क्त्वा—
तत्वा-तनित्वा, तुमुन्—तनितुम्, तव्यन्—तनितव्यः (पुं०), अनीय—
तननीयः (पुं०), शतृ—तन्वन् (पुं०), शानच्—तन्वानः (पुं०) ।

कृ (करना)

परस्मैपद

		लट्	
प्र० पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म० "	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ० "	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

		लृट्	
प्र० पु०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
म० "	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उ० "	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

		लोट्	
प्र० पु०	करोतु, कुरुतात्	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म० "	कुरु, कुरुतात्	कुरुतम्	कुरुत
उ० "	करवाणि	करवाव	करवाम

		लङ्	
प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म० "	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ० "	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
म० "	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उ० "	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम
		आत्मनेपद	
		लट्	
प्र० पु०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
म० "	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उ० "	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे
		लृट्	
प्र० पु०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
म० "	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे ।
उ० "	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे
		लोट्	
प्र० पु०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
म० "	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उ० "	करवै	करवावहै	करवामहै
		लङ्	
प्र० पु०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
म० "	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उ० "	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि
		विधिलिङ्	
प्र० पु०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्

म० पु०	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उ० "	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि
	कर्मवाच्य—लट्—क्रियते,	लृट्—ररिष्यते,	लोट्—क्रियताम्,
	लङ्—अक्रियत ।		

प्रेरणार्थक—कारयति, कारयते ।

कृदन्त—कृ—कृतः (पुं०), क्तवतु—कृतवान् (पुं०), क्त्वा—
कृत्वा, तुमुन्—कर्तुम्, तव्यत्—कर्तव्यः (पुं०), अनीय—करणीयः
(पुं०), शतृ—कुर्वन् (पुं०), शतच्—कुर्वाणः (पुं०), एयत्—कार्यः
(पुं०), क्यप्—कृत्यः (पुं०) ।

उपसर्गों के योग में—

उप + कृ—उपकरोति = उपकार करता है ।

अप + कृ—अपकरोति = अपकार करता है ।

अप + आ + कृ—अपाकरोति = दूर करता है, हटाता है ।

अनु + कृ—अनुकरोति = नकल करता है ।

अलम् + कृ—अलङ्करोति = सुशोभित करता है ।

आविस + कृ—आविष्करोति = आविष्कार करता है ।

स्वी + कृ—स्वीकरोति = स्वीकार करता है ।

नोट—अलम्, आविस और स्वी यद्यपि उपसर्ग नहीं हैं, तथापि इनके योग में भी 'कृ' धातु का अर्थ बदल जाता है—इसलिए और व्यवहार में अधिक आवश्यक होने से इनके योग का भी यहाँ उल्लेख किया गया है ।

अभ्यास

अनुवाद करो—

दुष्ट लोग संसार में अपना मायाजाल फैलाते हैं और साधु पुरुषों को दुःख देते हैं । रावण ने अपने मायाजाल को फैलाया और सती सीता को चुरा लिया ।

जो जैसा करता है, वैसा फल पाता है । हे मनुष्य ! तू शुभ कर्म कर; जो

शुभ कर्म करेगा वही इस लोक में तथा परलोक में सुख पायगा । जब पापी मरता है, वह रोता है, और कहता है कि “हाय, मैंने शुभ कर्म क्यों न किये ।” क्या कल्लू ? कहाँ जाऊँ ? कौन वेदों का उद्धार करेगा ?

क्रयादिगण

(क) उभयपदी

क्री (खरीदना)

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
म० ”	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उ० ”	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

लृट्

प्र० पु०	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
म० ”	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उ० ”	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

लोट्

प्र० पु०	क्रीणातु, क्रीणीतात्	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
म० ”	क्रीणीहि, क्रीणीतात्	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उ० ”	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

लङ्

प्र० पु०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
म० ”	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उ० ”	अक्रीणम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

विधिलिङ्

प्र० पु०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
म० ”	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उ० ”	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
म० "	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उ० "	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लृट्

प्र० पु०	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
म० "	क्रेष्यसे	क्रेष्यथे	क्रेष्यध्वे
उ० "	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
म० "	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० "	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

लङ्

प्र० पु०	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
म० "	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उ० "	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
म० "	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० "	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

भाववाच्य—लट्—क्रीयते, लृट्—क्रेष्यते, लोट्—क्रीयताम्, लङ्—अक्रीयत ।

प्रेरणार्थक—क्रापयति, क्रापयते ।

कृदन्त—क्त—क्रीतः (पुं०), क्तवतु—क्रीतवान्, (पुं०), क्त्वा—क्रीत्वा, तुमुन्—क्रेतुम्, तव्यत्—क्रेतव्यः (पुं०), अनीय—क्रीणीयः (पुं०), यत्—क्रीयः (पुं०), शतृ—क्रीणन् (पुं०), शानच्—क्रीणानः (पुं०) ।

उपसर्ग के योग में :—

वि + क्री—विक्रीणीते = बेचता है ।

नोट—ध्यान रहे 'वि' उपसर्ग के योग में आत्मनेपद ही रहता है ।

ग्रह् (लेना)

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म० "	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ० "	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णोमः

लृट्

प्र० पु०	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
म० "	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
उ० "	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः

लोट्

प्र० पु०	गृह्णातु, गृह्णीतात्	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
म० "	गृहाण, गृह्णीतात्	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उ० "	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

लङ्

प्र० पु०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
म० "	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ० "	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

विधिलिङ्

प्र० पु०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
म० "	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उ० "	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	गृहीते	गृह्णाते	गृह्णते
म० "	गृहीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
उ० "	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे

लृट्

प्र० पु०	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते
म० "	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे
उ० "	ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	गृहीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्
म० "	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ० "	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै

लङ्

प्र० पु०	अगृहीत	अगृहीताम्	अगृह्णत
म० "	अगृहीथाः	अगृहीथाम्	अगृह्णीध्वम्
उ० "	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	गृहीत	गृहीयाताम्	गृहीरन्
म० "	गृहीथाः	गृहीयाथाम्	गृहीध्वम्
उ० "	गृहीय	गृहीवहि	गृहीमहि

कर्मवाच्य—लट्—गृह्यते, लृट्—ग्रहीष्यते, लोट्—गृह्यताम्, लङ्—अगृह्यत ।

प्रेरणार्थक—ग्राह्यति, ग्राह्यते ।

कृदन्त—क्त—गृहीतः (पुं०), क्तवतु—गृहीतवान् (पुं०), क्त्वा—गृहीत्वा, तुमुन्—ग्रहीतुम्, तव्यत्—ग्रहीतव्यः (पुं०), अनीय—ग्रहणीयः (पुं०), शतृ—गृह्णन् (पुं०), शानच्—गृह्णानः (पुं०) ।

उपसर्गों के योग में—

अनु + ग्रह् — अनुगृह्णाति = कृपा करता है ।

वि + ग्रह् — विगृह्णाति = भगड़ा करता है ।

सं + ग्रह् — संगृह्णाति = इकट्ठा करता है ।

ज्ञा (जानना)

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	जानाति	जानीतः	जानन्ति
म० ”	जानासि	जानीथः	जानीथ
उ० ”	जानामि	जानीवः	जानीमः

लृट्

प्र० पु०	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
म० ”	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उ० ”	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

लोट्

प्र० पु०	जानातु-जानीतात्	जानीताम्	जानन्तु
म० ”	जानीहि-जानीतात्	जानीतम्	जानीत
उ० ”	जानानि	जानाव	जानाम

लङ्

प्र० पु०	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
म० ”	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उ० ”	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
म० ”	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात
उ० ”	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	जानीते	जानाते	जानते
म० "	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
उ० "	जाने	जानीवहे	जानीमहे

लृट्

प्र० पु०	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
म० "	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे
उ० "	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे

लोट्

प्र० पु०	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
म० "	जानीध्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
उ० "	जानै	जानावहै	जानामहै

लङ्

प्र० पु०	अजानीत	अजानाताम्	अजानत
म० "	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
उ० "	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्
म० "	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
उ० "	जानीय	जानीवहि	जानीमहि

कर्मवाच्य—लट्—ज्ञायते,

लृट्—ज्ञास्यते,

लोट्—ज्ञायताम्

लङ्—अज्ञायत ।

प्रेरणार्थक—ज्ञापयति, ज्ञापयते ।

कृदन्त—क्त—ज्ञातः (पुं०), क्तवतु—ज्ञातवान् (पुं०), क्त्वा—
ज्ञात्वा, तुमुन्—ज्ञातुम्, तव्यत्—ज्ञातव्यः (पुं०), अनीय—ज्ञानीयः (पुं०),
शतृ—जानन् (पुं०), शानच्—जानानः (पुं०), यत्—ज्ञेयः (पुं०) ।

उपसर्गों के योग में—

अव + ज्ञा—अवजानाति = निरादर करता है ।

अनु + ज्ञा—अनुजानाति = आज्ञा देता है ।

प्रति + ज्ञा—प्रतिजानाति = प्रतिज्ञा करता है ।

क्रयादिगण धातु-कोश

परस्मैपदी

मुष्—चुराना—मुष्णाति, मोषिष्यति, मुष्णातु - मुष्णीतान्,
अमुष्णान्, मुष्णीयात् ।

चुरादिगण

उभयपदी

चुर् (चुराना)

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
म० ”	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उ० ”	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लृट्

प्र० पु०	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
म० ”	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उ० ”	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	चोरयतु-चोरयतात्	चोरयताम्	चोरयन्तु
म० ”	चोरय-चोरयतात्	चोरयतम्	चोरयत
उ० ”	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

लङ्

प्र० पु०	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
----------	---------	-----------	---------

म० पु० प्र० "	अचोरयः अचोरयम्	अचोरयतम् अचोरयाव	अचोरयत अचोरयाम
		विधिलिङ्	
प्र० पु० म० " उ० "	चोरयेत् चोरयेः चोरयेयम्	चोरयेताम् चोरयेतम् चोरयेव	चोरयेयुः चोरयेत चोरयेम
		आत्मनेपद	
		लट्	
प्र० पु० म० " उ० "	चोरयते चोरयसे चोरये	चोरयेते चोरयेथे चोरयावहे	चोरयन्ते चोरयध्वे चोरयामहे
		लृट्	
प्र० पु० म० " उ० "	चोरयिष्यते चोरयिष्यसे चोरयिष्ये	चोरयिष्येते चोरयिष्येथे चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यन्ते चोरयिष्यध्वे चोरयिष्यामहे
		लोट्	
प्र० पु० म० " उ० "	चोरयताम् चोरयस्व चोरयै	चोरयेताम् चोरयेथाम् चोरयावहै	चोरयन्ताम् चोरयध्वम् चोरयामहै
		लङ्	
प्र० पु० म० " उ० "	अचोरयत अचोरयथाः अचोरये	अचोरयेताम् अचोरयेथाम् अचोरयावहि	अचोरयन्त अचोरयध्वम् अचोरयामहि
		विधिलिङ्	
प्र० पु० म० " उ० "	चोरयेत चोरयेथाः चोरयेय	चोरयेयाताम् चोरयेयाथाम् चोरयेवहि	चोरयेरन् चोरयेध्वम् चोरयेमहि

कर्मवाच्य—लट्—चोर्यते, लृट्—चोरयिष्यते, लोट्—चोर्यताम्
लङ्—अचोर्यत ।

प्रेरणार्थक—चोरयति, चोरयते ।

कृदन्त—क्त—चोरितः (पुं०), क्तवतु—चोरितवान् (पुं०),
क्त्वा—चोरयित्वा, तुमुन्—चोरयितुम्, तव्यत्—चोरयितव्यः (पुं०),
अनीय—चोरणीयः (पुं०), शतृ—चोरयन् (पुं०) शानच्—
चोरयमाणः (पुं०) ।

नोट—चुरादिगण के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप में कोई अन्तर नहीं आता ।

चिन्त् (सोचना, विचार करना)

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	चिन्तयति	चिन्तयतः	चिन्तयन्ति
म० "	चिन्तयसि	चिन्तयथः	चिन्तयथ
उ० "	चिन्तयामि	चिन्तयावः	चिन्तयामः

लृट्

प्र० पु०	चिन्तयिष्यति	चिन्तयिष्यतः	चिन्तयिष्यन्ति
म० "	चिन्तयिष्यसि	चिन्तयिष्यथः	चिन्तयिष्यथ
उ० "	चिन्तयिष्यामि	चिन्तयिष्यावः	चिन्तयिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	चिन्तयतु, चिन्तयतात्	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु
म० "	चिन्तय, चिन्तयतात्	चिन्तयतम्	चिन्तयत
उ० "	चिन्तयानि	चिन्तयाव	चिन्तयाम

लङ्

प्र० पु०	अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्
म० "	अचिन्तयः	अचिन्तयतम्	अचिन्तयत
उ० "	अचिन्तयम्	अचिन्तयाव	अचिन्तयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	चिन्तयेत्	चिन्तयेताम्	चिन्तयेयुः
म० ”	चिन्तयेः	चिन्तयेतम्	चिन्तयेत
उ० ”	चिन्तयेयम्	चिन्तयेव	चिन्तयेम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	चिन्तयते	चिन्तयेते	चिन्तयन्ते
म० ”	चिन्तयसे	चिन्तयेथे	चिन्तयध्वे
उ० ”	चिन्तयं	चिन्तयावहे	चिन्तयामहे

लृट्

प्र० पु०	चिन्तयिष्यते	चिन्तयिष्येते	चिन्तयिष्यन्ते
म० ”	चिन्तयिष्यसे	चिन्तयिष्येथे	चिन्तयिष्यध्वे
उ० ”	चिन्तयिष्ये	चिन्तयिष्यावहे	चिन्तयिष्यामहे

लोट्

प्र० पु०	चिन्तयताम्	चिन्तयेताम्	चिन्तयन्ताम्
म० ”	चिन्तयस्व	चिन्तयेथाम्	चिन्तयध्वम्
उ० ”	चिन्तयै	चिन्तयावहै	चिन्तयामहै

लङ्

प्र० पु०	अचिन्तयत	अचिन्तयेताम्	अचिन्तयन्त
प्र० ”	अचिन्तयथाः	अचिन्तयेथाम्	अचिन्तयध्वम्
उ० ”	अचिन्तये	अचिन्तयावहि	अचिन्तयामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	चिन्तयेत्	चिन्तयेयाताम्	चिन्तयेरन्
म० ”	चिन्तयेथाः	चिन्तयेयाथाम्	चिन्तयेध्वम्
उ० ”	चिन्तयेय	चिन्तयेवहि	चिन्तयेमहि

कर्मवाच्य—लट्—चिन्तयते, लृट्—चिन्तयिष्यते, लोट्—
चिन्तयताम्, लङ्—अचिन्तयत ।

. प्रेरणार्थक—चिन्तयति, चिन्तयते ।

कृदन्त—क्त—चिन्तितः (पुं०), क्तवतु—चिन्तितवान् (पुं०),
क्त्वा—चिन्तयित्वा, तुमुन्—चिन्तयितुम्, तव्यत्—चिन्तयितव्यः
(पुं०), अनीय—चिन्तनीयः (पुं०), शतृ—चिन्तयन् (पुं०),
शानच्—चिन्तयमानः (पुं०) ।

कथ् (कहना)

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
म० "	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उ० "	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लृट्

प्र० पु०	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
म० "	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उ० "	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	कथयतु, कथयतात्	कथयताम्	कथयन्तु
म० "	कथय, कथयतात्	कथयतम्	कथयत
उ० "	कथयानि	कथयाव	कथयाम

लङ्

प्र० पु०	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
म० "	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
उ० "	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः
म० "	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उ० "	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

आत्मनेपद

		लट्	
प्र० पु०	कथयते	कथयेते	कथयन्ते
म० "	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे
उ० "	कथये	कथयावहे	कथयामहे

		लृट्	
प्र० पु०	कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते
म० "	कथयिष्यसे	कथयिष्येथे	कथयिष्यध्वे
उ० "	कथयिष्ये	कथायिष्यावहे	कथयिष्यामहे

		लोट्	
प्र० पु०	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्
म० "	कथयस्व	कथयेथाम्	कथयध्वम्
उ० "	कथयै	कथयावहै	कथयामहै

		लङ्	
प्र० पु०	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त
म० "	अकथयथाः	अकथयेथाम्	अकथयध्वम्
उ० "	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन्
म० "	कथयेथाः	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्
उ० "	कथयेय	कथयेवहि	कथयेमहि

कर्मवाच्य—लट्—कथ्यते, लृट्—कथयिष्यते, लोट्—कथयताम्, लङ्—अकथयत ।

प्रेरणार्थक—कथयति, कथयते ।

कृदन्त—क्त—कथितः (पुं०), क्तवतु—कथितवान् (पुं०), अनीय—कथनीयः (पुं०), शतृ—कथयन् (पुं०), शानच्—कथयमानः (पुं०) ।

भक्ष् (खाना)

परस्मैपद

लट्

प्र० पु०	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
म० "	भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ
उ० "	भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः

लृट्

प्र० पु०	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यन्ति
म० "	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यथ
उ० "	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्यावः	भक्षयिष्यामः

लोट्

प्र० पु०	भक्षयतु, भक्षयतात्	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
म० "	भक्षय, भक्षयतात्	भक्षयतम्	भक्षयत
उ० "	भक्षयाणि	भक्षयाव	भक्षयाम

लङ्

प्र० पु०	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
म० "	अभक्षयः	अभक्षयतम्	अभक्षयत
उ० "	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः
म० "	भक्षयेः	भक्षयेतम्	भक्षयेत
उ० "	भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम

आत्मनेपद

लट्

प्र० पु०	भक्षयते	भक्षयेते	भक्षयन्ते
म० "	भक्षयसे	भक्षयेथे	भक्षयध्वे
उ० "	भक्षये	भक्षयावहे	भक्षयामहे

		लृट्	
प्र० पु०	भक्षयिष्यते	भक्षयिष्येते	भक्षयिष्यन्ते
म० ”	भक्षयिष्यसे	भक्षयिष्यथे	भक्षयिष्यध्वे
उ० ”	भक्षयिष्ये	भक्षयिष्यावहे	भक्षयिष्यामहे

		लोट्	
प्र० पु०	भक्षयताम्	भक्षयेताम्	भक्षयन्ताम्
म० ”	भक्षयस्व	भक्षयथाम्	भक्षयध्वम्
उ० ”	भक्षये	भक्षयावहै	भक्षयामहै

		लङ्	
प्र० पु०	अभक्षयत	अभक्षयेताम्	अभक्षयन्त
म० ”	अभक्षयथाः	अभक्षयथाम्	अभक्षयध्वम्
उ० ”	अभक्षये	अभक्षयावहि	अभक्षयामहि

		विधिलिङ्	
प्र० पु०	भक्षयेत	भक्षयेयाताम्	भक्षयेरन्
म० ”	भक्षयेथाः	भक्षयेयाथाम्	भक्षयेध्वम्
उ० ”	भक्षयेय	भक्षयेवहि	भक्षयेमहि

कर्मवाच्य—लट्—भक्षयते, लृट्—भक्षयिष्यते, लोट्—भक्षयताम्,
लङ्—अभक्षयत ।

प्रेरणार्थक—भक्षयति, भक्षयते ।

कृदन्त—क्त—भक्षितः (पुं०), क्तवतु—भक्षितवान्, (पुं०), क्त्वा—
भक्षयित्वा, तुमुन्—भक्षयितुम्, तव्यत्—भक्षयितव्यः (पुं०), अनीय—
भक्षणीयः (पुं०), शत्—भक्षयन्, (पुं०), शानच्—भक्षयमाणः (पुं०) ।

चुरादिगण धातु-कोश

उभयपदी

क्षल्—धोना—क्षालयति, क्षालयिष्यति, क्षालयतु, अक्षालयत्,
क्षालयेत् ; क्षालयते, क्षालयिष्यते, क्षालयताम्, अक्षालयत, क्षालयेत ।

तड्—मारना—ताडयति, ताडयिष्यति, ताडयतु, ताडयताम्, अताडयत्, ताडयेत् ।
 तड्येत् ; ताडयते, ताडयिष्यते, ताडयताम्, अताडयत, ताडयेत ।

तुल्—तोलना—तोलयति, तोलयिष्यति, तोलयतु, अतोलयत्, तोलयेत् ; तोलयेत् ; तोलयते, तोलयिष्यते, तोलयताम्, अतोलयत, तोलयेत ।

पाल्—पालना—पालयति, पालयिष्यति, पालयतु, अपालयत्, पालयेत् ; पालयते, पालयिष्यते, पालयताम्, अपालयत, पालयेत ।

पूज्—पूजा करना—पूजयति, पूजयिष्यति, पूजयतु, अपूजयत्, पूजयेत् ; पूजयते, पूजयिष्यते, पूजयताम्, अपूजयत, पूजयेत ।

गण्—गिनती करना—गणयति, गणयिष्यति, गणयतु, अगणयत्, गणयेत् ; गणयते, गणयिष्यते, गणयताम्, अगणयत, गणयेत ।

सूच्—सूचना देना—सूचयति, सूचयिष्यति, सूचयतु, असूचयत्, सूचयेत् ; सूचयते, सूचयिष्यते, सूचयताम्, असूचयत, सूचयेत ।

रच्—बनाना—रचयति, रचयिष्यति, रचयतु, अरचयत्, रचयेत् ; रचयते, रचयिष्यते, रचयताम्, अरचयत, रचयेत ।

सूचना—चुरादिगण की धातुएँ प्रायः उभयपदी हैं ।

अभ्यास

अनुवाद करो—

१. बाजार में जाओ और पुस्तक खरीदो । सदा नई पुस्तक खरीदो । मैं कभी पुरानी पुस्तक नहीं खरीदता । पिछले साल मैंने एक पुस्तक खरीदी थी, वह मेरे पास है । मैं पुस्तक कभी बेचता नहीं हूँ । जो पुरानी पुस्तक खरीदता है, वह उसका पूरा लाभ नहीं उठाता । यदि तुम्हारे पास धन है तो सदा नवीन पुस्तक खरीदो और पढ़ो ।

२. तू शपथ ले कि मैं कभी झूठ न बोलूँगा, चोरी न करूँगा, नित्य ईश्वर को स्मरण करूँगा तथा धर्माचरण करूँगा । जो यह जानता है वह पाप नहीं कर सकता । जब तू यह जानेगा कि ईश्वर तेरे हृदय में भी बसता है तेरा अन्धकार दूर हो जायगा । दुःख को तू सुख जान, क्योंकि दुःख में मनुष्य ईश्वर को याद तो करता है । भक्त ध्रुव ने माता के अपमान को सुख जाना, उस

से वह ईश्वर का प्यारा बन सका । भगवान् भक्त के हृदय को चुरा लेते हैं । जो दूसरों का धन चुराता है, कभी सुख नहीं पाता । यदि तू फिर चोरी करेगा तो दण्ड पायगा । सदा दूसरों के अच्छे गुणों की चोरी करो । रावण ने सीता को चुराया और उसके कुल का सर्वनाश हो गया । कोई भी पुरुष पराये धन की कदापि चोरी न करे ।

२. अशोकवाटिका में सीता राम का चिन्तन करती रही । सती स्त्रियाँ पति के बिना किसी अन्य पुरुष का चिन्तन नहीं करतीं । जो पुरुष प्रातः प्रभु का चिन्तन करेगा वह संसार के दुःखों को शान्ति से पार करेगा । ऐ मेरे मन ! तू भी शान्ति प्राप्त कर । भक्त प्रह्लाद ने प्रभु का चिन्तन किया, भगवान् ने उसे दर्शन दिये । इसलिए मनुष्य उसी एक आश्रय का चिन्तन करे तथा दुःख सहन के लिए बल प्राप्त करे ।

मोटे टाइप में छपे धातु-रूपों का पद-परिचय (Parsing) देते हुए निम्न लिखित श्लोको का अर्थ करो :—

(क) पिवन्ति नद्यः स्वयमेव नोदकं

स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः ।

नाऽदन्ति शस्यं खलु वारिवाहाः

परोपकाराय सतां विभूतयः ॥

(ख) यः पठति, लिखति, पश्यति, परिपृच्छति परिडितानुपाश्रयति ।

तस्य दिवाकरकिरणैः नलिनीदलमिव विकस्यते बुद्धिः ॥

(ग) ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति ।

भुङ्क्ते भोजयते चैव, षड्विधं प्रीतिलक्षणम् ॥

(घ) कामान् दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मीं

कीर्तिं सूते दुष्कृतं या हिनस्ति ।

तां चाप्येतां मातरं मङ्गलानां

धेनुं धीराः मूर्खतां वाचमाहुः ॥

(ङ) दृष्टिपूतं क्षिपेत् पादं, वस्त्रपूतं जलं पिबेत्

मन्त्रपूतं वदेत् वाचं मनःपूतं समाचरेत् ॥

- (च) क्याऽऽसं क्व च गमिष्यामि, कश्चाहं किमिहागतः ।
 को ब्रन्धुर्मम कस्याहमित्यात्मानं विचिन्तय ॥
- (छ) कि करोमि क्व गच्छामि, को वेदानुद्धरिष्यति ।
 मा विभोहि वरारोहे, भट्टाचार्योऽस्मि भूतले ॥
- (ज) काव्यं करोतु परिजल्पतु संस्कृतानि
 सर्वाः कलाः समधिगच्छतु याच्यमानः ।
 लोकस्थितिं यदि न वेत्ति यथावदित्थं
 सर्वस्य मूर्खनिकरस्य स चक्रवर्ती ॥
- (झ) पापात् निवारयति योजयते हिताय,
 गुह्यानि गूहति; गुणान् प्रकटीकरोति ।
 आपद्गतं च न जहाति, ददाति काले,
 सन्मित्र-लक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः ॥
- (ञ) मुञ्च मुञ्च सलिलं दयानिधे, नास्ति नास्ति समयो विलम्बने ।
 अयं चातककुले मृते पुनः, वारि वारिधर ! किं करिष्यसि ॥

पञ्चदश अध्याय

प्रेरणार्थक क्रियाएँ—णिजन्त (Causal Forms)

प्रेरणार्थक रूप—जब किसी की प्रेरणा से कोई क्रिया हो तो उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं ।

संस्कृत व्याकरण में प्रेरणार्थक क्रियाओं को णिजन्त कहा जाता है क्योंकि इनमें धातु के आगे 'णिच्' प्रत्यय लगता है। णिच् के ण् और च का लोप हो जाता है तथा 'इ' को अय हो जाता है। प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के कुछ साधारण नियम नीचे दिये जाते हैं ।

१. चुरादिगण की तरह धातुओं के पीछे णिच् विकरण का प्रयोग होता है, जिसको अय् हो जाता है ।

२. जिन धातुओं के अन्त में स्वर हो उनके अन्तिम स्वर को अय् परे होने पर वृद्धि हो जाती है। जैसे—श्रु + अय् + ति = श्रौ + अय् + ति = श्रावयति (सुनाता है); इसी प्रकार कारयति (करवाता है)।

३. आकारान्त धातुओं के बाद अय् से पूर्व प्रायः 'प' लग जाता है। स्नापयति (नहलाता है); स्थापयति (रखवाता है)। 'पा' धातु इसका अपवाद है। पा (पीना) का प्रेरणार्थक बनेगा पाययति और पा (पालना) का प्रेरणार्थक होगा पालयति।

४. हलन्त (व्यंजनान्त) धातुओं के अन्त्य हल (व्यंजन) से पहले यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ या ऋ हों तो उन्हें क्रम से ए, ओ और अर् हो जाता है, जैसे—क्षिप्—क्षेपयति (फेंकवाता है), पुप्—पोपयति (पालन करवाता है), दृश्—दर्शयति (दिखाता है)।

५. हलन्त धातुओं के अन्त्य हल् से पहले यदि 'अ' हो तो उसे दीर्घ हो जाता है। जैसे—पच—पाचयति (पकवाता है)।

कुछ मुख्य धातुओं के प्रेरणार्थक रूप नीचे दिये जाते हैं। इन्हें स्मरण कर लेना चाहिए। इनके लट् आदि लकारों में सब रूप चुरादिगण की धातुओं के समान बनाये जा सकते हैं। प्रेरणा अर्थ में भी चुरादिगण के समान धातुएँ उभयपदी होती हैं।

यदि क्रिया का फल कर्ता को मिले तो आत्मनेपद क्रिया का प्रयोग होता है अन्यथा परस्मैपद।

स्मृ—स्मारयति (याद कराता है)
मृ—मारयति (मरवाता है)
कृ—कारयति (करवाता है)
तृ—तारयति (तैराता है)
शी—शाययति (सुलाता है)
श्रु—श्रावयति (सुनाता है)
स्था—स्थापयति (टिकाता है)
दा—दापयति (दिलाता है)

रुद्—रोदयति (रुलाता है)
दुह्—दोहयति (दुहवाता है)
चुर—चोरयति (चुरवाता है)
भुज्—भोजयति (पालन करवाता है)
दृश्—दर्शयति (दिखाता है)
नृत्—नर्तयति (नचाता है)
स्पृश्—स्पर्शयति (छुवाता है)
पठ्—पाठयति (पढ़ाता है)

पा—पालयति (रक्षा करता है)	नश्—नाशयति (नष्ट करता है)
पा—पाययति (पिलाता है)	पत्—पातयति (गिराता है)
प्री—प्रीणयति (प्रसन्न करता है)	ग्रह—ग्राहयति (ग्रहण करवाता है)
भी—भीषयते, भापयति (डराता है)	स्वप्—स्वापयति (मुलाता है)
मुद्—मोदयति (प्रसन्न करता है)	तड्—ताडयति (मरवाता है)
मुच्—मोचयति (छुड़ाता है)	त्यज्—त्याजयति (छुड़ावाता है)
बुध्—बोधयति (बोध कराता है)	दह्—दाहयति (जलाता है)
हन्—घातयति (मरवाता है)	जन्—जनयति (पैदा करता है)
शिच्—शिक्षयति (पढ़ाता है)	शम्—शमयति (शांत करता है)
दण्ड्—दण्डयति (दण्ड दिलाता है)	गम्—गमयति (ले जाता है)
भच्—भक्षयति (खिलाता है)	इ—गमयति (ले जाता है)
प्रच्छ्—पृच्छयति (पुछवाता है)	अधि + इ—अध्यापयति (पढ़ाता है)

साधारण सकर्मक क्रियाओं का (प्रयोज्य) कर्ता णिजन्त में तृतीयान्त हो जाता है और प्रेरक कर्ता प्रथमा विभक्ति में आता है तथा कर्म पहले की तरह द्वितीया विभक्ति में ही रहता है। यथा—

देवदत्तः ओदनं पचति, पचन्तं देवदत्तं रामः प्रेरयति—इति रामो देवदत्तेन ओदनं पाचयति।

गति (जाना), बोधन (ज्ञान करना) और खाना अर्थ वाली तथा अकर्मक एवं जिनका कर्म 'शब्द' हो, उन धातुओं का प्रयोज्य कर्ता कर्म वन जाता है।

रामो गच्छति, तं कृष्णः प्रेरयति—इति कृष्णः रामं गमयति। रामः पठति, अध्यापकस्तं प्रेरयति—इति अध्यापकः रामं पाठयति।

अभ्यास

अनुवाद करो—

१. गुरु शिष्य को पढ़ाता है। माता पुत्र को विद्यालय में भेजती है। भगवान् कृष्ण अर्जुन को विराट् स्वरूप का दर्शन कराते हैं। माँ बच्चे को दूध पिलाती

है। मैं पुस्तक को भूमि पर रखता हूँ। कैकेयी ने दशरथ को अपने दो वर याद कराये। सीता ने मारीच को श्रीराम द्वारा मरवाया। अध्यापक पाठशाला में बालकों को पढ़ाता है। राजा भोज याचकों को धन दिलवाता था। ईश्वर हमारे दुःखों का नाश करता है। वही हमें सुख प्राप्त कराता है। लव-कुश ने श्रीराम को रामायण सुनाई।

युधिष्ठिर ने भीम द्वारा विराट् को बधन में लुडवाया। मद्राष नन्द ब्राह्मणों को भोजन खिलाता था। तृष्णा मनुष्य से पाप कराती है, वही चांग से चोरी कराती है, पिता से पुत्र को और पुत्र से पिता को लुडवाती है। वह असन्तोष से हृदय को जलाती है। तृष्णा मनुष्य को भवसागर से पार नहीं कराती।

२. मोटे टाइप में छपे प्रेरणापूर्ण क्रियाओं के मूल के धातु बतलाते हुए निम्न श्लोकों का अर्थ करो—

१. अस्य दग्धोदरस्थार्थे किन्न कुर्वन्ति परिडताः।

वानरीमिव वाग्देवीं, नर्तयन्ति गृहे गृहे ॥

२. शोको नाशयते धैर्यं, शोको नाशयते श्रुतम्।

शोको नाशयते सर्वं, नास्ति शोकसमो रिपुः ॥

३. अश्वारोहं यथा दुष्टो वाजी गते निपातयेत्।

एवं क्रोधोऽपि नरके नरमाशु निपातयेत् ॥

षोडश अध्याय

कृदन्त (Verbal Derivatives)

कृत् प्रत्यय—धातुओं के बाद जिन प्रत्ययों के लगने से नाम अथवा अव्यय बनते हैं वे कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। जिन शब्दों के अन्त में कृत् प्रत्यय हों वे कृदन्त कहलाते हैं।

मुख्य कृत् प्रत्यय निम्नलिखित हैं। उनके वास्तविक स्वरूप अर्थ तथा उदाहरण भी आगे लिखे जाते हैं—

प्रत्यय	स्वरूप	अर्थ	उदाहरण
१. शतृ	अत्, अन्	हुआ	पठन्
२. शानच्	मान, आन	"	सेवमान, कुर्वाण
३. क्त	त	था	पठित
४. क्तवतु	तवान्	"	पठितवान्
५. तव्यत्	तव्य	चाहिए	पठितव्य
६. अनीयर्	अनीय	"	पठनीय
७. यत्	य	"	नेय
८. तुमुन्	तुम	के लिए	पठितुम्
९. क्त्वा	त्वा	करके	पठित्वा

(१) शतृ, शानच् (वर्तमान कृदन्त)

इन दोनों प्रत्ययों का अर्थ 'हुआ' है। ये वर्तमान काल में प्रयुक्त होते हैं। परस्मैपदी धातुओं के साथ 'शतृ' का तथा आत्मनेपदी धातुओं के साथ 'शानच्' का प्रयोग होता है।

(क) शतृ प्रत्यय का वास्तविक स्वरूप अत् (अन्) है। लट् लकार के प्रथम-पुरुष बहुवचन रूप से 'ति' पृथक् कर देने से शत्रन्त पुल्लिङ्ग एकवचन रूप बन जाता है। यथा—भू (भवन्ति) भवन् । गम् (गच्छन्ति) गच्छन् । दृश् (पश्यन्ति) पश्यन् । हन् (व्रन्ति) व्रन् । कृ (कुर्वन्ति) कुर्वन् । आप् (आप्नुवन्ति) प्राप्नुवन् इत्यादि।

इसके रूप हलन्त शब्दों में वर्णित 'गच्छत्' की तरह होते हैं। ये विशेषण शब्दों की तरह प्रयुक्त होते हैं। यथा—

रामः उपवनं पश्यन् गृहं गच्छति ।

मनुष्यः कार्यं कुर्वन् प्रसीदति ।

(ख) शानच् प्रत्यय का वास्तविक स्वरूप 'मान' अथवा 'आन' है। भ्वादि, दिवादि, तुदादि, चुरादि गण की आत्मनेपदी धातुओं के

बाद 'मान' तथा इनसे भिन्न गणों की धातुओं के बाद 'आन' लगाया जाता है ।

उदाहरणार्थ—सेवमान, लभमान, मोदमान, विद्यमान, म्रियमाण एवं शयान, कुर्वाण, गृह्णान, भुञ्जान इत्यादि ।

(२) क्त, क्तवतु (भूतकाल कृदन्त)

इन दोनों प्रत्ययों का प्रयोग भूतकाल में होता है । इनका अर्थ है 'था' । क्त प्रत्यय प्रायः कर्मवाच्य में प्रयुक्त होता है और क्तवतु प्रत्यय कर्तृवाच्य में ।

क्त प्रत्यय का वास्तविक स्वरूप 'त' है और क्तवतु का 'तवत्' जिसका पुल्लिङ्ग में रूप 'तवान्' बनता है ।

'तेन पुस्तकं पठितम्' अथवा 'स पुस्तकं पठितवान्' इन वाक्यों में 'त' 'तवान्' का प्रयोग क्रमशः कर्मवाच्य एवं कर्तृवाच्य में किया गया है ।

इनके प्रयोग की चर्चा वाच्य प्रकरण में की जायगी ।

क्त तथा क्तवतु प्रत्ययों का प्रयोग विशेषण के रूप में भी होता है । उदाहरणार्थ—'पक्वं अन्नं भक्ष्य,' 'सुप्तं बालकं पश्य' इत्यादि में 'पक्व' तथा 'सुप्त' विशेषण शब्द हैं । इनके लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन, संज्ञा अथवा विशेष्य के अनुसार होते हैं । 'क्त' प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में राम शब्द की तरह, स्त्रीलिङ्ग में रमा शब्द की तरह और नपुंसकलिङ्ग में गृह शब्द की तरह होते हैं । 'क्तवतु' प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में धीमत् या बलवत् शब्द की तरह, स्त्रीलिङ्ग में 'पठितवती' आदि रूप बन कर 'नदी' शब्द की तरह, और नपुंसकलिङ्ग में 'दग्धवत्' आदि रूप बन कर 'जगत्' शब्द की तरह होते हैं । इनका प्रयोग भी विशेषण के रूप में हो सकता है । यथा—'पठितवन्तं बालकं गृहं नय'—पढ़ चुके हुए बालक को घर ले जा । 'दग्धवतः गृहात् चौरः पलायितः'—जल चुके हुए मकान से चोर भाग गया ।

(३) तव्यत्, अनीय, यत् (विधि कृदन्त)

इन प्रत्ययों का प्रयोग विधि अर्थ में होता है। ये कर्मवाच्य में प्रयुक्त होते हैं। उसे पढ़ना चाहिए—तेन पठितव्यम् अथवा पठनीयम्। तव्यत् तथा अनीय प्रत्यय तो सब धातुओं के साथ प्रयुक्त हो सकते हैं—यथा—कर्तव्य, करणीय, द्रष्टव्य, दर्शनीय, पातव्य, पानीय इत्यादि। परन्तु 'यत्' प्रत्यय 'चाहिण्' अर्थ में केवल स्वरान्त धातुओं के बाद प्रयुक्त होता है। यथा—पेयम्, गेयम्, देयम्, ध्येयम्, स्थेयम्, नेयम्, इत्यादि। ऋकारान्त धातुओं को वृद्धि भी हो जाती है। यथा—कृ—कार्यम्, धृ—धार्यम्, स्मृ—स्मार्यम्, इत्यादि। कुछ व्यञ्जनान्त धातुओं के बाद भी 'य' प्रत्यय का प्रयोग होता है। यथा—

गम्—गम्य, लभ्—लभ्य, रम्—रम्य, शक्—शक्य, सह—सह्य, जन्—जन्य, वह्—वाह्य, हन्—वध्य, शास्—शिष्य, दुह्—दोह्य, पच्—पाच्य, यज्—याज्य, रुच्—रोच्य, त्यज्—त्याज्य, भुज्—भोज्य तथा भोग्य इत्यादि।

तव्यत्, अनीय और य प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में राम शब्द के समान, स्त्रीलिङ्ग में रमा शब्द के समान और नपुंसकलिङ्ग में गृह् शब्द के समान होंगे।

(४) तुमुन्, क्त्वा (अव्यय कृदन्त)

तुमुन् तथा क्त्वा प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं। उनके रूपों में कभी कोई परिवर्तन नहीं होता। ये दोनों वाच्यों में प्रयुक्त हो सकते हैं।

❖ प्रत्यय यय स्वरान्त, पवर्गान्त, ह्रस्व अकारोपध (अर्थात् जिन के अन्त्य व्यञ्जन से पूर्व ह्रस्व अकार हो) और शक् तथा सह धातुओं के साथ लगता है। व्यञ्जनान्त और अकारान्त धातुओं के साथ 'एयत्' प्रत्यय लगता है। तथा शास्, जुप् आदि धातुओं के साथ 'क्यप्' प्रत्यय लगता है। इन सबका 'य' ही शेष वचता है। विद्यार्थियों के लिए प्रत्येक को अलग अलग जानना पेचीदा सा होता है, इसलिए यहाँ केवल 'य' ही लिखा गया है।

तुमुन् का वास्तविक रूप 'तुम्' है तथा 'क्त्वा' का 'त्वा' है। 'तुमुन्' का अर्थ 'के लिए' अथवा 'को' है और 'त्वा का 'कर' है। यथा— पठितुं = पढ़ने के लिए या पढ़ने को, पठित्वा = पढ़ कर। गन्तुं = जाने के लिए या जाने को; गत्वा = जा कर। द्रष्टुं = देखने के लिए या देखने को, दृष्ट्वा = देख कर। क्त्वा प्रत्यय वाक्य में प्रयुज्यमान अनेक क्रियाओं में से पहले होने वाली क्रिया में लगता है। इसीलिए क्त्वा प्रत्ययान्त क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहा जाता है।

धातु के साथ उपसर्ग का योग होने पर क्त्वा प्रत्ययान्त रूप बदल जाता है। उदाहरणार्थ—

धातु	क्त्वा	उपसर्ग के योग में क्त्वा
भू = होना	भूत्वा	अनुभूय पराभूय,
नम् = झुकना	नत्वा	प्रणम्य
गम् = जाना	गत्वा	आगत्य, उपगत्य
जि = जीतना	जित्वा	विजित्य, पराजित्य
वृध = बढ़ना	वर्धित्वा	संवर्ध्य
ईक्ष् = देखना	ईक्षित्वा	समीक्ष्य
नी = ले जाना	नीत्वा	आनीय
हन् = मारना	हत्वा	निहत्य
इ = जाना	इत्वा	उपेत्य
नश् = नष्ट होना	नष्ट्वा, नशित्वा	प्रणश्य
आप् = पाना	आप्त्वा	समाप्य
प्रच्छ् = पूछना	पृष्ट्वा	आपृच्छ्य
मुच् = छोड़ना	मुक्त्वा	विमुच्य
कृ = करना	कृत्वा	अपकृत्य, पुरस्कृत्य
क्री = खरीदना	क्रीत्वा	विक्रीय

संक्षेप

कृदन्त प्रत्ययों का व्यवहार संस्कृत अनुवाद में अत्यन्त आवश्यक है। यह स्मरण रखना चाहिए कि शत, शानच् और क्तवतु का प्रयोग प्रायः कर्तृवाच्य में तथा तव्यत्, अनीय और क्त का प्रयोग कर्मवाच्य में होता है। 'तेन पुस्तकं पठितं' या 'पठितव्यम्' के स्थान पर 'स पुस्तकं पठित' या 'पठितव्यम्' अशुद्ध होगा। कर्मवाच्य में कर्ता तृतीया में तथा कर्म प्रथमा में होता है।

अनुवाद में प्रायः प्रयुक्त होने वाली धातुओं के कृदन्त रूप संक्षेप में सामने एकत्र किये जाते हैं :—

अभ्यास

१. मोटे टाइप में छपे कृदन्तों की व्याख्या करते हुए निम्नलिखित श्लोकों के अर्थ करो—

(क) आपदि येनापकृतं येन च हसितं दशासु विप्रमासु च ।

अपकृत्य तयोरुभयोः पुनरपि जातं नर मन्ये ॥

(ख) गच्छन् न खादामि हसन् न जल्पे, गतं न शोचामि कृतं न मन्ये ।

द्वाभ्यां तृतीयो न भवामि राजन्, कि कारणं भोज भवामि मूर्खः ॥

(ग) इत्थं स सेनाधिपति प्रबोध्य, हस्ताङ्गुलौ व्याघ्रनखं निबध्य ।

वामे करे सूक्ष्मतरां च शस्त्रीं, निधाय देवीं प्रणमन् प्रयातः ॥

(घ) तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धून्वस्थितान् ।

कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् ॥

(ङ) एतान्न हन्तुमिच्छामि व्रतोऽपि मधुसूदन ।

(च) स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयातां निषेदुषीमासनबन्धधीरः ।

जलाभिलाषी जलमाददानां ह्यायेव तां भूपतिरन्वगच्छत् ॥

(छ) विचिन्तयन्तो यमनन्यमानसा तपोनिधिं वेत्ति न मामुपस्थितं ।

स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव ॥

धातु	शब्द अन्त	हुआ शानच् मान्, आनि	क्त त	था	चाहिण् तव्यत् तव्य	अनीयर् अनीय	लिण्, को तुमुन् तुम्	करके क्त्वा त्वा
१. भू	भवत्		भूत्	भूतवत्	भवितव्य	भवनीय	भविष्युम्	भूत्वा
२. हस्	हसत्		हसित	हसितवत्	हसितव्य	हसनीय	हसिष्युम्	हसित्वा
३. पठ्	पठत्		पठित	पठितवत्	पठितव्य	पठनीय	पठिष्युम्	पठित्वा
४. रच्	रचत्		रचित	रचितवत्	रचितव्य	रक्षणीय	रचिष्युम्	रचित्वा
५. वद्	वदत्		उदित	उदितवत्	उदितव्य	वदनीय	वदिष्युम्	उदित्वा
६. पच्	पचत्		पक्	पक्वत्	पक्वतव्य	पचनीय	पक्विष्युम्	पक्त्वा
७. तम्	नमत्	पचमान	नत	नतवत्	नन्तव्य	नमनीय	नन्तिष्युम्	नत्वा
८. गम्	गच्छत्		गत	गतवत्	गन्तव्य	गमनीय	गन्तिष्युम्	गत्वा
९. दृश्	पश्यत्		दृष्ट	दृष्टवत्	द्रष्टव्य	दर्शनीय	द्रष्टुम्	दृष्ट्वा
१०. सद्	सीदत्		सन्न	सन्नवत्	सत्तव्य	सदनीय	सत्तिष्युम्	सत्त्वा
११. स्था	तिष्ठन्		स्थित	स्थितवत्	स्थातव्य	स्थानीय	स्थातुम्	स्थित्वा
१२. स्मृ	स्मरत्		स्मृत	स्मृतवत्	स्मर्तव्य	स्मरणीय	स्मर्तुम्	स्मृत्वा
१३. पा	पिबत्		पीत	पीतवत्	पातव्य	पानीय	पातुम्	पीत्वा
१४. जि	जयत्		जित	जितवत्	जेतव्य	जयनीय	जेतुम्	जित्वा
१५. श्रु	शृण्वत्		श्रुत	श्रुतवत्	श्रोतव्य	श्रवणीय	श्रोतुम्	श्रुत्वा

धातु	शतृ अन्	हुआ शानच् मान, आन	क्त त	था क्तवतु तवत्	चाहिण तव्यन् तव्य	लिण, कौ तुमुन् तुम्	करके कत्वा त्वा
१६. सेव्		सेवमान	सेवित	सेवितवन्	सेवितव्य	सेवितुम्	सेवित्वा
१७. लभ्		लभमान	लब्ध	लब्धवन्	लब्धव्य	लब्धुम्	लब्ध्वा
१८. वृत्		वर्तमान	वृत्त	वृत्तवन्	वर्त्तितव्य	वर्त्तितुम्	वर्त्तित्वा
१९. वृथ		वर्धमान	वृद्ध	वृद्धवन्	वर्धितव्य	वर्धितुम्	वर्धित्वा
२०. सह्		सहमान	सोढ	सोढवन्	सोढव्य, महितव्य	सोढुम्, महितुम्	सोढ्वा, सहित्वा
२१. ईक्ष्		ईक्षमाण	ईक्षित	ईक्षितवन्	ईक्षितव्य	ईक्षितुम्	ईक्षित्वा
२२. याच्	याचत्	याचमान	याचित	याचितवन्	याचितव्य	याचितुम्	याचित्वा
२३. नी	नयत्	नीयमान	नीत	नीतवन्	नेतव्य	नेतुम्	नीत्वा
२४. ह	हरत्	हरमाण	हृत	हृतवन्	हर्त्तव्य	हर्त्तुम्	हृत्वा
२५. ऋद्	अदन्		जग्ध	जग्धवन्	अत्तव्य	अत्तुम्	जग्ध्वा
२६. अस्	सन्		भूत	भूतवन्	भवितव्य	भवितुम्	भूत्वा
२७. स्तु	स्तुवत्	स्तुवान	स्तुत	स्तुतवन्	स्नोतव्य	स्नोतुम्	स्तुत्वा
२८. व्र	व्रवत्	व्रवाण	उक्त	उक्तवन्	वक्तव्य	वक्तुम्	उक्त्वा
२९. रुद्	रुदन्		रुदित	रुदितवन्	रोदितव्य	रोदितुम्	रुदित्वा

३०. दुह्	दुहन्	दुहान	दुग्ध	दुग्धवन	दोषधव्य	दोहनीय	दोग्धुम्	दुग्ध्वा
३१. जागृ	जाग्रन्	जागर्त	जागरित	जागरितवन	जागरितव्य	जागरणीय	जागरितुम्	जागरित्वा
३२. स्वप्	स्वपन्	स्वप	सुप्त	सुप्तवन	स्वप्नव्य	स्वपनीय	स्वप्नुम्	स्वप्त्वा
३३. हन्	व्रतन्	हत्	हृत	हृतवन	हन्तव्य	हन्नीय	हन्तुम्	हत्वा
३४. विद्	विदन्	विदित	विदित	विदितवन	वेदितव्य	वेदनीय	वेदितुम्	विदित्वा
३५. शास्	शासन्	शिष्ट	शिष्ट	शिष्टवन	शासितव्य	शासनीय	शासितुम्	शासित्वा
३६. इ	यन्	इत्	इत्	इत्वन	एतव्य	अयनीय	एतुम्	इत्वा
३७. आस		आसीन	आसित	आसितवन	आसितव्य	आसनीय	आसितुम्	आसित्वा
३८. शी		शयान	शयित	शयितवन	शयितव्य	शयनीय	शयितुम्	शयित्वा
३९. अधि + इ		अधीयान	अधीत	अधीतवन	अध्येतव्य	अध्ययनीय	अध्येतुम्	अधीत्य
४०. हु	जुह्वन्		हुत	हुतवन	हो + व्य	हवनीय	होतुम्	हुत्वा
४१. भी	विभ्यत्		भीत	भीतवन	भेतव्य	भयनीय	भेतुम्	भीत्वा
४२. दा	ददत्	ददान	दत्त	दत्तवन	दानव्य	दानीय	दातुम्	दत्त्वा
४३. भृ	विभ्रत्	विभ्राण	भृत	भृतवन	भर्त्तव्य	भरणीय	भर्त्तुम्	भृत्वा
४४. दिव्	दीव्यन्		द्युत (न)	देवितवन	देवितव्य	देवनीय	देवितुम्	देवित्वा
४५. नृत्	नृत्यन्		नृत्त	नृत्तवन	नर्त्तव्य	नर्त्तनीय	नर्त्तितुम्	नर्त्तित्वा
४६. व्यध्	विध्यन्		विद्ध	विद्धवन	वेद्धव्य	वेधनीय	वेधितुम्	वेधित्वा
४७. नश	नश्यत्		नष्ट	नष्टवन	नशितव्य	नशनीय	नष्टुम्	नष्ट्वा
					नष्टव्य		नशितुम्	नशित्वा

धातु	शृङ्गा अत्	हुआ शानच् मान्, आन	क्त त	था क्तवत् तवत्	चाहिण तव्यत् तव्य	लिण, को तुमुन् तुम्	करके कत्वा त्वा
४८. शम्	शाम्यत्		शमित्, शान्त	शमितवत्	शमितव्य	शमितुम्	शमित्वा, शान्त्वा
४९. भ्रम्	भ्राम्यत्, भ्रमत्		भ्रमित्, भ्रान्त	भ्रमितवत्	भ्रमितव्य	भ्रमितुम्	भ्रमित्वा, भ्रान्त्वा
५०. विद्		विद्यमान	वित्	वित्तवत्	वेत्तव्य	वेत्तुम्	वित्त्वा
५१. युष्		युध्यमान	युद्ध	युद्धवत्	योद्धव्य	योद्धुम्	युद्ध्वा
५२. जन्		जायमान	जात	जातवत्	जनितव्य	जनितुम्	जनित्वा
५३. सु	सुन्वत्	सुन्वान	सुत	सुतवत्	सोतव्य	सोतुम्	सुत्वा
५४. आप्	आप्नुवत्	आप्नुवान	आप्त	आप्नुवत्	आप्तव्य	आप्नुम्	आप्त्वा
५५. शक्	शक्नुवत्		शक्त	शक्नुवत्	शक्तव्य	शक्तुम्	शक्त्वा
५६. तुद्	तुदत्		तुन्न	तुन्नवत्	तोत्तव्य	तोत्तुम्	तुत्वा
५७. इष्	इच्छत्		इष्ट	इष्टवत्	एष्टव्य	एषितुम्, एष्टुम्	एषित्वा, इष्ट्वा
५८. स्पृश्	स्पृशत्		स्पृष्ट	स्पृष्टवत्	स्पृष्टव्य, स्पृष्टव्य	स्पृष्टुम् स्पृष्टुम्	स्पृष्ट्वा

५६. प्रच्छत्	प्रियमाण	पृष्ट	पृष्टवत्	प्रपठ्य	पृच्छनीय	प्रपठुम्	पृष्ट्वा
६०. मृ		मृत	मृतवत्	मत्तव्य	मरणाय	मर्त्तुम्	मृत्वा
६१. विद्		वित्त	वित्तवत्	वेत्तव्य	वेदनीय	वेत्तुम्, वेदितुम्	वित्त्वा
६२. मुच	मुञ्चमान	मुक्त	मुक्तवत्	मोक्तव्य	मोचनीय	मोक्तुम्	मुक्त्वा
६३. रुथ्	रुन्धान	रुद्ध	रुद्धवत्	रोद्धव्य	रोधनीय	रोद्धुम्	रुद्ध्वा
६४. मुज्	मुञ्जान	मुक्त	मुक्तवत्	भोक्तव्य	भोजनीय	भोक्तुम्	मुक्त्वा
६५. युज्	युञ्जान	युक्त	युक्तवत्	योक्तव्य	योजनीय	योक्तुम्	युक्त्वा
६६. तन्	तन्वान	तत	ततवत्	तनितव्य	तननीय	तनितुम्	तनित्वा
६७. कृ	कुर्वाण	कृत	कृतवत्	कर्त्तव्य	करणीय	कर्त्तुम्	कृत्वा
६८. क्री	क्रीणान	क्रीत	क्रीतवत्	क्रेतव्य	क्रयणीय	क्रेतुम्	क्रीत्वा
६९. ग्रह्	गृह्णान	गृहीत	गृहीतवत्	ग्रहीतव्य	ग्रहणीय	ग्रहीतुम्	गृहीत्वा
७०. ज्ञा	जानान	ज्ञात	ज्ञातवत्	ज्ञातव्य	ज्ञानीय	ज्ञातुम्	ज्ञात्वा
७१. मुष्	मुष्णान	मुषित	मुषितवत्	मोषितव्य	मोषणीय	मोषितुम्	मोषित्वा,
							मुषित्वा
७२. चुर	चोरयमाण	चोरित	चोरितवत्	चोरयितव्य	चोरणीय	चोरयितुम्	चोरयित्वा
७३. चिन्त्	चिन्तयमान	चिन्तित	चिन्तितवत्	चिन्तयितव्य	चिन्तनीय	चिन्तयितुम्	चिन्तयित्वा
७४. कथ्	कथयमान	कथित	कथितवत्	कथयितव्य	कथनीय	कथयितुम्	कथयित्वा
७५. भक्ष्	भक्षयमाण	भक्षित	भक्षितवत्	भक्षयितव्य	भक्षणीय	भक्षयितुम्	भक्षयित्वा

२. अनुवाद करो—

(क) शत्रु, शानच्—

शत्रु—राम पढ़ता हुआ घर जाता है। शिष्य नमस्कार करता हुआ गुरु के समीप जाता है। मोहन घर जाता हुआ गिर पड़ा था। मैं बाग को देखता हुआ विद्यालय को जाऊँगा। हम देहली ठहरते हुए आगरा को जाएँगे। पानी पीता हुआ पथिक मार्ग पर जाता था।

राजा प्रजाओं को धन देता हुआ शोभा पाता है। नाचता हुआ मोर किसके हृदय को नहीं हरता। युद्ध करते हुए वीर लोग स्वर्ग को प्राप्त होते हैं। मार्ग पूछता हुआ मैं यहाँ आया हूँ। अस्पृश्य को छूता हुआ ब्राह्मण पतित नहीं हो जाता। अपना काम धर्मपूर्वक करता हुआ पुरुष आदर पाता है। सीता का चिन्तन करता हुआ राम लंका को गया।

शानच्—माता-पिता की सेवा करता हुआ श्रवणकुमार स्वर्ग को प्राप्त हुआ। मनुष्यो, तुम घर में खुश होते हुए रहो। दुःखों को सहन करता हुआ पुरुष योगी होता है।

(ख) तुमुन्, क्त्वा—

तुमुन्—मैं पढ़ने के लिए विद्यालय जाता हूँ। वे दोनों बोलने के लिए उद्यत हैं। रसोइया भोजन पकाने के लिए घर गया। मैं आचार्य को नमस्कार करने के लिए प्रातःकाल जाता हूँ। मैं उत्सव को देखने के लिए हरद्वार गया था। पाठ याद करने के लिए तुम दोनों बाग में जाओ। क्या मैं पानी पीने के लिए जाऊँ? श्रवणकुमार सेवा करने के लिए माता पिता को तीर्थों पर ले गया। मैं तुम्हें घर ले जाने के लिए ही आया हूँ।

क्त्वा—श्रीराम हरिण को मार कर आश्रम में आये। धन पा कर कौन पुरुष अभिमानी नहीं हो जाता। तुम दोनों मित्र से कुशल पूछ कर यहीं आ जाओ। कर्मों का भोग करके मनुष्य मरता है और कर्मों के भोग के लिए मनुष्य फिर पैदा होता है। मनुष्य कर्म करता हुआ सौ वर्ष जीने की इच्छा करे। पुस्तक को खरीद कर उसे पढ़ो, घर में रख मत दो। पराये धन को चुरा कर कोई सुख से नहीं रहता।

सप्तदश अध्याय

वाच्य (Voices)

संस्कृत में तीन वाच्य हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य ।

कर्तृवाच्य—इसमें कर्ता प्रथमा विभक्ति में, कर्म द्वितीया में तथा क्रिया प्रायः लकारों में होती है । क्रिया के पुरुष और वचन कर्ता के अनुसार होते हैं । उदाहरणार्थ—

रामः अश्वं पश्यति = राम घोड़े को देखता है ।

सीता अश्वं पश्यति = सीता घोड़े को देखती है ।

रामः बालकान् पश्यति = राम लड़कों को देखता है ।

बालकौ गृहं गच्छतः = दो लड़के घर को जाते हैं ।

बालिकाः गृहं गच्छन्ति = बहुत सी लड़कियाँ घर को जाती हैं ।

अहं गृहं गच्छामि = मैं घर जाता हूँ ।

यूयं गृहं गच्छथ = तुम सब घर को जाते हो ।

ऊपर दिये उदाहरणों से स्पष्ट है कि कर्ता के पुरुष और वचन के अनुसार क्रिया के पुरुष और वचन होते हैं । कर्ता के लिंग का या कर्म के पुरुष वचन या लिंग का क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं होता ।

जब क्रिया लकारों में न हो कर क्तवतु प्रत्ययान्त होगी तो वह कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार होगी, कर्ता के पुरुष का प्रभाव तब क्रिया पर न होगा । यथा—

सः पुस्तकं पठितवान् । सा पुस्तकं पठितवती । तौ पुस्तकं पठितवन्तौ ।

ते पुस्तकं पठितवत्यौ । अहं पुस्तकं पठितवान् । वयं पुस्तकं पठितवन्तः ।

कर्मवाच्य—इसमें कर्ता तृतीया विभक्ति में, कर्म प्रथमा में तथा क्रिया कर्म के पुरुष और वचन के अनुसार होती है ।

कर्मवाच्य में क्रिया के आत्मनेपदी रूप बन जाते हैं और बीच में 'य' विकरण का प्रयोग होता है । उदाहरणार्थ—

रामेण अश्वः दृश्यते (राम से घोड़ा देखा जाता है)

रामेण सीता दृश्यते (राम से सीता देखी जाती है)

सीतया त्वं दृश्यसे (सीता से तू देखा जाता है)

रामेण बालकाः दृश्यन्ते (राम से लड़के देखे जाते हैं)

बालकाभ्यां गृहं गम्यते (दो लड़कों से घर को जाया जाता है)

ऊपर के वाक्यों से स्पष्ट है कि कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के पुरुष और वचन के अनुसार बदलती है। कर्म के लिंग अथवा कर्ता के पुरुष, वचन और लिंग का क्रिया पर कुछ प्रभाव नहीं होता।

कर्मवाच्य में क्रियाओं के रूप दिवादिगण की आत्मनेपदी धातुओं की तरह होते हैं। यथा—पठ्यते, गम्यते, दृश्यते, पीयते, स्वीयते, क्रियते, नीयते। अन्य लकारों के रूप भी इसी तरह दिवादिगण की आत्मनेपदी धातुओं के समान बनाये जा सकते हैं।

लङ् लकार के स्थान पर कर्मवाच्य में 'क्त' प्रत्यय का भी प्रयोग किया जाता है। प्रायः संस्कृत अनुवाद में 'क्त' ही कर्मवाच्य में अधिक प्रयुक्त होता है। उदाहरणार्थ—'रामेण अश्वः अदृश्यत' के स्थान पर 'रामेण अश्वः दृष्टः' का अधिक प्रयोग होता है। कर्म के अनुसार "अश्वौ दृष्टौ" अथवा "अश्वाः दृष्टाः" आदि परिवर्तन क्रिया में हो जाते हैं। क्त प्रत्ययान्त क्रिया का कर्म के पुरुष के अनुसार परिवर्तन नहीं होता, प्रत्युत लिंग और वचन के अनुसार परिवर्तन होता है। यथा—हनुमता सीता दृष्टा, हनुमता विभीषणः दृष्टः, हनुमता राक्षसाः दृष्टाः, हनुमता अहं दृष्टः, दृष्टा वा।

कर्मवाच्य में लोट लकार के स्थान में 'तव्य' और 'अनीय' का भी प्रयोग होता है। ये दोनों प्रत्यय कर्मवाच्य तथा भाववाच्य की क्रियाओं में प्रयुक्त होते हैं। यथा—तेन पुस्तकं पठितव्यम् पठनीयं वा। तेन अश्वौ द्रष्टव्यौ दर्शनीयौ वा इत्यादि। कर्म के अनुसार यहाँ भी क्रिया के लिङ्ग और वचन में परिवर्तन होता है।

भाववाच्य—इसमें अकर्मक क्रिया का ही प्रयोग होता है। अतः

इसमें कोई कर्म नहीं होता। शेष सब नियम कर्मवाच्य के अनुसार ही होते हैं। यहाँ भी कर्ता तृतीया में होता है। क्रिया आत्मनेपदी 'य' विकरण के साथ प्रयुक्त होती है। यथा—बालकेन तुद्यते, रामेण सुप्यते, इत्यादि।

भाववाच्य में क्रिया सदैव प्रथम पुरुष एकवचन में प्रयुक्त होती है। यथा—अहं तिष्ठामि = मया स्थीयते। तौ तिष्ठतः = ताभ्यां स्थीयते। यूयं तिष्ठथ = युष्माभिः स्थीयते इत्यादि।

वाच्य-परिवर्तन

वाच्य	कर्ता	कर्म	क्रिया
कर्तृवाच्य	प्रथमा में	द्वितीया में	लकारों में; कर्ता के पुरुष और वचन के अनुसार क्तवतु; कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार
कर्मवाच्य	तृतीया में	प्रथमा में	आत्मनेपदी; कर्म के पुरुष और वचन के अनुसार त, तव्य, अनीय; कर्म के वचन और लिंग के अनुसार
भाववाच्य	तृतीया में	x	आत्मनेपदी प्रथम पुरुष एकवचन में तव्य, अनीय नपुंसकलिंग एकवचन में
कर्तृवाच्य	रामः	अश्वं	अपश्यत्
कर्मवाच्य	रामेण	अश्वः	दृष्टः (अदृश्यत)
भाववाच्य	रामेण	x	स्थीयते

कुछ आवश्यक धातुओं के कर्मवाच्य क्रियारूप

धातु	लट्	लृट्	लङ्	लोट्
पठ्	पठ्यते	पठिष्यते	अपठ्यत	पठ्यताम्
गम्	गम्यते	गमिष्यते	अगम्यत	गम्यताम्
दृश्	दृश्यते	द्रक्ष्यते	अदृश्यत	दृश्यताम्
पा	पीयते	पास्यते	अपीयत	पीयताम्
स्था	स्थीयते	स्थास्यते	अस्थीयत	स्थीयताम्
दा	दीयते	दास्यते	अदीयत	दीयताम्
हन्	हन्यते	हनिष्यते	अहन्यत	हन्यताम्
आप	आप्यते	आप्स्यते	आप्यत	आप्यताम्
प्रच्छ्	पृच्छ्यते	प्रक्ष्यते	अपृच्छ्यत	पृच्छ्यताम्
मृ	म्रियते	मरिष्यते	अम्रियत	म्रियताम्
कृ	क्रियते	करिष्यते	अक्रियत	क्रियताम्
क्री	क्रीयते	क्रेष्यते	अक्रीयत	क्रीयताम्
ग्रह्	गृह्यते	ग्रहीष्यते	अगृह्यत	गृह्यताम्
श्रू	श्रूयते	श्रोष्यते	अश्रूयत	श्रूयताम्
चिन्त्	चिन्त्यते	चिन्तयिष्यते	अचिन्त्यत	चिन्त्यताम्
कथ्	कथ्यते	कथयिष्यते	अकथ्यत	कथ्यताम्

उदाहरण

कर्तृवाच्य

अहं जलं पिबामि
 अहं जलं पास्यामि
 अहं जलं अपिबाम्
 अहं जलं पिबानि
 सः फलं भक्षयति
 सः फलानि भक्षयति

कर्मवाच्य

मया जलं पीयते
 मया जलं पास्यते
 मया जलं पीतम् (अपीयत)
 मया जलं पातव्यम् (पीयताम्)
 तेन फलं भक्ष्यते
 तेन फलानि भक्ष्यन्ते

सः पाठम् अस्मरत्
 सः कार्यम् अकरोत्
 अहं शब्दम् अशृणवम्
 तौ पुस्तके अगृहीताम्
 चौरः धनम् अचोरयत्
 रामः मारीचम् अहन्
 त्वं गच्छ
 त्वं पठ
 यूयं मृगं पश्यत्
 यूयं जलं पिबत्

तेन पाठः स्मृतः (अस्मर्यत)
 तेन कार्यं कृतम् (अक्रियत)
 मया शब्दः श्रुतः (अश्रूयत)
 ताभ्यां पुस्तके गृहीते (अगृह्यताम्)
 चौरैः धनं चोरितम् (अचोर्यत)
 रामेण मारीचः हतः (अहन्यत)
 त्वया गन्तव्यम् (गम्यताम्)
 त्वया पठितव्यम् (पठ्यताम्)
 युष्माभिः मृगः द्रष्टव्यः (दृश्यताम्)
 युष्माभिः जलं पातव्यम् (पीयताम्)

अभ्यास

१. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में बदलो—

(क) सः गृहं गच्छति । तौ पुस्तकं पठतः । ते मृगं पश्यन्ति । अहं पत्रं लिखामि । आवां शब्दं शृणुवः । त्वं पाठं स्मरसि । अहं जलं पिबामि । वयम् अत्र तिष्ठामः । कर्णः कवचं ददाति । मनुष्यः धनम् आप्नोति ।

(ख) अहं कार्यं करिष्यामि । अहं पाठं स्मरिष्यामि । त्वं किं पठिष्यसि । आवां फलानि ग्रहीष्यावः । नृपः चौरान् दण्डयिष्यति ।

(ग) अहं पुस्तकम् अपठम् । अहं गृहम् अगच्छम् । तौ उपवनम् अपश्यताम् । ते जलम् अपिबन् । वयं पत्रम् अलिखाम । अहं फलम् अभक्षयम् । अहं मृगौ अपश्यम् । सः धनम् आप्नोत् । रामः लक्ष्मणम् अपृच्छत् । अहं कार्यम् अकरवम् ।

(घ) त्वं पुस्तकं पठ । त्वं गृहं गच्छ । त्वं पत्रं लिख । अहं फलं खादानि । अहम् अत्र तिष्ठानि । आवाम् उपवनं गच्छाव । तौ पुस्तकं पठताम् । ते अश्वं पश्यन्तु । यूयं जलं पिबत । वयं पाठं स्मराम ।

२. अनुवाद करो—केवल कर्मवाच्य में ।

(क) बालक पढ़ता है । मैं देखता हूँ । तू जाता है । राम पानी पीता है । शिष्य पाठ याद करता है । पुत्र पिता की सेवा करता है । राम मृग को मारता

है । राजा दान देता है । बालक शेर से डरता है । बुद्धिमान यश पाता है । मैं कल हरद्वार जाऊँगा । तुम दोनों कब जाओगे ? वे दोनों कल बाग को देखेंगे । हम सब कल काम करेंगे । वे सब कल यज्ञोपवीत ग्रहण करेंगे ।

(ख) मैंने फल खाये । हम सब ने कल पाठ याद किया । क्या तूने पानी पिया । हम दोनों ने एक सुन्दर घोड़ा देखा । हरिश्चन्द्र ने ब्राह्मण को राज्य दान दे दिया । पिता की सेवा से श्रवण ने यश प्राप्त किया । तूने विद्यालय का काम क्यों नहीं किया ? मैंने उससे दुःख का कारण पूछा । उन्होंने आज संन्यास ग्रहण किया है । गुरु ने शिष्यों को दण्ड दिया ।

(ग) तुम्हें घर जाना चाहिये और अपना पाठ स्मरण करना चाहिये । मुझे अब पढ़ने के लिए विद्यालय जाना चाहिये । पुत्र को माता पिता की सेवा करनी चाहिये । किसी निरपराध जीव की हत्या न करनी चाहिये । दरिद्रों को धन देना चाहिये, धनियों को नहीं । समय पर प्रातःकाल उठना चाहिये और समय पर ही भोजन करना चाहिये । नियत समय पर ही फल ग्रहण करना चाहिये । सदा कार्य करना चाहिये । सुदूर भविष्य की व्यर्थ चिन्ता कदापि न करनी चाहिये ।

सुबोध-अनुवाद-पद्धति

अभ्यास १

(लट—वर्तमान काल Present tense)

हिन्दी में अनुवाद करो—

अहं पठामि ।

युवां पठथः ।

सः गच्छति ।

वयं गच्छामः ।

आवां पश्यावः ।

त्वं पश्यसि ।

ते नमन्ति ।

संस्कृत में अनुवाद करो—

वे दोनों पढ़ते हैं ।

वे सब पढ़ते हैं ।

तू जाता है ।

तुम जाते हो ।

मैं देखता हूँ ।

हम सब देखते हैं ।

वह नमस्कार करता है ।

अहं स्मरामि ।
 मृगः धावति ।
 ते धावन्ति ।
 वयं पिबामः ।
 फलानि पतन्ति ।
 चिन्ता दहति ।
 रामः खादति ।
 रामः क्रीडति ।
 गुरवः यच्छन्ति ।
 अहं वदामि ।
 सः हसति ।
 खगः नृत्यति ।
 अश्वः गच्छति ।
 मेघः वर्षति ।
 सुखानि भवन्ति ।
 चन्द्रः उदयति ।
 वानरः चलति ।
 पिकः कूजति ।

तू याद करता है ।
 घोड़े दौड़ते हैं ।
 तुम दोनों भागते हो ।
 वे सब पीते हैं ।
 पानी गिरता है ।
 आग जलाती है ।
 बालक खाता है ।
 बालक खेलते हैं ।
 राजा देता है ।
 मनुष्य बोलते हैं ।
 मूर्ख हँसते हैं ।
 मोर नाचते हैं ।
 हाथी जाते हैं ।
 बादल बरसते हैं ।
 प्रातःकाल होता है ।
 सूर्य निकलता है ।
 वायु चलती है ।
 पक्षी चहचहाते हैं ।

अभ्यास २

(लट्, भविष्यत् काल Future tense)

हिन्दी में अनुवाद करो—
 अहं पठिष्यामि ।
 ते पठिष्यन्ति ।
 आवां गमिष्यावः ।
 वयं गमिष्यामः ।
 त्वं द्रक्ष्यसि ।
 वयं द्रक्ष्यामः ।

संस्कृत में अनुवाद करो—
 हम दोनों पढ़ेंगे ।
 तुम दोनों पढ़ोगे ।
 मैं जाऊँगा ।
 वे सब जायेंगे ।
 वह देखेगा ।
 वे सब देखेंगे ।

वयं नंस्यामः ।
 ते स्मरिष्यन्ति ।
 अहं पास्यामि ।
 फलानि पतिष्यन्ति ।
 चिन्ता धत्स्यति ।
 बालकाः खादिष्यन्ति ।
 ते क्रीडिष्यन्ति ।
 नृपः दास्यति ।
 मृगः धाविष्यति ।
 तौ धाविष्यतः ।
 अहं धाविष्यामि ।
 जनः वदिष्यति ।
 अहं हसिष्यामि ।
 खगः नत्स्यति ।
 वयं चलिष्यामः ।
 मेघः वर्षिष्यति ।
 दुःखं भविष्यति ।
 सूर्यः उदेष्यति ।
 पिकः कूजिष्यति ।

मैं नमस्कार करूँगा ।
 हम सब याद करेंगे ।
 तू पीयेगा ।
 मैं गिर जाऊँगा ।
 अग्नि जलाएगी ।
 हम सब खाएँगे ।
 तुम सब खेलोगे ।
 मैं दूँगा ।
 घोड़े दौड़ेंगे ।
 हम दो भागेंगे ।
 देवदत्त भागेगा ।
 बालक बोलेंगे ।
 मूर्ख हँसेंगे ।
 मोर नाचेंगे ।
 वायु चलेगा ।
 अमृत बरसेगा ।
 रात्रि होगी ।
 चन्द्र निकलेगा ।
 पक्षी चहचहाएँगे ।

अभ्यास ३

(लोट) आज्ञा (Imperative mood)

हिन्दी में अनुवाद करो :—
 ते पठन्तु ।
 युवां पठतम् ।
 त्वं गच्छ ।
 यूयं गच्छत ।
 त्वं पश्य ।

संस्कृत में अनुवाद करो :—
 तू पढ़ ।
 तुम सब पढ़ो ।
 तुम दोनों जाओ ।
 वे सब जायें ।
 वे दोनों देखें ।

यूयं पश्यत ।
 ते नमन्तु ।
 तौ स्मरताम् ।
 ते धावन्तु ।
 अहं पिबानि ।
 ते पतन्तु ।
 चिन्ता न दहतु ।
 ते खादन्तु ।
 सः क्रीडतु ।
 राजा यच्छतु ।
 मृगाः धावन्तु ।
 त्वं वद ।
 त्वं हस ।
 पिकः नृत्यतु ।
 त्वं चल ।
 मेघः वर्षतु ।
 सायंकालः भवतु ।
 चन्द्रः उदयतु ।
 अन्धकारः नश्यतु ।
 खगाः हृष्यन्तु ।

वे सब देखें ।
 हम दोनों नमस्कार करें ।
 हम दोनों याद करें ।
 वे दोनों भागें ।
 तू पी ।
 वे दोनों गिरें ।
 अग्नि जलाए ।
 बालक ग्वाये ।
 वे सब खेलें ।
 तू दे ।
 घोड़े दौड़ें ।
 मैं बोलूँ ।
 वे सब हँसें ।
 मोर नाचें ।
 वायु चले ।
 बादल वर्षा करें ।
 प्रातःकाल हो ।
 सूर्य निकले ।
 शत्रु नष्ट हों ।
 मनुष्य प्रसन्न हों ।

अभ्यास ४

(लङ्) भूतकाल (Past tense)

हिन्दी में अनुवाद करोः—
 सः अपठत् ।
 तौ अपठताम् ।
 ते अगच्छन् ।
 वयम् अगच्छाम ।

संस्कृत में अनुवाद करोः—
 मैं पढ़ता था ।
 हम सब पढ़ते थे ।
 तुम सब जाते थे ।
 तुम दोनों जाते थे ।

अहम् अपश्यम् ।
 ते अपश्यन् ।
 वयम् अनमाम् ।
 ते अस्मरन् ।
 मृगः अधावत् ।
 अहं जलम् अपिवम् ।
 वयम् अपताम् ।
 ते अदहन् ।
 ते अखादन् ।
 युवाम् अक्रीडतम् ।
 वयम् अयच्छाम् ।
 सः अधावत् ।
 अश्वाः अधावन् ।
 अहम् अवदम् ।
 ते अहसन् ।
 मयूरः अनृत्यत् ।
 तौ अचलताम् ।
 मेघः अवर्षत् ।
 रात्रिः अभवत् ।
 ते अहृष्यन् ।
 बालकः अस्वपन् ।
 शिष्याः अपृच्छन् ।
 सीता अचिन्तयत् ।

हम सब देखते थे ।
 तू देखता था ।
 मैं नमस्कार करता था ।
 हम सब याद करते थे ।
 घोड़ा भागता था ।
 बालक दूध पीते थे ।
 मैं गिरता था ।
 अग्नि जलाती थी ।
 हम सब खाते थे ।
 वे दोनों खेलते थे ।
 मैं देता था ।
 तू भागता था ।
 हरिण भागते थे ।
 वे दोनों बोलते थे ।
 हम सब हँसते थे ।
 मोर नाचते थे ।
 वायु चलती थी ।
 बादल वर्षा करते थे ।
 प्रातःकाल होता था ।
 मनुष्य प्रसन्न होते थे ।
 वे सब सोते थे ।
 हम सब पूछते थे ।
 हम दोनों चिन्ता करते थे ।

अभ्यास ५

(विधिलिङ्) विधि (Potential Mood)

हिन्दी में अनुवाद करोः—
 तौ पढेताम् ।

संस्कृत में अनुवाद करो—
 वह पढ़े ।

आवां पठेव ।
 सः गच्छेत् ।
 तौ गच्छेताम् ।
 ते पश्येयुः ।
 आवां पश्येव ।
 ते नमेयुः ।
 आवां स्मरेव ।
 वयं धावेम ।
 किं सः पिबेत् ?
 किं ते पतेयुः ?
 सः दहेत् ।
 ते खादेयुः ।
 तौ क्रीडेताम् ।
 सः यच्छेत् ।
 तौ धावेताम् ।
 सः वदेत् ।
 तौ हसेताम् ।
 मयूरः नृत्येत् ।
 तौ चलेताम् ।
 मेघः वर्षेत् ।
 सः सुखी भवेत् ।
 ते दुःखिनः न भवेयुः ।
 तौ हृष्येताम् ।
 ते नश्येयुः ।

वे सब पढ़ें ।
 वे दोनों जाएँ ।
 वे सब जाएँ ।
 वह देखे ।
 हम सब देखें ।
 वे दोनों नमस्कार करें ।
 वे सब याद करें ।
 वे दोनों भागें ।
 क्या मैं पीऊँ ?
 क्या वह गिरे ?
 अग्नि जलाए ।
 क्या हम सब खाएँ ।
 क्या हम दोनों खेलें ?
 क्या मैं दूँ ।
 क्या घोड़ा दौड़े ?
 क्या हम दोनों बोलें ?
 हम दोनों हँसें ।
 मोर नाचें ।
 वायु चले ।
 बादल वर्षा करें ।
 मनुष्य सुखी हो ।
 कोई दुखी न हो ।
 सब प्रसन्न हों ।
 क्लेश नष्ट हों ।

अभ्यास ६

कारक

(कर्ता और कर्म Nominative and Accusative)

हिन्दी में अनुवाद करो—

रामः मोहनं पश्यति ।

वयं अश्वान् पश्यामः ।

आवां गृहं गच्छावः ।

ते पुनः उपवनं गच्छन्ति ।

तौ पुस्तकं पठतः ।

सः गुरुं नमति ।

वयम् ईश्वरं स्मरामः ।

ते फलानि खादन्ति ।

बालकाः दुग्धं पिबन्ति ।

चिन्ता चित्तं दहति ।

ते विद्यां यच्छन्ति ।

पुत्राः सुखं यच्छन्ति ।

आवां गृहं धावावः ।

सिंहः पशुं हन्ति ।

मूषकाः मार्जारं पश्यन्ति ।

माहनः रामं वदति ।

ऋषिः उपदेशं करोति ।

बाल्मोकिः रामायणं लिखति ।

त्वं किम् इच्छसि ।

गुरुः कुशलं पृच्छति ।

माता पुत्रान् पालयति ।

कृष्णः नवनीतं चोरयति ।

त्वं किं चिन्तयसि ।

संस्कृत में अनुवाद करो—

वह मनुष्यों को देखता हूँ ।

मैं राम को देखता हूँ ।

बालक विद्यालय को जाते हैं ।

वे फिर घर जाते हैं ।

वे पुस्तक पढ़ते हैं ।

शिष्य गुरु को नमस्कार करते हैं ।

वे पाठ याद करते हैं ।

बालक भोजन खाते हैं ।

वे पानी पीते हैं ।

अग्नि लकड़ी को जलाती है ।

राजा दान देता है ।

सूर्य प्रकाश देता है ।

घोड़े बाग को दौड़ते हैं ।

बाघ हरिणों को मारता है ।

बालक चित्रों को देखते हैं ।

पिता पुत्र से कहता है ।

मुनि उपदेश करते हैं ।

कवि काव्य लिखते हैं ।

मित्र मित्र को चाहता है ।

पिता पुत्र से पूछता है ।

राजा प्रजा को पालता है ।

चोर धन चुराता है ।

सीता राम का चिन्तन करती है ।

पुत्राः पितरं प्रीणयन्ति ।
धावकः वस्त्राणि चालयति ।

राजा प्रजा को प्रसन्न करता है ।
मोहन वस्त्रों को धोता है ।

अभ्यास ७

कारक

करण और सम्प्रदान (Instrumental and Dative)

हिन्दी में अनुवाद करो :—

कृष्णः चक्रेण शिशुपालं हन्ति ।

कुम्भकारः चक्रेण घटं रचयति ।

नेत्राभ्यां पश्य ।

मत्या चिन्तय ।

स्वभावेन स सुशीलः अभवत् ।

मनसा ईश्वरं भज ।

मुखेन जनाः भक्षयन्ति ।

पुण्यैः पुत्राः जायन्ते ।

फलेन वृक्षं बोधन्ति ।

नाम्ना अहं देवदत्तः ।

हर्षेण गृहं गच्छ ।

जन्मना सः शूद्रः अभवत् ।

करणे गृहाण पुस्तकम् ।

परिश्रमेण पठत ।

दरिद्रेभ्यः अन्नं यच्छ ।

लतायै मालाकारः भूमिं खनति

तुभ्यम् अहं फलं दास्यामि ।

कल्याणाय यत्नं कुरु ।

स्वनाशाय यत्नं न कुरु ।

जलानयनाय गृहं गच्छ ।

संस्कृत में अनुवाद करो :—

राम बाण से रावण को मारता है ।

कुम्हार दण्ड से घड़ा बनाता है ।

मनुष्य आँखों से देखता है ।

मनुष्य बुद्धि से सोचता है ।

राम स्वभाव से नम्र था ।

मैं मन से ईश्वर को भजता हूँ ।

वह मुख से बोलता है ।

पुण्य से सुख होता ।

पुरुष फलों से वृक्षों को जानते हैं ।

वह नाम से राम है ।

मैं हर्ष से घर गया ।

रावण जाति से ब्राह्मण था ।

हाथ से काम करो ।

परिश्रम से धन कमाओ ।

निर्धनों को धन दो ।

राम ने सीता के लिए रावण को

मारा ।

तू मुझे पुस्तक दे ।

राजा कल्याण के लिए राज्य करे ।

क्रोध नाश के लिए होता है ।

स्त्रियाँ पानी लाने जाती हैं ।

पित्रे जलमानय ।
मात्रे फलमानय ।
पत्ये दुःखं सहते ।
विदुषे धनं यच्छत ।

श्रवण पिता के लिए पानी लाया ।
वह माता के लिए भोजन लाया ।
पत्नी पति के लिए दुःख सहै ।
राजा विद्वान् को धन देता है ।

अभ्यास ८

कारक

अपादान और सम्बन्ध (Ablative and Genitive)

हिन्दी में अनुवाद करो—
पर्वतात् जलं पतति ।
अहं गृहात् गच्छामि ।
मेघात् वर्षा भवति ।
उपवनात् रामः आगच्छति ।
मार्जारात् सः बिभेति ।
मूषकाः विलेभ्यः निस्सरति ।
मलयात् वायुः आगच्छति ।
पापाद् विरमति ।
वाराणसीनगर्याः आगच्छति ।
नगरात् बहिः गच्छ ।
स्वर्गात् पुष्पाणि पतन्ति ।
मोहनस्य गृहम् काश्याम् अस्ति ।
रामस्य भ्रातः लक्ष्मणः ।
मित्राणां वचनं शृणु ।
पापस्य फलं पश्य ।
वृक्षाणां शाखाः पतन्ति ।
तस्य नाम सोमदत्तः ।
तव किं नाम ।
तव पितुः किं नाम ।

संस्कृत में अनुवाद करो—
वृक्ष से पत्ता गिरता है ।
राम घर से जाता है ।
फूल लता से गिरते हैं ।
बालक बाग से आता है ।
चूहे बिल्ली से डरते हैं ।
नदियाँ पहाड़ों से निकलती हैं ।
गंगा हिमालय से आती है ।
तुम बुरे कामों से हटो ।
मैं बनारस से अयोध्या गया ।
पाठशाला शहर से बाहर है ।
स्वर्ग से देवता देखते हैं ।
राम का घर लाहौर में है ।
युधिष्ठिर का भाई अर्जुन था ।
मित्र के वचन का पालन करो ।
परिश्रम का फल तुम पाओगे ।
वृक्ष के पत्ते गिरते हैं ।
पुत्र का नाम राम था ।
मेरा घर यहाँ है ।
मेरे भाई का नाम यज्ञदत्त है ।

तस्य गृहं तत्र अस्ति ।
 इदं देवदत्तस्य पुस्तकम् ।
 नराणां रक्षकः ईश्वरः ।
 गङ्गायाः जलं शीतलम् अस्ति ।
 समुद्रस्य जलं चारं भवति ।

तेरा घर कहाँ है ?
 यह किसकी कलम है ?
 ईश्वर मनुष्य का पालन करता है ।
 यमुना का पानी नीला है ।
 कुँ का जल मीठा होता है ।

अभ्यास ९

कारक

अधिकरण और सम्बोधन (Locative and Vocative)

हिन्दी में अनुवाद करो—
 पात्रे जलम् अस्ति ।
 नगरे उत्सवः भविष्यति ।
 तव करे किम् अस्ति ।
 भारतवर्षे मुनयः अवसन् ।
 मुनिषु शान्तिः अवसत् ।
 शान्त्यां सुखं अवसत् ।
 पर्वते हिमं भवति ।
 तडागे कमलं विकसति ।
 मीनाः नदीषु भवन्ति ।
 समुद्रे मीनाः जीवन्ति ।
 तस्य काव्ये रसः अस्ति ।

श्रेण्यां गच्छ ।
 विद्यालये पठ ।

वने सिंहाः वसन्ति ।
 स्वाध्याये समयं यापयति ।

संस्कृत में अनुवाद करो—
 नगर में मनुष्य रहते हैं ।
 वन में पशु रहते हैं ।
 हाथ में पुस्तक ले ।
 स्वदेश में सुख मिलता है ।
 ऋषियों में ज्ञान होता है ।
 क्रान्ति में देश का कल्याण है ।
 हिमालय पर वृक्ष होते हैं ।
 तालाबों में फूल खिलते हैं ।
 समुद्र में जल होता है ।
 पानी में मछलियाँ जीती हैं ।
 कालिदास की कविता में रस
 होता है ।

हमारी श्रेणी में २० लड़के पढ़ते हैं ।
 तुम्हारे विद्यालय में कितनी
 श्रेणियाँ हैं ?

वे जंगलों में रहते थे ।
 वे ईश्वर-भजन में समय गुजारते थे ।

हृदये शान्तिं सन्तोषं च धारय ।

नराः ! कुत्र गच्छथ ?

भ्रातरः ! स्नेहेन वसत ।

साधो ! नगरं गच्छ ।

पितः ! भवान् जलं पिबतु ।

नृपाः ! युद्धं न कुरुत ।

बालकाः ! अत्र न क्रीडत ।

हर ! अत्र आगच्छ ।

भगवन् ! कदा कृपां करिष्यसि ?

उनके हृदय में शान्ति और चित्त
में सन्तोष होता था ।

हे बालक ! तू पुस्तक पढ़ ।

हे मनुष्यो ! तुम प्रेम से रहो ।

हे गुरु जी ! मैं नमस्कार करता हूँ ।

हे पिताजी ! आप भोजन कीजिए ।

अरे लोगो ! भागो, शेर आ रहा है !

हे मुने ! उपदेश कीजिए ।

राम ! वहाँ जाओ ।

हे भगवन् ! भारत का भाग्योदय
कब होगा ?

अभ्यास १०

सर्वनाम (Pronouns)

हिन्दी में अनुवाद करो—

तौ गृहं गच्छतः ।

तत् नगरं गच्छ ।

तम् अश्वं पश्य ।

कस्य एषा कन्या ?

तानि पुस्तकानि कस्य सन्ति ?

तस्य कः पिता ?

एतत् उपवनं आगच्छ ।

एतानि फलानि पश्य ।

यः परिश्रमं करोति, सः सुखी
भवति ।

यस्मिन् नगरे त्वं वससि, अहम्
अपि तत्रैव वसामि ।

संस्कृत में अनुवाद करो—

उसका नाम क्या है ?

उस घर में कौन रहता है ?

उस बालक को पुस्तक दे ।

यह घोड़ा किसका है ?

ये पुस्तकें कहाँ पर थीं ?

इन बालकों का पिता कौन है ?

इस बाग में हरिण खेलते हैं ।

ये फूल उस बेल पर खिलते हैं ।

जो जैसा करता है वह वैसा फल
पाता है ।

जिस विद्यालय में तू पढ़ेगा उसीमें
मैं भी पढ़ूँगा ।

यस्य तत् गृहं, स कुत्र अस्ति

यत् पत्रं स पठति, तत् कस्य
अस्ति ।

के के राजानः पाटलिपुत्रे प्रसिद्धा
अभवन् ?

कासु लतासु पुष्पाणि भवन्ति ?

का का नगरी भारते प्रसिद्धा
अस्ति ?

तव कि नाम् ?

अस्माकं जन्मभूः पुण्यभूः भारतं
अस्ति ।

युष्माकं कुत्र गृहम् ?

युष्मभ्यं कि रोचते ?

अस्माकं विद्यालये सः बालकः
पठति ।

जिस बालक की यह पुस्तक हो वह
इसे ले ले ।

जो पुस्तक वह पढ़ता था वह मैं
भी पढ़ता था ।

कौन कौन से नगर भारतवर्ष में
प्रसिद्ध हैं ?

किन किन नदियों में स्वच्छ पानी
होता है ?

तुम्हारी श्रेणी में कौन कौन सी
कन्या दिल्ली की रहने वाली है ?

तेरा घर किस स्थान पर है ?

तुम्हारा देश कौन सा है ?

तुम्हारा चाचा प्रयाग में रहता है ।

हमारे लिए आप गङ्गा-जल लाए ।

हमारा गङ्गा में दृढ़ विश्वास है ।

अभ्यास ११

विशेषण (Adjective)

हिन्दी में अनुवाद करो—

सुन्दरः देशः एषः ।

सुन्दरी बालिका एषा ।

सुन्दरं पुष्पं एतत् ।

मनोहरे फले एते हृदयं हरतः ।

कृष्णं अश्वं सः आरोहति ।

श्वेताः शशकाः वनेषु वसन्ति ।

संस्कृत में अनुवाद करो—

वह घोड़ा सुन्दर है ।

वह बेल सुन्दर है ।

वह वस्त्र सुन्दर है ।

ये सुन्दर फूल हृदय को हरते हैं ।

राम काले घोड़े पर चढ़ता है ।

मेरे घर में दो श्वेत खरगोश हैं ।

मलिनानि वस्त्राणि न धारयत ।

तृषिताय जलं यच्छत ।

बुभुक्षिताय अन्नं यच्छत ।

श्रान्ताय आश्रयं यच्छत ।

शीतलेन जलेन तृषां शमयत ।

युष्मासु कतमः योग्य अस्ति ?

तव कनीयान् भ्राता कतरः अस्ति ?

कतमः पर्वतः उच्चतमः ?

कुशो ज्यायान् भ्राता आसीत् ।

एषा कन्या चतुरतमा अस्ति ।

तत् स्थानं दूरतरम् अस्ति ।

हरद्वारं पवित्रतमं तीर्थम् अस्ति ।

तस्य स्वरः मधुरतमः अस्ति ।

मलिन वस्त्रों से मनुष्य जहाँ तहाँ
बैठ जाता है ।

प्यासा आदमी कुँ पर गया ।

भूखा क्या पाप नहीं करता ?

श्रान्त पथिक वृक्ष की छाया में
बैठ गये ।

शीतल जल से हृदय शान्त होता है ।
वह बालक श्रेणी में सब से अधिक
योग्य है ।

यह मेरा छोटा भाई है ।

हिमालय उच्चतम पर्वत है ।

तुम दोनों में कौन बड़ा है ?

मेरा घर हिमालय से सब से
अधिक दूर है ।

इन दोनों कन्याओं में कौन अधिक
चतुर है ?

सब नदियों में गङ्गा नदी सब से
अधिक पवित्र है ।

उसका जल सबसे अधिक मधुर है ।

अभ्यास १२

संख्यावाची (Numerals)

संस्कृत में अनुवाद करो—

द्वे फले त्रीणि पुष्पाणि न आनय ।

चतस्रः कन्याः एतस्यां श्रेण्यां
पठन्ति ।

चत्वारि पुस्तकानि कुत्र नयसि ?

हिन्दी में अनुवाद करो—

मेरी दो बहनें तथा तीन भाई हैं ।

वेद चार हैं, दर्शन शास्त्र छः हैं ।

बाग में चार सुन्दर फूल खिल
रहे हैं ।

पञ्चसु बालकेषु सः कुशलतमः अस्ति ।
 दशरथस्य तिष्ठः भार्याः आसन् ।
 चतुर्दशवर्षानन्तरं छात्रः उपाधिम्
 अधिगच्छति ।
 पञ्चदशदिनानन्तरं चन्द्रमाः
 सम्पूर्णः भवति ।
 मासस्य त्रिंशत् दिनानि भवन्ति
 युधिष्ठिरः पञ्चविंशति-वर्षपर्यन्तं
 राज्यमकरोत् ।
 पञ्चाशत्-वर्षानन्तरं पुरुषः
 वानप्रस्थाश्रमं प्रविशेत् ।
 अस्मिन् विद्यालये छात्राणां
 पञ्चोत्तरपञ्चशतं पठति ।
 सप्तपञ्चाशत्-अधिकसप्तदशशततमे
 वर्षे पलाशी-युद्धमभवत् ।
 सहदेवः पञ्चमः पाण्डवः
 आसीत् ।
 दशमश्रेण्यां चतुरशीतिः छात्राः
 पठन्ति ।
 एष मे षष्ठः पुत्रः ।
 अष्टमे वर्षे ब्राह्मणस्य उपनयनं
 भवति ।

पाण्डव पाँच भाई थे ।
 सप्ताह में सात दिन होते हैं ।
 हमारे विद्यालय में दश
 श्रेणियाँ हैं ।
 वर्ष में बारह मास होते हैं ।
 श्रीराम चौदह वर्षों के लिए वन
 को गये ।
 पुरुष २५ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य
 से रहे ।
 पचास वर्ष तक मनुष्य गृहस्थाश्रम
 में रहे ।
 हिन्दूविद्यालय में प्रत्येक श्रेणी में
 ८५ विद्यार्थी हैं ।
 सप्तम श्रेणी में केवल ७५ बालक
 पढ़ते हैं ।
 दयानन्द महाविद्यालय में २३५
 विद्यार्थी पढ़ते हैं ।
 १९३६ में महासभा का अधिवेशन
 त्रिपुरी में हुआ ।
 भरत पिता का दूसरा पुत्र था ।
 मैं दसवें दिन आप के घर
 आऊँगा ।

अभ्यास १३

उपपद विभक्तियाँ

संस्कृत में अनुवाद करो—
 नगरं परितः परिखा अस्ति ।

हिन्दी में अनुवाद करो—
 शहर के चारों ओर घोर वन है ।

हरद्वारमभितः गङ्गा नदी प्रवहति ।
गुरोः आज्ञां विना न अहं
गमिष्यामि ।
यिक् मूर्खं पुत्रम् ।

अलं वृथालापेन ।
लक्ष्मणः रामेण सह वनम्
अगच्छत् ।
अहं त्वया सह विद्यालयं न
गमिष्यामि ।

युष्माभिः सार्धं कः पर्वतयात्रा-
यै अगच्छत् ।

अस्माभिः सह भवान् तीर्थयात्रायै
गमिष्यति ?

नमो मातृभूम्यै ।
जन्मतः प्रभृति मया असत्यं न
कथितम् ।

रामादन्यः कोऽपि रावणं हन्तुं न
समर्थः ।

सीता रामात् विना अयोध्यायां न
अवसत् ।

चन्द्रस्य तुल्यं तस्य मुखमस्ति ।

युष्मासु कः ज्येष्ठः ?
अस्मासु रामः ज्येष्ठः ।

हमारे घर के सामने बाग है ।
पिता की आज्ञा के बिना पुत्र
अपने स्थान से न हिला ।
तेरे इस निरर्थक जीवन को
धिक्कार है ।

बहुत भगड़े से बस ।
क्या तू मेरे साथ नगर को
चलेगा ?
तुम्हारे साथ मैं पुस्तक पढ़ूँगा ।

हम दोनों के साथ तेरा भाई बाग
को गया ।

तुम किस के साथ हरद्वार
जाओगे ?

परम पिता परमात्मा को नमस्कार ।
मैंने बचपन से ले कर उनका आदर
किया है ।

उसके सिवाय इसको कोई नहीं
कर सकता ।

मछलियाँ पानी के बिना जी नहीं
सकतीं ।

राम के तुल्य आदर्श पुत्र किस
पिता का होगा !

वह सब भाइयों में बड़ा था ।
भाइयों में शत्रुघ्न सब से छोटा था ।

अभ्यास १४

अव्यय (Indeclinable)

हिन्दी में अनुवाद करो—

यत्र धर्मस्तत्र जयः ।

अत्र भारतवर्षे कालिदासः
कविरभवत् ।

कदा मे भाग्योदयो भविष्यति ?

धीमतः सर्वत्र समादरो भवति ।

यदा रामो वनमगच्छत् तदा
दशरथोऽस्त्रियत ।

कदास्माकं देशः गौरवं प्राप्स्यति ?

पुनरेवं वृथालापं मा कुरु ।

कदापि पापिनः सुखं न जायते ।

तूष्णीं भूत्वा सर्वे मन्दिरं प्रावि-
शन् ।यतोऽस्मिन् वर्षे वर्षा नाभवत् अतो
दुर्मिक्षमभवत् ।यावद् इन्द्रियाणि सकलानि, तावत्
ईश्वरभजनं कुरु ।

कथं भवान् वर्षायां गृहं गमिष्यति ?

यथा तथा भवान् स्वकन्यायाः
विवाहं करोतु ।

संस्कृत में अनुवाद करो—

जहाँ राम जायगा, वहीं उनकी
पत्नी सीता जायगी ।यहाँ हमारे देश में ऋषि मुनि
रहते थे ।

तुम दोनों कब जाओगे ?

विद्वान् सब जगह पूजा जाता है ।

जब वसंत ऋतु आती है, तब
सुन्दर फूल खिलते हैं ।आप हमारे लिए पुस्तकें कब
लायेंगे ?यदि तू ऐसा फिर करेगा तो
अच्छा न होगा ।मनुष्य कभी भी असत्य न बोले,
चोरी न करे ।तुम सब यहीं चुपचाप बैठो, मैं
अभी आता हूँ ।क्योंकि वह तुम्हारा बड़ा भाई है,
अतः तुम्हें उसका सम्मान
करना चाहिए ।जब तक मैं नगर से नहीं आता,
तब तक आप यहीं ठहरें ।

आप कैसे इस प्रश्न का उत्तर देगे ?

जैसे तैसे आप बी० ए० परीक्षा
अवश्य पास कर लें ।

अद्य सः लवपुरं गमिष्यति ।

श्वोऽहं गमिष्यामि ।

ह्यः हरिश्चन्द्रः लवपुरमगच्छत् ।

आज तू यहाँ इस मकान में सो ।

कल मैं सोऊँगा ।

कल वहाँ कौन सोया था ?

अभ्यास १५

गणप्रयोगाः (भ्वादि, दिवादि, तुदादि तथा चुरादि)

हिन्दी में अनुवाद करो—

ईश्वरः सर्वेषां पापपुण्यानि
पश्यति । कर्मानुसारं च फलं
प्रयच्छति ।

सीता अहर्निशं स्वपति राम-
मचिन्तयत् । तस्यैव नाम
अस्मरत् ।

नाहं सुखं याचे, केवलं भगवद्-
भक्तिं याचे ।

तदा सर्वाणि दुःखानि नश्यन्ति,
चित्तं च शाम्यति ।

पाण्डोः पञ्च पुत्राः अजायन्त, तस्य
चित्तम् अतितरामहृष्यत् ।

भवान् किमिव मह्यं कुप्यति ।

यो यं तुदति स तं तुदति ।

यो यत् सुखमिच्छति, स तत्
विन्दति ।

यत् प्रद्यसि तत् कथयिष्यामि ।

मम माता त्रयोविंशति-अधिक-एको-
नविंशतिशतमे वर्षे अम्रियत ।

संस्कृत में अनुवाद करो—

जब मैं अपने भाई को उस दशा
में देखता था, तब मैं अति
दुखी होता था ।

जो ईश्वर का चिन्तन और स्मरण
करेगा वह परम सुख को
पाएगा ।

भगवान से मनुष्य जो कुछ माँगता
है वह अवश्य पाता है ।

अब उसके सब दुःख नष्ट हो
जायँगे और उसका हृदय
शांत हो जायगा ।

जब दशरथ के चार पुत्र उत्पन्न हुए
उसका चित्त अति प्रसन्न हुआ ।

पिता पुत्र पर क्रोध करता था ।

किसी जीव को दुःख न दो ।

मनुष्य जो चाहता है, वह हो
जाता है ।

जब तू प्रश्न पूछेगा, तब मैं उत्तर
दूँगा ।

श्रवण की मृत्यु सुनने से उसके
माता-पिता भी मर गये ।

पुरुषाः परेषां पदार्थान् न चोरयेयुः ।
 यो यद् चिन्तयति तद् अवश्यं
 भवति ।
 मम पिता सर्वेषां कल्याणं चिन्त-
 यति । सदैव च सर्वेषां
 शुभं कथयति ।

मेरी पुस्तक किसने चुराई है ?
 सीता दुःख में परमेश्वर का चिंतन
 करती थी ।
 वह भगवान् को प्रतिदिन हृदयः
 में पूजती थी ।

अभ्यास १६

गणप्रयोगाः (अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि)

हिन्दी में अनुवाद करो—
 अहं न कदापि मांसमद्वि ।
 मान्वाता-आदयः राजानः अत्र
 आसन् ।
 वायसोऽब्रवीत्—मित्र, कथं त्वं
 बन्धनानि ह्येतस्यसि ?
 गोपाः गाः दुहन्ति ।
 बालकाः रुदन्ति ।
 यः प्राणिनः हन्ति स पापमा-
 चरति ।
 यः शेते स समयं विनाशयति ।
 ऋत्विक् जुहोति दक्षिणां च
 लभते ।
 किं भवन्तः पापान्न विभ्यति ?
 नृपाः विद्वद्भ्यः सम्मानं ददति,
 ब्राह्मणेभ्यश्च प्रतिष्ठां प्रयच्छन्ति ।

संस्कृत में अनुवाद करो—
 जो जैसा अन्न खाता है वैसा
 उसका चित्त हो जाता है ।
 इस देश में बहुत धन धान्य था,
 बड़े-बड़े महापुरुष थे ।
 राम बोला—आज हमारे देश में
 विपत्ति का समय है ।
 ग्वाला कब दूध दुहेगा ?
 बालक रोता है और दूध मांगता है ।
 श्रीराम ने हरिण को मारा और
 आश्रम में आये ।
 जो दिन में सोएगा वह आलसी
 हो जायगा ।
 ऋत्विज लोग यज्ञ करते हैं और
 स्वर्ग की इच्छा करते हैं ।
 जो पाप से डरता है, वह संसार
 में सुखी होता है ।
 जो निर्धनों को धन, भूखों को
 भोजन और प्यासों को

सौभाग्येन गुरुः विद्यापात्रं
 शिष्यम् आप्नोति ।
 पुण्यकृत् पुरुषः संसारे सुखम्
 आप्न्यति ।
 किं त्वं पठितुं शक्नोषि ?
 अहं दुःखितं जनं द्रष्टुं न
 शक्नोमि ।

पानी देता है, वह परमपद
 को प्राप्त करता है ।
 गोविंद ने भाग्य से धन के कोश
 को वन में पाया ।
 जो परोपकार करेगा, वह यश
 तथा कीर्ति को पायेगा ।
 क्या आप इस पत्र को पढ़ सकते
 हैं ?
 जो इस पत्र को पढ़ सकेगा उसे
 मैं इनाम दूंगा ।

अभ्यास १७

गणप्रयोगाः (रुधादि, तनादि, क्रयादि)

हिन्दी में अनुवाद करोः—
 मुनयः चित्तवृत्तीः रुन्धन्ति, योगं
 च अनतिष्ठन्ति ।
 वीरा एव वसुन्धरां भुञ्जते ।
 यः स्वचित्तमीश्वरे युनक्ति, स
 सुखी भवति, दुःखानि च
 तरति ।
 करिष्यामि करिष्यामि, करि-
 ष्यामीति चिन्तया;
 मरिष्यामि मरिष्यामि,
 मरिष्यामीति विस्मृतम् ।
 श्रीरामः पितुराज्ञायाः पालनमकरोत्
 वनं चागच्छत् ।

संस्कृत में अनुवाद करोः—
 जो अपने मन को रोकता है, सब
 इन्द्रियाँ उसके वश में हो जाती हैं ।
 जिस राजा में बल होता है वही
 पृथिवी का भोग करता है ।
 यदि मनुष्य ईश्वर में अपने चित्त
 को जोड़े तो संसार के दुःखों
 से पार हो जायगा ।
 सज्जनों के गुण अपनी महिमा
 को फैलाते हैं ।
 ईश्वर अपनी महिमा को संसार
 में फैलाता है ।
 जो शुभ कर्म करेगा, शुभ फल
 पायगा—अशुभ कर्म करेगा,
 अशुभ फल पायगा ।

परिश्रमं कुरु, स्वाध्याये च चित्तं
कुरु ।

संसारे दुःखानां सहनं कुरु, अवश्यं
सफलो भविष्यसि ।

किं त्वं तत् पुस्तकं अक्रीणाः
यत् अहं अक्रीणाम् ।

त्वमेकस्य पुस्तकस्य किं मूल्यं
ग्रहीष्यसि ? रूप्यकद्वयं गृहाण ।

यदा त्वं आत्मानं ज्ञास्यसि,
परमात्मानमपि ज्ञास्यसि ।

यदि तू परिश्रम करता तो अवश्य
उत्तीर्ण हो जाता ।

जो संसार के दुखों को धैर्य से
सहन करेगा—वह जीवन-
परीक्षा में सफल होगा ।

मैंने पिछले वर्ष एक सुन्दर घोड़ा
खरीदा था; क्या तू उसे लेगा ?

मैं इस वर्ष एक और सुन्दर घोड़ा
लूंगा, तू भी एक घोड़ा ले ।

जो अपनी आत्मा को जानता है,
वह परमात्मा को भी जान
जाता है ।

अभ्यास १८

(सोपसर्ग-धातवः)

हिन्दी में अनुवाद करो :—

लोभात् क्रोधः प्रभवति ।

सन्तः सुखमनुभवन्ति ।

बलवान् दुर्बलान् पराभवति ।

अयमुपायः सम्भवति ।

नावगच्छामि ते मतिम् ।

परिश्रमस्य फलं शीघ्रमधि-
गमिष्यसि ।

पुत्राः पितरमनुगच्छन्ति ।

एतस्माद् गृहात् निर्गच्छ, आगच्छ
मे गृहम् ।

संस्कृत में अनुवाद करो :—

क्रोध से मोह पैदा होता है ।

अपने कर्मों का फल सब अनुभव
करते हैं ।

राम ने रावण को युद्ध में हराया ।

क्या यह सम्भव है कि युधिष्ठिर
असत्य बोले ।

क्या मेरे प्रश्न को समझते हो ?

तू विद्यालय में विद्या पायेगा
अथवा घर में ?

दुष्टों के पीछे मत जाओ ।

नगर से निकल, वन को आ ।

मुनिः व्रतमनुतिष्ठति ।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत-
निश्चयः ।
प्रीतः प्रतस्थे मुनिराश्रमाय ।

कविः काव्यं प्रणयति ।
अपनेष्यामि ते दर्पम् ।
पुस्तकमानय ।
रासः सीतां पर्यणयत् ।
गुरुः शिष्यमुपनयते ।
सीता राममनुनयति ।
कलहस्य मूलं निर्णयति ।

देवेभ्यः बलिमुपहरति ।
द्विजः पुष्पाणि आहरति ।

रावणः सीतामपाहरत् ।
केशवः अर्जुनमुपदिशति ।
किं सन्दिशति स्वामी ?
किमादिशति प्रभुः ?
यद् यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवे-
तरो जनः ।
सत्यमार्गमनुचरेत् ।
भृत्याः स्वामिनं परिचरन्ति ।
वने व्याधाः सञ्चरन्ति ।
अहमधुना स्ववक्तव्यं संक्षिपामि ।

भगवान् बुद्ध तप करते हैं ।
जब मैं प्रातः उठता हूँ, मेरा चित्त
अति प्रसन्न होता है ।
समुद्रगुप्त दिग्विजय के लिए
रवाना हुआ ।
मैं काव्य बनाता हूँ ।
वर्षा धूलि को दूर कर देती है ।
मेरे पास अपने भाई को ला ।
नल ने दमयन्ती से विवाह किया ।
मैं तुझे जनेऊ पहनाऊँगा ।
अपने मित्र को मनाओ ।
मैं फैसला करता हूँ कि आप दोषी
नहीं हैं ।
पार्वती पति को फूल भेंट करती है ।
सुदामा श्रीकृष्ण के लिए तंडुल
लाया ।
अज्ञान विवेक को चुराता है ।
पिता पुत्र को उपदेश देता है ।
आप क्या संदेश देते हैं ?
आप क्या आज्ञा देते हैं ?
सोलह वर्ष की अवस्था के पुत्र से
मित्र की तरह आचरण करे ।
पति के पीछे पत्नी चले ।
पत्नी सदा पति की सेवा करे ।
वायु सर्वत्र घूमती है ।
आप विस्तार न करें, कथा का
संक्षेप कर दें ।

किं भवान् जगद्गुरुमाप्ति
पति ?

महात्मनो यशो भुवनत्रये
प्रसरति ।

सीता रामं वने अनुसरति ।

भागीरथी हिमालयपर्वतात्
निस्सरति ।

दूरमपसर मम गृहात् ।

अनुजाः अग्रजान् अनुकुर्वन्ति ।

आगतं भयं प्रतिकुर्यात् ।

प्रकृत्या उपकुर्वन्ति साधवः ।

अपकुर्वन्ति च असाधवः ।

प्रसीदति मे चेतः ।

विषीदति मे मानसम् ।

सन्ध्यासमयः प्रत्यासीदति,

प्रार्थनार्थमत्र निषीदत ।

केशव ! मामनुगृहाण ।

भातरः न विगृह्णन्तु ।

इन्द्रियाणि निगृह्णन्तु ।

पितः ! वनगमनाय अनुजानीहि ।

दशरथः भरताय राज्यं
प्रतिजानीते ।

मैं आक्षेप नहीं करता केवल सत्य
कहता हूँ ।

वीर की कीर्ति सारे संसार में
फैलती है ।

सुख दुःखों के पीछे आते हैं ।

यमुना नदी किस स्थान से निक-
लती है ?

गिद्ध ने बिल्ले से कहा—यहाँ से
परे हट ।

वच्चे अपने बड़ों का अनुकरण
करते हैं ।

आप इस दुःख का क्या प्रतिकार
करेंगे ?

मित्र मित्रों की भलाई करते हैं ।

दुश्मन बुराई करते हैं ।

आपके दर्शन से वह प्रसन्न है ।

देश की दुर्दशा को देख कर किस
का चित्त दुःखी नहीं होता ।

जब समय समीप आता है, काम
सिद्ध हो जाता है ।

कृष्ण अर्जुन पर कृपा करता है ।

पांडव कौरवों से युद्ध करते थे ।

अपनी जबान को रोको ।

राम ने सीता को वन जाने के
लिए आज्ञा दे दी ।

प्रतिज्ञा करो कि तुम भरत को राज्य
और राम को वनवास दोगे ।

अभ्यास १९

(गिजन्त) प्रेरणार्थक क्रिया

हिन्दी में अनुवाद करो—

वैरिणः पितरः स्वपुत्रान् न
पाठयन्ति ।

जननी शिशुं क्षीरं पाययति ।

राजा स्वपुत्रान् विष्णुशर्मणः
समीपं गमयति ।निरपराधान् प्राणिनः न घात-
यत ।

किं सः भोजनं पाचयति ।

नृपतिर्निर्धनेभ्योऽन्नं दापयति ।

भगवान् बुद्धो भिक्षुभ्य उपदेशम-
श्रावयत ।श्रीकृष्णोऽर्जुनं स्वविराट्स्वरूपम-
दर्शयत् ।त्वं स्वकार्यं स्वयमेव कुरु, न
केनाप्यन्येन कारय ।

सीता वनवाससमयमस्मारयत् ।

दुर्योधनो महाभारतयुद्धे समस्त-
भारतवर्षमनाशयत् ।तृपितान् जलं पायय, क्षुधितान्
अन्नं भोजय ।

संस्कृत में अनुवाद करो—

आचार्य शिष्यों को वेद पढ़ाता
है ।माता पुत्र को अपने हाथ से पानी
पिलाती है ।पिता ने पुत्र को पढ़ने के लिए
विद्यालय भेजा ।सीता ने श्रीराम से हरिण को
मरवाया ।तुम मेरे लिए कब भोजन पक-
वाओगे ?

राजा ने गरीबों को वस्त्र दिलाये ।

पण्डित जी आज रात को रामा-
यण की कथा सुनाएँगे ।माँ ने पुत्र को सुन्दर चित्र
दिखलाये ।मैंने अपना कार्य अपने भाई
से करवाया ।जब मैं कल यहाँ आऊँ, मुझे इस
विषय का स्मरण कराना ।

अपने धन का नाश मत करो ।

जो भूखों को भोजन कराता है,
उस पर ईश्वर प्रसन्न होता है ।

रात्रौ मातरः शिशून् दोलायां
स्वापयन्ति ।

कर्कशवचनैः हृदयं न दाहय ।

नाहं मूर्खान् अध्यापयामि ।

माता बच्चे को पालने में प्रेम से
सुलाती है ।

कटु वचन हृदय को जलाता है,
शान्त नहीं करता ।

आप इन बालकों को पढ़ाएँ ।

अभ्यास २०

कृदन्त (शतृ, शानच्)

हिन्दी में अनुवाद करो—
पठन् बालको गुरखे रोचते ।

नमन शिष्यो गुरोः प्रियः
भवति ।

गच्छन् पुरुषः पतितानि फलानि
अपश्यत् ।

दुग्धं पिबन् बालको बुद्धिमान्
बलवान् च भवति ।

अहं स्वदेशावस्थां पश्यन्
प्राचीनगौरवं च स्मरन्
विलपामि ।

स्त्रियमाणः पुरुषः स्वकर्माणि
स्मरति ।

धनिको दानं ददत् शोभते ।

नश्यन्तं स्वदेशं पश्यन् को न
विपीदति ।

धनमाप्नुवतां जनानां प्रकृतिः
परिवर्तते ।

संस्कृत में अनुवाद करो—

बालक ने हसते हुए दंड को
ग्रहण किया ।

शिष्य नमस्कार करता हुआ
अपने घर गया ।

जाते हुए पथिक ने तालाब के
किनारे पर एक वृद्ध व्याघ्र देखा ।

वह तालाब से पानी पीता हुआ
आगे चला ।

हम दोनों बाग को देखते हुए
और पाठ याद करते हुए
घर को गये ।

मरता क्या न करता ।

राजा रघु दान देता हुआ अति-
प्रसन्न होता था ।

नष्ट होता हुआ धर्म वंश का
नाश कर देता है ।

धन पाता हुआ कौन अभिमानी
नहीं हो जाता ।

त्वं मम गृहं पृच्छन्नागच्छ ।

सेवमानाय शिष्याय गुरुः विद्यां
यच्छति ।

यशो लभमानाः मनुष्याः धनं
नेच्छन्ति ।

वर्धमानं पुत्रं पश्यन् पिता
प्रहृष्यति ।

शयानं शिशुं न बोधय ।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत्
शतं समः ।

चिन्तयन्ती दमयन्ती पति-
मवाप्नोत् ।

पथिक मार्गं पूछता हुआ मुनि के
आश्रम में पहुँच गया ।

सेवा करता हुआ शिष्य गुरु से
विद्या ग्रहण करता है ।

कृपा पाता हुआ शिष्य ही विद्या
को सफल करता है ।

बढ़ता हुआ चन्द्रमा आँखों को
आनन्दित करता है ।

सिंह सोता हुआ भी भयानक
होता है ।

मनुष्य काम करता हुआ ही
शोभा पाता है ।

सीता राम का ध्यान करती हुई
समय बिताती थी ।

अभ्यास २१

कृदन्त (तुमुन्)

हिन्दी में अनुवाद करो—

सीता प्रतिदिन नद्यां स्नातुम-
गच्छत् ।

सा भगवन्तं नन्तुं देवायतनम-
गच्छत् ।

नालन्दा-विश्वविद्यालयं दशसहस्र
छात्राः पठितुमागच्छन् ।

इन्द्रियाणि विजेतुं पुरुषः प्रयतेत ।

जलं पातुं पथिकः कूपं प्रति
अगच्छत् ।

संस्कृत में अनुवाद करो—

बालको ! प्रातःकाल हो गया,
स्नान के लिए नदी पर जाओ ।

नमस्कार करने के लिए गुरु के
पास जाओ ।

पढ़ने के लिए विद्यालय जाओ ।

रघु शत्रुओं को जीतने के लिए
पश्चिम दिशा में गये ।

भीम दुःशासन का रक्त पीने के
लिए व्याकुल हो गया ।

गुरुः शिष्यस्य संशयं हर्तुं यतते ।

किं भवान् किञ्चित् वक्तुम्
इच्छति ?

शिशुः स्वप्नुमिच्छति ।

पुत्राः पितॄन् सुखं दातुं प्रयतन्ते ।

किं प्रष्टुं रामः कौशल्यामातर-
मुपागच्छत् ?

शिशुरपि मर्तुं न इच्छति ।

तस्य सुमधुरं वचनं श्रोतुं मम
हृदयमुत्सुकं विद्यते ।

सीता प्रत्यहं सन्ध्यां कर्तुं नदी-
तीरमगच्छत् ।

कन्यां ग्रहीतुं पिता जामातु-
र्गृहमगच्छत् ।

बालः पुस्तकं चोरयितुं प्रयतते ।

रावण सीता को हरने के लिए
आश्रम को आया ।

मैं कुछ बोलना चाहता हूँ, क्या
समय होगा ?

बच्चा सोने के लिए माता की गोद
में जाता है ।

ज्ञान देने के लिए हरिश्चन्द्र ने
विश्वामित्र को बुलाया ।

राजा जनक प्रश्न पूछने के लिए
ऋषि याज्ञवल्क्य के पास गये ।

कौन मरना चाहता है ? सब कोई
जीना चाहता है ।

वेद-मन्त्रों को सुनने के लिए मैं
पाठशाला आऊंगा ।

क्या आप काम करने के लिए
मेरे घर आयेंगे ।

विद्या ग्रहण करने के लिए शिष्य
सदा उद्यत रहें ।

चोर चोरी करने के लिए धनी के
घर में गया ।

अभ्यास २२

कृदन्त (क्त्वा)

हिन्दी में अनुवाद करो—

वृद्धो मृत्वा शिशुभूत्वा पुनर्जन्म
गृह्णाति ।

चन्द्रापीडः विद्यालये पठित्वा
पितुर्गृहमगच्छत् ।

१५ उ०

संस्कृत में अनुवाद करो—

निर्धन हो कर कौन सुखी
होता है ।

मनुष्य विद्या पढ़ कर योग्य हो
सकता है ।

सूदो मिष्टान्नं पक्त्वा अतिथीन्
भोजयति ।

भवन्तं नत्वा मम हृदयं प्रसीदति ।

शान्तनुः नदीतीरं गत्वा धीवर-
भवदत् ।

राजानं दृष्ट्वा सर्वे समभ्यनन्दन् ।

अत्र स्थित्वा पाठं स्मर ।

स्मृत्वा च उपविश ।

सोमरसं पीत्वा मुनयः परमात्मान-
मचिन्तयन् ।

इन्द्रियाणि जित्वा मनुष्यः सुखी
भवति ।

आप्त्वा धनं कः न हृष्यति ?

जननीं प्रसववेदनां सहित्वा पुत्रं
जनयति ।

नारदो देवानां सन्देशमुक्त्वा
विरराम ।

दुग्ध्वा गां वत्साय अपि दुग्धं
देहि ।

पितरं पृष्ट्वा बालको विद्याध्ययनाय
विद्यालयं गच्छति ।

भाग्यं चिन्तयित्वा सन्तोषं कुरु ।

रसोइया भोजन पका कर स्वामी
के पास ले जाता है ।

शिष्य गुरु को नमस्कार करके
घर जाता है ।

जा कर देखो कि कौन बाहर खड़ा
है ।

देख कर शीघ्र मेरे पास आओ ।

यहाँ ठहर कर गायत्री जाप करो ।

ईश्वर का स्मरण करके मनुष्य
का हृदय शांत होता है ।

जल पी कर पथिक मार्ग पर चल
पड़ा ।

राम रावण को जीत कर अयोध्या
में वापिस आ गये ।

सम्मान पा कर मनुष्य प्रसन्न
होता है ।

अनेक कष्टों को सहन करके सीता
घर आई ।

यह कह कर राजा अपने आसन
पर बैठ गया ।

गौ को दुह कर दूध लाओ और
बच्चे को पिलाओ ।

देवदत्त से यह पूछ कर जल्दी
मालूम करो कि वह कब

घर जायगा ।

सोच कर काम करो ।

अभ्यास २३

कृदन्त (क्त)

हिन्दी में अनुवाद करो—

कि त्वया महाभारतं पठितम् ।

मया तानि पत्राणि पठितानि ।

दृष्टं त्वया तस्य कौशलम् ।

पित्रा पुत्रः प्रुष्टः ।

रामेण लक्ष्मणः उक्तः ।

श्रुतस्त्वया पितुरादेशः ?

मम भ्रात्रा अयमुपहारः दत्तः ।

कि त्वया सः हरिणः हतः

अन्येन वा केनापि ?

सीतया कौशल्या वनगमनाय

प्रुष्टा ।

भगवन् कि मया पापं कृतम् ?

हरिश्चन्द्रेण सत्यरक्षां कृत्वा

अक्षय्यं यशः प्राप्तम् ।

अस्माभिर्विद्यालयकार्यमद्य न कृतम् ।

पुत्रमरणे जनन्या अनन्तवेदना

सोढा ।

चिन्तितानि त्वया स्वकर्तव्यानि

कदाचन ?

रामेण विश्वामित्रादस्त्रविद्या

गृहीता ।

संस्कृत में अनुवाद करो—

राम ने पुस्तक पढ़ी ।

राम ने पुस्तकें पढ़ीं ।

मैंने दो घोड़े देखे ।

शिष्य ने गुरु से पूछा ।

गुरु ने शिष्य से कहा ।

क्या तूने गुरु जी की आज्ञा
सुन ली ?

राजा ने निर्धनों को अन्न दिया ।

राम ने रावण को मारा ।

क्या तूने घर जाने के लिए गुरु
जी से पूछा ?

मनुष्य ने पिछले जन्म में जो काम
किये हैं उनका फल वह
अब भोगता है ।

हम सब ने आपका उपदेश सुन
कर अति आनन्द पाया ।

क्या आप ने भोजन किया ?

सीता ने कौन कौन से दुःख
सहन न किये !

क्या तुम सब ने इस काम का
परिणाम सोचा है ?

शिष्य ने गुरु से दीक्षा ग्रहण की ।

अस्माभिरेतानि वस्त्राणि अद्यैव | तूने यह घोड़ा कितने में खरीदा ?
 क्रीतानि ।
 मनोहरेण पितुर्लेखनी चोरिता । | इन्द्र ने रघु का घोड़ा चुरा लिया ।
 अभ्यास २४

कृदन्त (तव्यत् , अनीय)

हिन्दी में अनुवाद करो—	संस्कृत में अनुवाद करो—
आर्यैः वेदाः अवश्यमेव पठितव्याः	तुम्हे पुस्तक पढ़नी चाहियें ।
(पठनीयाः वा) ।	
किं त्वया अद्य विद्यालये न	मुझे अब घर जाना चाहिये ।
गन्तव्यम् ?	
श्वः ओदनं न पक्तव्यम् ।	रसोइये को अब भोजन पकाना चाहिये ।
गुरवः सर्वत्र नन्तव्याः ।	प्रातःकाल उठ कर प्रतिदिन माता
	पिता को नमस्कार करना चाहिये ।
देवदत्त ! त्वया प्रातःकाले उत्था-	हमें प्रातःकाल उठना चाहिये,
तव्यम् ।	और स्नान करके सन्ध्या-
मनुष्येण सुकर्म एव कर्तव्यम् ,	वन्दन करना चाहिये ।
दुष्कर्मभिस्तेन दुःखमेव	
आप्तव्यम् ।	
अहर्निशं भगवान् स्मर्त्तव्यः ।	आज का पाठ आज ही याद
	करना चाहिए ।
पानीयं न पातव्यम् , त्वया दुग्धं	तुम दोनों भाइयों को कुँ पर
पातव्यम् ।	जा कर पानी पीना चाहिए ।
राज्ञा शत्रवो जेतव्याः ।	यतियों को इन्द्रियों का दमन
	करना चाहिये ।
अरयः सर्वदा वशं नेतव्याः ।	क्या मुझे यह पुस्तक घर ले जानी
	चाहिये ?

लुब्धानिमित्तं बलवता निर्वलाः ।
 प्राणिनः न हन्तव्याः ।
 परेभ्यः दुःखं न दातव्यम्, सर्वेषां
 सुखमेव कर्तव्यम् ।
 यदपि त्वया प्रष्टव्यं मया कथयि-
 तव्यम्, त्वया श्रोतव्यम् ।
 पितृभिः पुत्राः पालयितव्याः
 शिष्ययितव्याश्च ।
 परेषां सुगुणाः चोरयितव्याः ।
 दुर्गुणाः कदापि न ग्रहीतव्याः ।
 कस्यापि कदापि अनिष्टं न चिन्त-
 नीयम् ।

राजन् ! यह आश्रम-मृग है । इसे
 न मारना चाहिये ।
 दरिद्र को दान देना चाहिये धनी
 को नहीं ।
 गुरु से पूछना चाहिए, जैसा वे कहें
 वैसा काम करना चाहिये ।
 तुम्हें जो मैं कहता हूँ, उसे ध्यान
 से सुनना चाहिये ।
 कभी किसी का धन नहीं चुराना
 चाहिये ।
 वही चीज लेनी चाहिये, जो
 अपनी हो ।
 मनुष्य को व्यर्थे चिन्ता न करनी
 चाहिये ।

अभ्यास २५

वाच्य परिवर्तन

नीचे लिखे कर्तृवाच्य के वाक्यों
 को कर्मवाच्य में और
 कर्मवाच्य के वाक्यों को
 कर्तृवाच्य में बदलो—

रामः पुस्तकं पठति ।
 रामेण पुस्तकं पठिष्यते ।
 रामः पुस्तकम् अपठत् ।
 रामः पुस्तकं पठतु ।
 त्वं किं पश्यसि ?
 त्वया किं द्रक्ष्यते ?
 त्वं किमपश्यः ?

नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में
 कर्मवाच्य या भाववाच्य में
 अनुवाद करो—

राम वन को जाता है ।
 सीता राम के साथ जायगी ।
 मुनि आश्रम में तप करते थे ।
 तुम सब रात के समय मत पढ़ो ।
 मैं उन दो बालकों को देखता हूँ ।
 हमने बंगाल प्रान्त नहीं देखा ।
 मैंने यहाँ अमृत-सदृश दूध पिया ।

त्वया हरिणो द्रष्टव्यः ।
 अहं जलम् अपिबम् ।
 आवाभ्यां कार्यं कृतम् ।
 रामः मृगमहन् ।
 नृपेण धनं दत्तम् ।
 गुरुः शिष्यमवृच्छत् ।
 सीता राममचिन्तयत् ।
 भारतं स्वाधीनं भवतु ।
 देशः समृद्धिमाप्नोतु ।
 दरिद्रता नश्यतु ।

हमने उसका गान नहीं सुना ।
 मैंने घर का काम नहीं किया ।
 भीम ने निर्दयता से दुःशामन
 को मारा ।
 राम ने विभीषण को राज्य दे दिया ।
 मुग्रीव ने राम से घर जाने के
 लिए पूछा ।
 मैंने पराधीन देश में जन्म लिया ।
 मैं स्वाधीन देश में मरूँगा ।
 मेरा देश सुख-सम्पन्न हो ।

अभ्यास २६ (संस्कृत में अनुवाद करो)

१

ईश्वर संसार को बनाता है। वही इसे पालता तथा इसकी रक्षा करता है। सूर्य अपने प्रकाश से अन्धकार को दूर कर देता है। गुरु के लिए शिष्य उपहार लाता है। विद्वान् का यश सारे संसार में फैलता है—राजा का केवल अपने देश में। नदियों का जल पर्वतों से आता है। सब नदियों में गंगा नदी परम पवित्र नदी है। बेलों पर भौरे (भृंग) आनन्द करते हैं। वृक्षों के फूल और फल चित्त को प्रसन्न करते हैं। वाणी का बल आज सब से बड़ा बल है। जिसकी वाणी में बल है वह संसार पर शासन करता है। जो शुद्ध मन से कार्य करता है, उसकी कामनाएँ सफल होती हैं।

२

वे दो बालक पुस्तकों को पढ़ते हैं। हम दोनों कल (श्वः) बाग को देखेंगे। जो तालाब (सरोवर) का पानी पीयेगा, वह वीमार (रुग्ण) हो जायगा। शिष्य को गुरु की सेवा करनी चाहिये। मैंने कल (ह्यः) अपने मित्र के घर में भोजन खाया था। कल ग्वाले ने (गोपः) गौ को नहीं दुहा, अतः हम सब ने दूध नहीं पिया। बच्चा (शिशु) माता की

गोद (अंक) में निःशंक सोता है। सब कोई मृत्यु से डरते हैं। जो ज्ञान देता है वह अपना ही उपकार करता है न कि औरों का। बाग में मार नाचते थे। मैं चाहता क्या था और हो क्या गया। गुरु ने अपने शिष्य से प्रश्न पूछा। जो जैसा करता है परलोक में वैसा फल पाता है।

३

इस सुन्दर वृत्त की शीतल छाया में हरिण विश्राम करते हैं। उस स्वच्छ सरोवर के निर्मल पानी में चंचल पक्षी मनोहर कलरव करते हैं। श्वेत आकाश से सूर्य सुखकर प्रकाश फेंकता है। रात को चन्द्रमा अपनी शुभ्र किरणों से इस उपवन में अपूर्व शोभा फैलाता है। शान्त एकान्त वन में योगी लोग समाधि का आनन्द लूटते हैं। हिमालय की हिमाच्छन्न चोटियों (शृङ्ग) पर बादल मन्द-मन्द वर्षा करते हैं। हिमालय और विन्ध्याचल में कौन-सा पर्वत अधिक सुन्दर है? मुझे हिमालय अधिक प्रिय है, वहाँ के दृश्य सुन्दरतम हैं। मेरा बड़ा भाई पिछले साल कश्मीर गया था, वह भी हिमालय को सर्वश्रेष्ठ कहता था।

४

तुम दोनों में से कौन आज नगर को जायगा। हम दोनों में से कोई भी आज नगर नहीं जायगा। हमारे देश का नाम आर्यावर्त था। इस देश के ब्राह्मण संसार के गुरु थे। सब देश इस देश के लिए आदर तथा सम्मान के भाव रखते थे। आज हमारा देश अधोगति को प्राप्त हो चुका है। किमका भाग्य स्थिर रहा है! अवस्था तो चक्र की तरह बदलती रहती है। फिर भी कभी इस देश का यश सारे संसार में फैलेगा? तेरा घर कहाँ है? मेरा घर देहली में है। तेरे पिता का क्या नाम है? मेरे पिता का नाम धर्मदाम है। आपके कितने भाई हैं? आप किस विद्यालय में पढ़े थे? तुम्हारे लिए मैं पुस्तक लाऊँगा।

५

तू कहाँ जाता है? मैं हमेशा वहाँ जाता हूँ। तुम अब क्या करोगे? ऐसा काम फिर मत करना, नहीं तो (अन्यथा) दुःखी होंगे। जब तक

(यावत्) मैं नहीं आता, तब तक (तावत्) तुम सब यहाँ ठहरो। कब हम दोनों अपनी माताजी के पास जाएँगे ? जहाँ इस वर्ष वर्षा नहीं हुई, वहाँ दुर्भिक्ष पड़ा है। जो लगातार (सततम्) परिश्रम करता है, वह परीक्षा में उत्तीर्ण होता है। चाहे प्राण चले जाएँ, धीरे पुरुष सत्य से विचलित नहीं होते।

६

मेरे चार भाई और दो बहनें हैं। हम सब अपने परिवार के ११ सदस्य हैं। ब्राह्मण आदि चार वर्ण हैं, ब्रह्मचर्यादि चार आश्रम है। दशरथ की तीन पत्नियाँ थीं और चार लड़के थे। पाण्डु की दो पत्नियाँ थीं और पाँच पुत्र थे। तीनों लोकों में हरिश्चन्द्र का यश फैला हुआ है। मैं दस गिनो में कलकत्ता जाऊँगा। हमारे विद्यालय में १५ कन्याएँ उच्च शिक्षा ग्रहण करती हैं और १३५ कन्याएँ छोटी श्रेणियों में हैं। १९३६ में हमारे विद्यालय का परिणाम बहुत अच्छा था। हिन्दी रत्न श्रेणी में केवल एक कन्या अनुत्तीर्ण हुई और हिन्दी भूषण में केवल दो कन्याएँ। सिकन्दर ३२६ ईस्वी पूर्व में भारत पर आक्रमण करने के लिए आया।

७

श्रीमती सावित्री के पति का नाम सत्यवान था। वह रूप, विद्या गुण तथा शील वाली आर्य महिला थी। उम विदुषी का परम पावन चरित्र हृदय को आनन्दित करता है। उसकी मास उसे बहुत चाहती थी। इस रानी का नाम विद्योत्तमा है। यह बड़ी बुद्धिमती और गुण-वती है। कुम्हारिन अपने पति के साथ घड़ों का (घटान्) बनाती है। हमारे आचार्य की स्त्री आश्रम में अग्निहोत्र करती है। शूद्र की स्त्री अपने घर को स्वच्छ बना कर रखती है। सती सीता का नाम भारतवर्ष में अत्यन्त आदर से लिया जाता है। जब वह कुमारी थी उमने शिव जी के धनुष को उठा लिया था। उसके स्वयंवर में श्रीराम भी उपस्थित हुए। माता कौशल्या सीता से बहुत प्रेम करती थी। सीता अपनी सास

का हृदय से आदर करती थी। ऐसी आर्य महिलाओं से भारत का नाम आज तक उज्ज्वल है।

८

विद्यालय में शिष्य गुरु को पाठ गुनाता है। राम सीता को वनवास की घटनायें याद दिलाता था। राम ने लक्ष्मण द्वारा सीता को फिर निष्कारण वन में भिजवाया। प्रजाजन के अविचार ने राम से यह घोर कर्म कराया। जो अपने पिता को धर्म-पालन का उपदेश सुनाता था—वह अपने पत्नीव्रत धर्म से विचलित हो गया। सीता वन में वाल्मीकि मुनि के आश्रम में रही। वन वहाँ मृगों को पानी पिलाती थी। वन में हिंस्र जानवर उसे डराते थे, परन्तु पति का क्रूर व्यवहार उसे कभी न डराता था। वह कभी अमन्तोष का भाव न जतलाती थी (लट्—ज्ञापयति)। सती सीता हमें प्राचीन पातिव्रत धर्म के आदर्श का स्मरण कराती है।

९

मैंने बाग में जाते हुए एक हरिण देखा। वह दौड़ता हुआ मेरे पास आया। राम हरिण को मार कर अपनी पत्नी सीता के पास आये। वहाँ उसे न देख कर अति दुःखित हुए। क्या तू काम नहीं कर सकता। मैं पानी पीने के लिए कुँ पर गया था। धन पा कर कोई उसका सदुपयोग नहीं करता। मैं आपकी वर्तमान अवस्था देख कर अति दुःखित हूँ। हम सब आपके भाई की मृत्यु को सुन कर शोकाकुल हैं। संसार को नश्वर जान कर आप दुःख न करें।

१०

मुझ से पढ़ा नहीं जाता। क्या तुम से यह काम नहीं हो सकता। हम सबसे अब तुम्हारा दुःख नहीं देखा जाता। मुझसे रोदन नहीं सुना जायेगा। उन दोनों ने बाग में जा कर मधुर जल पिया, फल खाये तथा सुन्दर फूल देखे, मैंने अब तक कभी अपनी माता जी का नाम नहीं पूछा। क्या तूने यह हृदय-द्रावक समाचार नहीं सुना? श्रीराम ने

सीता को रावण के बन्धन से मुक्त किया (मोचिता) । क्या तूने सोचा है कि तेरे इस कार्य का क्या परिणाम होगा ? तुम्हें ऐसा फिर न करना चाहिये । तुम्हें हमेशा अपनी मर्यादा में रहना चाहिये, अपने बड़ों का कहना मानना चाहिये और उनके विचारों का आदर करना चाहिये ।

११

किसी जंगल में भासुरक नाम का शेर रहता था । वह प्रतिदिन जीवों को मार कर आहार करता । सब जीवों ने मिल कर उसे कहा —“तुम प्रतिदिन अनेक पशुओं का वध न किया करो । हम हर रोज एक पशु तुम्हारे आहार के लिए स्वयं भेंट करेंगे ।” शेर ने कहा—“ऐसा ही हो ।”

एक दिन खरगोश की बारी आ गई । वह धीरे धीरे जाता हुआ सोचता था कि किम तरह शेर का वध किया जाय । उसे एक कुआँ नज़र आया । उसमें उसने अपनी परछाई को देखा । उसे शेर के वध का उपाय पता लग गया ।

जब वह भूखे शेर के पास पहुँचा उसने गर्ज कर पूछा कि देर करके तुम क्यों आये हो । खरगोश बोला स्वामिन्, मुझे एक और शेर ने मार्ग में रोक लिया था । क्रोध में शेर ने पूछा वह कहाँ है ? पहले मैं उसे मारूँगा तब तुम्हें खाऊँगा । खरगोश ने शेर को कुएँ के पास ले जा कर उसी की परछाई दिखाई । शेर गर्जा—कुएँ से गर्जन की प्रतिध्वनि आई । मूर्ख शेर समझने लगा कि कुएँ का शेर मेरा मुकाबला कर रहा है । वह उस कुएँ में कूद कर मर गया । खरगोश प्रसन्न हो कर जंगल में पहुँचा और सब जीवों को समाचार सुनाया कि शेर मर गया । ठीक कहा है जिसके पास बुद्धि है, वह बलवान है । निर्बुद्धि के पास बल कहाँ । देखो बुद्धिमान् खरगोश ने शेर को भी मार दिया ।

१२

एक वृत्त पर एक अंधा गिद्ध रहता था । उसका नाम जरदगव था । जब पक्षी जीविका-उपार्जन के लिए बाहर जाते थे तब गिद्ध उनके वच्चों

की रक्षा करता था। पक्षी दयापूर्वक उसे अपने उपार्जित आहार में से कुछ भाग देते थे।

एक दिन एक बिल्ला उस वृक्ष पर आया। गिद्ध ने ऊँचे स्वर से पूछा, कौन वृक्ष पर आया है? बिल्ला डर गया और कहने लगा—“मैं दीर्घकर्ण नाम का बिल्ला हूँ और आप से धर्म का तत्त्व समझने आया हूँ। मैं अहिंसाव्रत का पालन करता हूँ। मैं कदापि मांस नहीं खाता। मैं आपका अतिथि बन कर आपके पास कुछ दिन रहना चाहता हूँ।” गिद्ध ने बिल्ले को वृक्ष पर रहने की आज्ञा दे दी।

वह बिल्ला प्रतिदिन शनैः शनैः पक्षियों के बच्चों को मार कर खाने लगा। उनकी हड्डियों को वह गिद्ध के खोले (कोटर) में डाल देता था। पक्षी प्रतिदिन अपने बच्चों को इस तरह नष्ट होता हुआ देख कर चिल्लाने लगे। उन्होंने तलाश करते हुए बच्चों की हड्डियों को गिद्ध के खोले में देखा। उन्होंने निश्चय किया कि इसी गिद्ध ने हमारे बच्चों को खाया है। सब ने मिल कर गिद्ध को मार दिया। ठीक कहा है कि जिसका कुल-शील ज्ञात न हो उसे अपने घर में कभी आश्रय न देना चाहिए।

१२

एक जंगल में चित्रग्रीव नाम का बूढ़ा कवूतर अपने परिवार के साथ रहता था। एक दिन वह अपने साथियों समेत उड़ता हुआ जा रहा था। मार्ग में चावल फैले हुए नज़र आये। कवूतरों ने कहा—चावल खाने के लिए जाना चाहिये। चित्रग्रीव ने कहा—नहीं, यह किसी शिकारी का जाल है। हम इसमें फँस जाएंगे। ऐसा करना उचित न होगा। परन्तु कवूतरों ने चित्रग्रीव का कहना न मान कर चावलों को खाने के लिए उतरना निश्चय किया। उतरने के साथ ही वे जाल में फँस गये।

अब लगे रोने और चिल्लाने। बूढ़े चित्रग्रीव ने कहा कि अब भी रक्षा का उपाय है। तुम सब एक साथ जाल को ले कर उड़ो। इस तरह तुम शिकारी से बच जाओगे। सब ने ऐसा ही किया। सब उड़ते हुए

दूर जंगल में पहुँचे। चित्रग्रीव ने अपने मित्र हिरण्यक चूहे से कहा कि वह जाल को काट दे। जाल काट दिया गया और कवूतर बन्धन से छूट गये। ठीक कहा है—संसार में जितने कितने मित्र बनाने चाहिये। देखो मित्र चूहे ने ही कवूतरों को बन्धन से मुक्त कर दिया।

१४

प्राचीन समय में एक राजा था। उसका नाम शिवि था। वह अत्यन्त धार्मिक, दयालु एवं परोपकारी था। वह अहिंसा-व्रत का पालन करने वाला था।

एक दिन एक भयभीत कवूतर उड़ता हुआ उसकी गोद में बैठ गया और कहने लगा—राजन् मेरी रक्षा करो। एक हिंसक बाज मुझे मारना चाहता है। राजा ने कहा—तुम मेरी शरण में आये हो तुम भय न करो, मैं तुम्हारे रक्षा करूँगा।

बाज आया और कहने लगा—राजन्, इस कवूतर को छोड़ दो। यह मेरा भक्ष्य है। यदि इसे तुम नहीं दोगे तो मैं भूखा रह कर तुम्हारे द्वार पर प्राणत्याग कर दूँगा। तुम्हें मेरे बंध का पाप लगेगा।

राजा सोचने लगा—कवूतर को देता हूँ तो इसकी हिंसा का पाप मुझे होता है। नहीं देता तो बाज की हिंसा का पाप लगता है। करूँ तो क्या करूँ। सोच कर बोला—बाज ! यदि तुम लुधा-पीड़ित हो तो तुम कवूतर के परिमाण का मेरा मांस ले कर लुधा को निवृत्त करो और इस कवूतर को छोड़ दो। बाज ने कहा—ऐसा ही हो।

ज्यों-ज्यों राजा अपना मांस काट कर कवूतर के बराबर तुला में रखना गया, त्यों-त्यों कवूतर भारी होता गया। अन्त में राजा समस्त उस तुला में बैठ गया। उसी समय पुष्प-वृष्टि हुई और आकाश-वाणी हुई—धन्य हो तुम राजा, जिमने कवूतर की रक्षा के लिए अपने शरीर को भी दे दिया। बाज ने इन्द्र का रूप धारण किया और कहा—मैं तुम्हारे अहिंसा-व्रत की परीक्षा के लिए आया था। वस्तुतः तुम परम कारुणिक दयासागर हो।

१५

निपथ देश के राजा नल अपने बाग में खड़े थे। एक राजहंस को उन्होंने देखा जो सरोवर पर बिहार कर रहा था। राजा ने उसे पकड़ लिया। हंस ने कहा—राजन, तुम मुझे छोड़ दो—मैं तुम्हारा गुण-गान दमयन्ती के सम्मुख करूँगा। वह अत्यन्त रूपवती कन्या है और तुम्हारे साथ विवाह करने योग्य है। राजा ने हंस को छोड़ दिया। हंस उड़ता हुआ दमयन्ती के पास पहुँचा और उसके सम्मुख नल के रूप, बल, विद्या आदि गुणों की चर्चा की।

दमयन्ती के पिता राजा भीम ने अपनी पुत्री का स्वयंवर समारोह रचाया। उसमें दूर दूर देश से अनेक राजा लोग पहुँचे। दमयन्ती ने उन सब राजाओं को देखा और उनके गुणों का वर्णन भी सुना। जब वह नल के पास पहुँची, उसने जयमाला उन्नी नल को पहनाई। अन्य सब राजा लोग निराश हो कर वापस घर चले गये।

हाई स्कूल परीक्षा के प्रश्न-पत्र

१९५२

प्रथम प्रश्नपत्र

१. निम्नलिखित श्लोकों में से किसी एक श्लोक से सम्बन्धित कथा को हिन्दी या अङ्गरेजी में संक्षेप में लिखिये :—

(क) चित्ते वाचि क्रियायाञ्च साधूनामेकरूपता
उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

(ख) आत्मपक्षं परित्यज्य परपक्षेषु यो रतः
स परैर्हन्यते मूढो नीलवर्णशृगालवत् ॥

(ग) परित्यक्तं राज्यं स्यजनसहितं हन्त विपुलम् ॥
स्वकृत्यं स्वायत्तं न खलु परकृत्ये प्रभुरहम् ॥

२. निम्नलिखित गद्य और पद्य भागों में से किन्हीं तीन का हिन्दी या अङ्गरेजी में अनुवाद कीजिये :—

(क) इयं मुनेः शान्ताऽपि मूर्तिः उत्तप्तकनकावदाता, परिस्फुरन्ती सौदामिनीव चक्षुषः प्रतिहन्ति तेजांसि । सततमुदासीनापि महाप्रभावतया भयमिवोपजनयति प्रथमोपगतस्य । नित्यमसहिष्णु तपस्विनां तनु-
तपसामपि तेजः प्रकृत्या भवति किमुत सकलभुवनतलवन्दितचरणानाम्
अनवरततपः क्षपितमलानां, करतलामलकफलवदखिलं जगदालोकयतां
दिव्येन चक्षुषा भगवतामधक्षयकारिणाम् ।

(ख) दूरादुच्छ्रितपाणिगार्द्रनयनः प्रोत्सारितार्धामनो ।

गाढालिङ्गनतत्परः प्रियकथाप्रश्नेषु दत्तादरः ॥

अन्तुर्भूतविषो वहिर्मधुमयश्चातीव मायापटुः ।

को नामायमपूर्वनाटकविधिः यः शिञ्चितो दुर्जनैः ॥

(ग) पाञ्चालदेशाध्यक्षः जनरलओडायरश्च जलियानवालोद्याने
समवेतानां भारतीयानां समूहवधमाज्ञापयामाम् । अथ च गान्धि-
महोदयस्य पाञ्चालेषु प्रवेशः राजाज्ञया निषिद्धः । अनया घटनया च
भारते स्वराज्यं स्थापयितुं दृढसङ्कल्पोऽभवत् । स्वराज्यमेवोद्दिश्य च
वयनव्यवसायमुन्नेतुं हिन्दु-मुस्लिम-समाजैक्यञ्च स्थापयितुं नगरान्न-
गरान्तरम् पर्यटत् । भारतीयानां सामाजिकस्तरमुन्नेतुं च मादकद्रव्य-
सेवनम्, अस्पृश्यजातीयानामस्पृश्यत्वं विदेशीयवस्त्राणामुपयोगञ्च
समूलघातं विनिहन्तुं प्राववर्त ।

(घ) उदीरितोऽर्थः पशुनाऽपि गृह्यते

ह्याश्च नागाश्च वहन्ति देशिताः ।

अनुक्तमप्यृहति पण्डितो जनः

परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः ॥

(च) लोकमान्यस्य राजनीतिप्रवणत्वद्योतकं श्रीमदनमोहन-
मालवीयानामस्ति एकं कथानकम् । आङ्गलदेशनिवासिनां धुर्य्या नीति न
कोऽपि भारतीयनेता यथायथं तथावगच्छति यथायं लोकमान्यस्तिलकः ।
लोकमान्यतिलकस्य निर्भयता धैर्य्यञ्च द्वौ महान्तौ गुणावास्ताम् । स्वदेश-
स्वातन्त्र्यमस्माकं जन्मसिद्धाधिकार इति एवंविधानि निर्भीकतासूचकानि

वचांसि नान्यस्य कस्यचन्निेतुर्मुखान्निश्चक्रुः । विपत्पवनश्च न कदापि
तस्य धैर्यं विलयितुं शशाक ।

(छ) आलक्ष्य दन्तमुकुलाननिमित्तदासै-

रव्यक्तवर्णरमणीयवचः प्रवृत्तीन् ।

अङ्गाश्रयाः प्रणयिनस्तनयान वहन्तो

धन्यास्तदङ्गरजसा मलिनीभवन्ति ॥

(३) (क) निम्नलिखित श्लोकों में से किसी एक श्लोक का अन्वय
लिखिये :—

(i) असम्भवं हेममृगास्य जन्म

तथापि रामो लुलुभे मृगाय ॥

प्रायः समापन्नविपत्तिकाले

धियोऽपि पुंसां मलिना भवन्ति ॥

(ii) मित्रं प्रीतिरसायनं नयनयोरानन्दनं चेतसः ,

पात्रं यत् सुखदुःखयोः सह भवेन्मित्रं हि तद्दुर्लभम् ।

ये चान्ये सुहृदः समृद्धिममये द्रव्याभिलाषाकुला-

स्तं सर्वत्र मिलन्ति तत्त्वनिकपप्राप्ता तु तेषां विपत् ॥

(ख) निम्नलिखित श्लोकों में से किसी एक श्लोक का अभिप्राय
संस्कृत में दीजिये :—

(i) नियतविषयवर्ती प्रायशो दण्डयोगात्

जगति परवशेऽस्मिन् दुर्लभः साधुवृत्तः ।

कृपमपि विकलं व व्याधितं वाऽधनं वा

पतिमपि कुलनारी दण्डभीत्याभ्युपैति ॥

(ii) महाराज श्रीमन् जगति यशसा ते धवलितं

पयःपारावारं परमपुरुषोऽयं मृगयते ।

कपर्दी कैलासं करिवरमभौमं कुलिशभृत्

कलानाथं राहुः कमलभवनो हंसमधुना ।

४. निम्नलिखित श्लोकों में से किसी एक श्लोक का हिन्दी या अंग्रेजी में संदर्भ सहित अर्थ समझाइय :—

(क) रामचन्द्रं समालोक्य त्वान्तु भूतलमागतम् ।

रत्नश्रेणिमिषान्मन्ये नक्षत्राण्यभ्युपागमन् ॥

(ख) परित्यक्तं राज्यं स्वजनसहितं हन्त विपलम्

स्वकृत्यं स्वायत्तं न खलु परिकृत्यं प्रभुरहम् ॥

५. (क) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के यौगिक अर्थ देते हुए स्पष्ट कीजिए कि उनका वास्तविक अर्थ क्या है और क्यों :—

(i) दिगम्बरः (ii) पयोधिः (iii) पन्नगः ।

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द का पर्यायवाची शब्द दीजिए :—

(i) सौदामिनी (ii) कृशानुः (iii) कुचैलिनम्

६. (क) निम्न पदों का सन्धि-विच्छेद कीजिये और उनके नियम दीजिए :—

स्मरेद्धन्तारमापदाम् , निर्वेदाद्यत्त्वया ।

(ख) निम्न शब्दों की सन्धि कीजिये :—

तनु + इन्द्रियम्, पितृ + औदार्यम् ।

(ग) “सर्व” शब्द के तृतीया और “राजन्” शब्द के षष्ठी विभक्ति में रूप लिखिये ।

(ङ) स्था धातु के लङ् और कृ धातु के लोट् लकार में रूप दीजिए ।

(च) निम्न समस्त पदों का विग्रह कीजिये और समासों का नाम निर्देश कीजिए ।

(i) विपत्पवनः (ii) स्वदेशस्वातन्त्र्यम् ।

द्वितीय प्रश्नपत्र

१. हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए:—

(क) ततो गतायां तस्यां हरिशर्मा चिन्तितवान्—‘अहो ! सर्वथाऽभिमुखे विधौ सिध्यति लीलयैव असाध्योऽप्यर्थः । तदुपस्थिते घोरेऽनर्थे महान् मे सिद्धोऽर्थः । पश्य, निन्दामि यावत् स्वजिह्वां मृषावादिनीं तावदुपायाता पुरो मे चोरी जिह्वा । अहो ! प्रच्छन्नपातकिनः शङ्कयैव प्रकाशन्ते’ इति एवं विचार्य तां निशां सुखं निनाय ।

(ख) ततः सा तदादाय गच्छन्ती याचकानां मुखान् स्वभर्तुः शारद-चन्द्रकिरणगौरान् गुणान् श्रुत्वा तेभ्य एव धनमखिलं भोजदत्तं दत्तवती । माघपण्डितं स्वभर्तारमासाद्य प्राह—‘नाथ, राज्ञा भोजेनाहं बहुमानिता । धनं सर्वं याचकेभ्यस्त्वद् गुणानाकर्ण्य दत्तवती’ । माघः प्राह—‘देवि, साधु कृतम् । परमेते याचकाः समायान्ति किल । तेभ्यः किं देयम्’ इति ।

अथवा

तद् बान्धवोऽयमस्माकं धर्मेण नियुज्यताम् । अथ तै रासभ उष्ट्र-प्रोवायां बद्धः । तत्तु केनचित् तत्स्वामिनो रजकस्याग्रे कथितम् । श्रुत्वा चासौ रजकस्तेषां मूर्खपण्डितानां प्रहारकरणाय समायातः । दृष्ट्वा च तं दूरतः एव ते प्रणष्टाः । ततः स्तोकं पन्थानमतिक्रम्य प्रधावद्भिस्तैः काचिन्नदो समासादिता । तस्यां जलमध्ये पलाशपत्रमायान्तं दृष्ट्वा पण्डिते-नैकेनोक्तम् ।

(२) नीचे दिये हुए पद्यों का भावार्थ लिखिये :—

(क) गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति ।

ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः ।

आस्वाद्यतोयाः प्रवहन्ति नद्यः

समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः ॥

अथवा

इदं च त्वां सर्वपरं ब्रवीमि ।

पुण्यं पदं तात महाविशिष्टम् ।

न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्

धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतोः ॥

(ख) जातमात्रं न यः शत्रुं व्याधिं वा प्रशमं नयेत् ।

अतिपुष्टाङ्गयुक्तोऽपि स पश्चात्तेन हन्यते ॥

(ग) वृणानि भूमिरुदकं वाक् चतुर्थी च सूनृता ।

सतामेतानि गेहेषु नोच्छिद्यन्ते कदाचन ॥

३. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिये:—

(क) लड़कों को चाहिये कि वे अपने माता-पिता तथा बड़ों को रोज सवेरे प्रणाम करें ।

(ख) पिता की आज्ञा से राम सीता सहित वन को चले गये ।

(ग) वर्षा के मौसम में बादलों की आवाज़ सुन कर मोर नाचते हैं ।

(घ) राजा दशरथ ने अपने प्यारे पुत्र राम और लक्ष्मण को ऋषि विश्वामित्र को यज्ञ की रक्षा करने के लिए दिया ।

(ङ) लगातार परिश्रम द्वारा ही विद्यार्थी परीक्षा में सफल हो सकेंगे ।

(४) नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग दस वाक्य सरल संस्कृत में लिखिये ।

(क) वसन्त ऋतु ।

(ख) मित्र का कर्तव्य ।

(ग) कृषक ।

१९५३

प्रथम प्रश्नपत्र

१. निम्नलिखित गद्यांशों का हिन्दी या अंग्रेजी में अनुवाद कीजिये :—

(क) अस्ति गौतमस्यारण्ये प्रस्तुतयज्ञः कश्चिद् ब्राह्मणः । स च यज्ञार्थं ग्रामान्तराच्छागमुपक्रोय स्कन्धे कृत्वा गच्छन् धूर्तत्रयेण विलो-

कितः । ततस्ते धूर्ताः यद्येषच्छागः केनाप्युपायेन लभ्यते तदा मतिप्रकर्षो भवतीति समालोच्य वृत्तत्रयतले क्रोशान्तरेण तस्य ब्राह्मणस्यागमनं प्रतीक्षमाणाः पथि स्थिताः । तत्रैकेन धूर्तेन गच्छन् स ब्राह्मणोऽभिहितः “भो ब्राह्मण ! किमिति कुक्कुरः स्कन्धेनोह्यते ।”

अथवा

स चैकदा पिपासाकुलितः पानीयं पातुं यमुनाकच्छमगच्छत् । तेन च तत्र सिंहेनाननुभूतपूर्वं कालघनगर्जितमिव संजीवकनर्दितमश्रावि । तच्छ्रुत्वा पानीयमपीत्वा स चकितः परावृत्त्य स्वस्थानमागत्य किमिदमित्यालोचयस्तूष्णीं स्थितः । स च तथाविधः करटकदमनकाभ्यामस्य मन्त्रिपुत्राभ्यां शृगालाभ्यां दृष्टः ।

(ख) अथैकदाऽयं महापुरुषोऽनूपशहरनगरे धर्मप्रचाराय यात्रामकरोत् । तत्र मतमतान्तराणामालोचनायां क्रियमाणायां केनचिद-सहिष्णुना जिघांसया भगवते दयानन्दाय सविषं ताम्बूलमर्पितम् । तस्मिन् भक्षिते स सविषं ताम्बूलमिति विज्ञाय हठयोगस्य क्रियया विषप्रभावं दूरीचकार । तदा तत्रत्यो यवनमतानुयायी कश्चिद्राजपुरुषः एतदवगत-वान्, तदा स तं विषदायकं निगृह्य स्वामिनः सकाशमानयत् ।

अथवा

एवं गच्छति काले सप्तदशवर्षोऽयं प्रवेशिकापरीक्षामुदतरत् । पितास्य तदा स्मृत्यव्यशेषतामयासीत् । श्रीगांधी विधानशास्त्रमध्येतुमाङ्गल-देशं जगाम । आङ्गलदेशे निवसतोऽस्य महोदयस्य नृत्यवादनगायना-दीन्यपि शिक्षितुं यत्नः संजातः । परं एतदभ्यासनिरतस्यास्यैकपदे मोहो नष्टः प्रबोधश्चोन्मिषितः ।

२. निम्नलिखित पद्य भागों की हिन्दी या अंग्रेजी में विशद व्याख्या कीजिये:—

(क) प्राक् पादयोः पतति खादति पृष्ठमांसं

कर्णे कलं किमपि रौति शनैर्विचित्रम् ।

छिद्रं निरूप्य सहसा प्रविशत्यशंकं
सर्वं खलस्य चरितं मशकः करोति ॥

अथवा

दूरादुच्छ्रितपाणिरार्द्रनयनः प्रोत्सारितार्धासनो
गाढालिंगनतत्परः प्रियकथाप्रश्नेषु दत्तादरः ।
अन्तर्भूतविषो बहिर्मधुमयश्चातीव मायापटुः
को नामायमपूर्वनाटकविधिर्यः शिञ्जितो दुर्जनैः ॥

(ख) भोजप्रतापं तु विधाय धात्रा,
शेषैर्निरस्तैः परमाणुभिः किम् ।
हरेः करेऽभूत् पविरम्बरे च
भानुः पयोधेरुदरे कृशानुः ॥

अथवा

कणं कणं धाम्यमितस्ततो विले
श्रमं श्रमं साधु कथं कथं चितम् ।
मुदास्वदे नास्ति भयं कुतश्चन
ऋणं न कस्यापि च धारये भुवि ॥

३. नीचे लिखे श्लोकों में से किसी एक का अन्वय लिखिये:—

(क) प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः

प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः ।

विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः

प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति ॥

(ख) मित्रं प्राप्नुत सज्जना जनपदैर्लक्ष्मीः समालम्ब्यताम्
भूपालाः परिपालयन्तु वसुधां शशवत् स्वधर्मे स्थिताः ।
आस्तां मानसतुष्टये सुकृतिनां नीतिर्नबोदेव वः
कल्याणं कुरुतां जनस्य भगवान् चन्द्रार्धचूडामणिः ॥

४. निम्नलिखित श्लोकों में से किसी एक का अभिप्राय अपनी संस्कृत में दीजिये:—

(क) निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अथैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

(ख) शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनं
गजभुजंगमयोरपि बन्धनम् ।
मतिमतां च विलोक्य दरिद्रतां
विधिरहो बलवानिति मे मतिः ॥

५. निम्नलिखित श्लोकों से किसी एक श्लोक से सम्बन्धित कथा हिन्दी में लिखिये :—

(क) वरं बुद्धिर्न सा विद्या विद्याया बुद्धिरुत्तमा ।
बुद्धिहीना विनश्यन्ति यथा ते सिंहकारकाः ॥

(ख) बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम् ।
पश्य सिंहो मदोन्मत्तः शशकेन निपातितः ॥

६—(क) मनस् , कमल, पृथ्वी, हरि में से किन्हीं दो के चार-चार पर्यायवाची शब्द लिखिए ।

(ख) वसुधा, हस्ती, अम्बुज, द्विज शब्दों का यौगिक अर्थ दीजिये और उनसे ग्रहण किया जाने वाला अर्थ लिखिये ।

७—(क) वाक् शब्द के तृतीया तथा सप्तमी विभक्ति में रूप लिखिए ।

(ख) पञ्चन् शब्द के रूप सब विभक्तियों में लिखिये ।

(ग) दुह् धातु के लङ् , ज्ञा (परस्मै०) धातु के लोट् लकार में रूप लिखिये ।

(घ) निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह दे कर समासों का नाम अङ्कित कीजिये :—

(१) कृतराजदर्शनः, (२) सत्त्वोत्साहरहितः ।

(ङ) कर्मधारय या बहुव्रीहि समास की परिभाषा लिखिये ।

(च) सोऽयम्, मध्वत्र—इन दो शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिये और बताइये कि किन नियमों से इनमें सन्धि हुई है ।

(छ) निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिये :—

(१) एतत् + श्रुत्वा, (२) वसुधा + एव ।

द्वितीय प्रश्नपत्र

१—हिन्दी अथवा अँगरेजी में अनुवाद कीजिये ।

(क) अथ कदाचित् स महात्मा अजितनाम्ना शिष्येणानुगम्यमानो योगानुकूलान् पर्वतदरीनिकुञ्जान् अनुविचचार । गिरिगह्वरे प्रसूति-क्लेशैर्मन्दगतिकां परिक्षीणां क्षुधाकृशोदरीं सद्यो जातान् बालान् अपि आहारमिव पश्यन्तीं व्याघ्रवनितां ददर्श । बोधिसत्त्वस्तु तां दृष्ट्वा महीकम्पादद्रिराडिव करुणावशाच्चकम्पे ।

(ख) ततो राजा माघं विपन्नं ज्ञात्वा निजनगराद् विप्रशतावृतो मौनी रात्रोवेव तत्रागात् । माघपत्नी राजानं वीक्ष्य प्राह—‘राजन, यतः पण्डितवरस्त्वद्देशं प्राप्तः परलोकमगात्, ततोऽस्य कृत्यशेषं सम्यगाराधनीयं भवता’ इति ।

अथवा

स च राजा धर्मनाशं कुर्वन् निर्द्वयां च मेदिनीं विदधानो निपिद्धो मन्त्रिणा ततस्तेनापि मूर्खेण राजा सचिवोऽवटे निक्षिप्तः । स च सपुत्रस्तत्र चिरं तस्थौ । ततः शकटाले महामात्ये तत्रस्थे सर्वत्र मृतोऽमृत इति वार्ताऽभूत् ।

२—(क) उचितमनुचितं वा कुर्वता कार्यजातं

परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन ।

अतिरभसकृतानां कर्मणामविपत्ते—

भवति हृदयदाहो शल्यतुल्यो विपाकः ॥

अथवा

न चौरहार्यं न च राजहार्यं

न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।

व्यये कृते वर्धत एव नित्यं

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ।

(ख) नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।

शरीरयात्राऽपि च ते न प्रसिध्येदकर्मणः ॥

(ग) नाद्रव्ये निहिता काचित् क्रिया फलवती भवेत् ।

न व्यापारशतेनापि शुक्रवत् पाठ्यते वक्रः ॥

३—नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिये :—

(क) कल मैंने एक मोर को जंगल में नाचते देखा ।

(ख) अंधेरे में अकेला बच्चा भय मानता है ।

(ग) परमात्मा अन्यायियों को उचित सजा दें ।

(घ) जब तक जियो सत्य के रास्ते को मत छोड़ो ।

(ङ) स्वतंत्र देश के रहने वालों को न्याय करना चाहिये ।

४. किसी एक विषय पर लगभग दस वाक्य संस्कृत में लिखिये :—

(क) आम्रवृक्ष, (ख) गाय, (ग) परोपकार ।

१८५४

प्रथम प्रश्नपत्र

१. निम्न पद्यों में से किन्हीं दो का अनुवाद कीजिये :—

(क) पितासि लोकस्य चराचरस्य,

त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ।

न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्योः

लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभावः ॥

(ख) या पाणिग्रहलालिता सुसरला तन्वी सुवंशोद्भवा ।

गौरी स्पर्शसुखावहा गुणवती नित्यं मनोहारिणी ॥

सा केनापि हृता, तया विरहितो गन्तुं न शक्नोम्यहम् ।

रे भिक्षो तव कामिनी नहि नहि प्राणप्रिया यष्टिका ॥

- (ग) उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते
 हयाश्च नागाश्च वहन्ति देशिताः ।
 अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः
 परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः ॥
- (घ) दुर्मन्त्रिणं कमपयान्ति न नीतिदोषाः ।
 संतापयन्ति कमपश्यभुजं न रोगाः ।
 कं श्रीर्न दर्पयति कं न निहन्ति मृत्युः
 कं स्त्रीकृता न विषयाः परितापयन्ति ॥

२. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो का हिन्दी में अनुवाद कीजिये:—

(क) तदत्र सरसि स्नात्वा सुवर्णकङ्कणं गृहाण । ततो यावदसौ तद्वचः प्रतीतो लोभात्सरः स्नातुं प्रविशति तावत् महापङ्के निमग्नः पलायितुमक्षमो जातः । पङ्के पतितं दृष्ट्वा व्याघ्रोऽवदत् 'अहह ! महापङ्के पतितोऽसि । अतस्त्वामहं उत्थापयामि । इत्युक्त्वा शनैः शनैरुपगम्य तेन व्याघ्रेण धृतः पान्थोऽचिन्तयत् ।

(ख) ततस्तस्या रूपलावण्यलुब्धाभ्यां जगद्घातिभ्यां मनसोत्सुकाभ्यां मम ममेत्यन्योन्यकलहाभ्यां प्रमाणपुरुषः कश्चित् पृच्छत्यतामिति मतौ कृतायां स एव भट्टारको वृद्धद्विजरूपः समागत्य तत्रापस्थितः । अनन्तरं आवाभ्यामियं स्वबललब्धा कस्येयमावयोर्भवति इति ब्राह्मणमपृच्छताम् ।

(ग) अनेके वैदेशिकाः विद्वांसोऽप्यत्र विद्यानुशीलनं कुर्वन्ति । श्रीगान्धी महोदयोऽप्यत्र कञ्चित् कालमुषित्वा कवीन्द्रस्य सान्निध्येन परां शान्तिमनुभवति स्म । कवीन्द्रो रवीन्द्र एव श्रीगान्धिनो विश्वभारती-निवासकाले तस्य महात्मेति उपाधि चकार । तयोर्मिथोऽत्यन्तमेव सौहार्दमासीत् ।

(घ) दौवारिक अपि मां पूर्वमपि कदाप्यद्राक्षीः ? ततो दौवारिकः पुनस्तं निपुणं निरीक्षमाणः मन्त्रेण स्वरेण अरुणापाङ्गाभ्यां लोचनाभ्यां गौरतरेण वर्णेन चुम्बितयौवनेन वयसा निर्भीकेन हारिणा च मुखमण्ड-

लेन पर्यचिनोत् । भुशुण्डीसमुत्तोलनक्रिणककशकरग्रहमपहाय सलज्ज
इव नम्रीभूय प्रणमन्नुवाच ।

३. निम्न श्लोकों में एक का अन्वय लिखिये :—

(क) न स्वल्पमप्यध्यवसायभीरोः

करोति विज्ञानविधिर्गुणं हि ।

अन्धस्य किं हस्ततलस्थितोऽपि

प्रकाशयत्यर्थमिह प्रदीपः ॥

(ख) लक्ष्म क्षमस्व वचनीयमिदं दुरुक्त—

मन्धीमवन्ति पुरुपास्त्वदुपासनेन ।

नोचेत् कथं कमलपत्रविशालनेत्रो

नारायणः स्वपिति पन्नगभोगतल्पे ॥

अथवा

हितोपदेशसार किस प्राचीन पुस्तक से संगृहीत है उसका तथा
उसके लेखक का कुछ परिचय दीजिये ।

४. कवीन्द्र रवीन्द्र की जीवनी अथवा शूद्रक के सेवक वीरवर
की कथा लिखिये ।

५. निम्नलिखित श्लोकों का भावार्थ अपनी संस्कृत में लिखिये :—

(क) वासांसि जीर्णानि यथा विहाय

नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-

न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥

(ख) कनकभूषणसंग्रहणोचितो

यदि मणिस्त्रपुणि प्रणिधीयते ।

न स विरौति न चापि स शोभते

भवति योजयितुर्वचनीयता ॥

६. देव, अग्नि, पुष्प, कमल शब्द में से किन्हीं दो के दो दो
पर्यायवाची शब्द लिखिये ।

७. (क) दश, नदी, अस्मद्, करिन् शब्द में से किन्हीं दो के रूप तृतीया और षष्ठी में लिखिये ।

(ख) पा, मुद्, हु, स्था, इप् धातुओं में से किसी एक के लट् (वर्तमान) में रूप लिखिये ।

(ग) कदाचिच्चलते अथवा काकावावाम् में सन्धिविच्छेद कीजिये तथा लिखिये किन-किन नियमों से सन्धि हुई है ?

(घ) तथा + एव । नरः + अपराणि । शब्दों में सन्धि कीजिये तथा सन्धिनियमों का उल्लेख कीजिये ।

(ङ) स्ववललब्धा । सुवंशोद्भवा । इन समस्त पदों का विग्रह देते हुए समास का नाम बताइए ?

अथवा

‘अनधिगताभिप्रायाः’ का विग्रह करिए और समास का नाम बता कर बहुव्रीहि समास की परिभाषा लिखिए ।

द्वितीय प्रश्नपत्र

१. हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद कीजिये:—

(क) ततो गतायां तस्यां हरिश्मा चिन्तितवान्—“अहो । सर्वथा अभिमुखे विधौ सिध्यति लीलयेव अमाध्योऽप्यर्थः । तदुपस्थिते घोरेऽनर्थे महान् मे सिद्धोऽर्थः । पश्य, निन्दामि यावत् स्वजिह्वां मृषावादिनीं तावदुपायातापुरो मे चौरौ जिह्वा । अहो ! प्रच्छन्नपातकिनः शङ्कयैव प्रकाशन्ते” इति । एवं विचार्य तां निशां सुखं निनाय ।

अथवा

ततो राजापि विप्रस्याहंभावमुद्राया चमत्कृतां तद्वार्त्तां श्रुत्वा “अस्माकं जन्मारभ्यैतत्क्षणपर्यन्तं यद्यन्मयाचरितं यद्यत्कृतं तत्सर्वं वेदतु यदि भवान् सर्वज्ञ एव” इत्युवाच । ततो ब्राह्मणोऽपि राज्ञा यद्यत्कृतं तत्सर्वमुवाच गूढव्यापारमपि । ततो राजापि सर्वाण्यप्यभिज्ञानानि ज्ञात्वा तुतोष ।

(ख) सीता—एवं गतेऽपि प्रतिसन्देशः । मम वचनादार्यपुत्रं

विज्ञापय। मन्दभागिनीं मामनुशोचन् आत्मानं न बाधय। सद्धर्मे स्वशरीरे च सावधानो भवेति। अपि च एषा तपोवनवासिनी, निर्गुणा चिरपरिचितेति वा, अनाथेति वा, सीतेति वा, स्मरणमात्रकेणानुग्रहीतव्या।

२. निम्नलिखित श्लोकों में से किन्हीं दो का हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद कीजिये :—

(क) अप्राज्ञेन च कातरेण च गुणः स्यात् मानुरागेण कः ,
प्रज्ञाविक्रमशालिनोऽपि हि भवेत् किं भक्तिहीनात् फलम् ।
प्रज्ञाविक्रमभक्तयः ममुदिता येषां गुणा भूतये ,
ते भृत्या नृपतेः कलत्रमितरे सम्पत्सु चापत्सु च ॥

(ख) कुमुदवनमपश्चि श्रीमदम्भोजखण्डं
त्यजति मुदमुलूकः प्रीतिमांश्चक्रवाकः ।
उदयमहिमरश्मिर्याति शीतांशुरस्तं
हत्वविधिनिहतानां ह्यविचित्रो विपाकः ॥

(ग) आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं
समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत् कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥

(घ) उत्सवे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे ।
राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः ॥

३. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—

(क) सच बोलने वालों की सदा जीत होती है और झूठ बोलने वालों की हार।

(ख) विजय के बड़े भाई का नाम प्रकाश है।

(ग) रामचन्द्र लक्ष्मण और सीता के साथ जंगल गये थे।

(घ) कालिदास संस्कृत के सब कवियों में श्रेष्ठ हैं।

(ङ) व्यायाम से शरीर के अंग-प्रत्यंग मजबूत होते हैं।

४. नीचे लिखे विषयों में से किसी एक पर लगभग दस वाक्य

संस्कृत में लिखिये :—

(क) हमारा विद्यालय ।

(ख) दिवाली ।

(ग) सत्य ।

१९५५

प्रथम प्रश्न-पत्र

१. निम्नाङ्कित पद्यांशों में से किन्हीं दो का अनुवाद कीजिये :—

(क) पद्माकरं दिनकरो विकचीकरोति

चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम् ।

नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति

सन्तः स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः ॥

(ख) लोभश्चेदगुणेन कि, पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः

सत्यं चेत्तपसा च कि, शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम् ।

सौजन्यं यदि किं निजैः, सुमहिमा यद्यस्ति किं मण्डनैः

सद्विद्या यदि किं धनैरपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना ॥

(ग) सुहृदामुपकारकारणाद् द्विपतामप्यपकारकारणात् ।

नृपसंश्रय इष्यते बुधैर्जठरं को न बिभर्ति केवलम् ॥

(घ) विनाप्यर्थैर्वीरः स्पृशति बहुमानोन्नतिपदम्

समायुक्तोऽप्यर्थैः परिभवपदं याति कृपणः ।

स्वभावादुद्भूतां गुणसमुदयावाप्तिविषयां

द्युतिं सैर्ही किं श्वा धृतकनकमालोऽपि लभते ?

२. निम्नोद्धृत गद्य-खण्डों में से किन्हीं दो का हिन्दी अनुवाद लिखिये—

(क) अथैकदा केनापि सस्यरक्षकेण धूसरकम्बलकृततनुत्राणेन धनुः-

काण्डं सज्जीकृत्याऽनतकायेनैकान्ते स्थितम् । तं च दूराद्दृष्ट्वा

गर्दभः पुष्टाङ्गो यथेष्टसस्यभक्षणजातबलो गर्दभीऽयमिति

मत्त्वोच्चैः शब्दं कुर्वाणस्तदभिमुखं धावितः । सस्यरक्षकेण

चीत्कारशब्दान्निश्चित्य गर्दभोऽयमिति लीलयैव व्यापादितः ।

(ख) ततोऽसौ नकुलो ब्राह्मणमायान्तमवलोक्य रक्तविलिप्तमुखपादः सत्वरमुपगतस्तच्चरणयोर्लुलोठ । ततस्स विप्रस्तथाविधं तं दृष्ट्वा बालकोऽनेन खादित इत्यवधार्य नकुलं व्यापादितवान् । अनन्तरं यावदुपसृत्यापत्यं पश्यति ब्राह्मणस्तावद् बालकः सुस्थः सर्पश्च व्यापादितस्तिष्ठति । ततस्तमुपकारकं नकुलं निरीक्ष्य भावितचेताः स परं विपादमगमत् ।

(ग) संन्यासिन् ! संन्यासिन् ! बहूक्तम् , विरम, न वयं, दौवारिकाः ब्रह्मणोऽप्याज्ञां प्रतीक्षामहे । किंतु यो वैदिकधर्मरक्षाव्रती, यश्च संन्यासिनां ब्रह्मचारिणां तपस्विनां च संन्यासस्य, ब्रह्मचर्यस्य तपसश्चान्तरायाणां हन्ता, येन च वीरप्रसविनीयमुच्यते कोङ्कण-देशभूमिः, तस्यैव, महाराजशिववीरस्याज्ञां वयं शिरसा वहामः ।

(घ) स्नेहपूर्णो दीप उपशशाम । तेन महापुरुषेण राजनीतौ सत्या-
हिसयोः सफलः प्रयोगः कृतः, मानवजीवनस्य सर्वेषु विषयेषु अश्रुतपूर्वाः क्रान्तयश्च सम्पादिताः, स महामानव इदानीं लोक-
हृदयेषु विराजते । यदि मानवाः तत्प्रदर्शितपथेनैव कार्यं करिष्यन्ति तदैव विश्वस्य कल्याणं भविष्यति ।

३. निम्नलिखित किसी एक श्लोक का अन्वय लिखिये :—

(क) शिरामुखैः स्यन्दत एव रक्त—

मद्यापि देहे मम मांसमास्ति ।

तृप्तिं न पश्यामि तवापि तावत्

किं भक्षणात्त्वं विरतो गरुत्मन् ?

(ख) कदर्थितस्यापि च धैर्यवृत्ते—

बुद्धेर्विनाशो न हि शङ्कनीयः ।

अधःकृतस्यापि तनूनपातो

नाधःशिखा याति कदाचिदेव ॥

४. निम्नलिखित सूक्तियों में से किसी एक का अभिप्राय स्पष्ट

कीजिये :—

(क) सर्वं खलस्य चरितं मशकः करोति ।

(ख) छिद्रेष्वनर्थाः बहुलीभवन्ति ।

अथवा

‘कुविन्द’ के पाण्डित्य की ‘भोजप्रबन्ध’ में कैसी चर्चा की गई है ? संक्षेप में लिखिये ।

५. निम्नोद्धृत पद्य-खंडों में से किसी एक का भावार्थ अपनी संस्कृत में प्रकाशित कीजिये :—

(क) न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ।

हविषा कृष्णवर्त्मैव भूय एवाभिवर्द्धते ॥

(ख) कुसुमस्तवकस्यैव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः ।

मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य शीर्यते वन एव वा ॥

६. प्रश्न-संख्या (१) में जो चिन्हित पद हैं उनमें से किन्हीं दो के एक एक पर्यायवाचक शब्द लिखिये ।

७. (क) इन प्रयोगों में से किन्हीं तीन में सन्धि-विच्छेद कीजिये :—

अस्मन्नियोगः, तानीन्द्रियाणि, पाशांश्छिन्धि, भद्राण्यवतारवन्ति,
एष विष्णुः ।

(ख) इनमें संधि-नियम का उल्लेख करते हुए संधि कीजिये :—

जिह्वया + एव + इदम् + उच्यते अथवा विप्रः + न + अयम् ,
सुखम् + अनुभवन् + निवसति अथवा भग्नाः + तेषाम् +
मनोरथाः ।

(ग) ‘द्वन्द्व’ समास किसे कहते हैं ? ‘आहारनिद्राभयमैथुनम्’ अथवा ‘मार्जारमूषिकम्’ में विग्रह-वाक्य बताते हुए समास का निर्देश कीजिये ।

(घ) इनमें से किसी एक धातु का लोट् लकार का रूप लिखिये :—

स्मृ, पच्, दा, प्रच्छ्, युष् ।

(ङ) ‘भगवत्’ शब्द के षष्ठी-एकवचन, ‘मनस्’ शब्द के तृतीया-

बहुवचन, 'इदम्' शब्द के सप्तमी-एकवचन और 'नदी' शब्द के चतुर्थी-एकवचन के रूप लिखिये ।

द्वितीय प्रश्नपत्र

१. हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए :—

(क) अथ अदाचित् स महात्मा अजितनाम्ना शिष्येणानुगम्यमानो योगानुकूलान् पर्वतदरीनिकुञ्जान् अनुविचचार । गिरिगह्वरे प्रसूति-क्लेशैर्मन्दगतिकां परिक्षीणां लुब्धा कृशोदरीं सद्यो जातान् बालान् अपि आहारमिव पश्यन्तीं व्याघ्रवनितां ददर्श । बोधिसत्त्वस्तु तां दृष्ट्वा महीकम्पादद्रिराडिव करुणावशाच्चकम्पे ।

अथवा

ततो राजा माघं विपन्नं ज्ञात्वा निजनगराद् विप्रशतावृतो मौनी रात्रावेव तत्रागात् । ततो माघपत्नी राजानं वीक्ष्य प्राह—“राजन्, यतः पण्डितवरस्त्वद्देशं प्राप्तः परलोकमगात्, ततोऽस्य कृत्यशेषं सम्य-गाराधनीयं भवतः” इति । ततो राजा माघं विपन्नं नर्मदातीरं नीत्वा यथोक्तेन विधिना संस्कारमकरोत् । तत्र च माघपत्नी बह्वौ प्रविष्टा । तयोश्च पुत्रवत् सर्वं चक्रे भोजः ।

(ख) गुरुपदेशश्च नाम पुरुपाणामखिलमलप्रक्षालनक्षममजलं स्नानम्, अनुपजातपलितादिवैरूप्यमजरं वृद्धत्वम्, अनारोपितमेदोदोषं गुरुकरणम्, असुवर्णविरचनमग्राभ्यं कर्णाभरणम्, अतीतज्योतिरालोकः, नोद्वेगकरः प्रजागरः, विशेषेण तु राज्ञाम् । विरला हि तेपामुपदेष्टारः ।

२. निम्नलिखित श्लोकों में से किन्हीं दो का हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए :—

(क) गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति

ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः ।

आस्वाद्यतोयाः प्रवहन्ति नद्यः

समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः ॥

(ख) उचितमनुचितं वा कुर्वता कार्यमादौ
परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन ।
अतिरभसकृतानां कर्मणामविपत्ते-
र्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः ॥

(ग) न तज्जलं यन्न सुचारुपंकजं
न पंकजं तद् यदलीनषट्पदम् ।
न षट्पदोऽसौ न जुगुञ्ज यः कलं
न गुञ्जितं तन्न जहार यन्मनः ॥

३. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—

(क) अयोध्या नगरी में दशरथ नाम के राजा रहते थे ।

(ख) उनके कौसल्या, कैकेयी और सुमित्रा तीन रानियाँ थीं ।

(ग) उनके बड़े लड़के का नाम राम, दूसरे का भरत, तीसरे का लक्ष्मण और चौथे का शत्रुघ्न था ।

(घ) चारों पुत्र बहुत गुणी थे ।

(च) उनमें भी राम सबसे अच्छे थे ।

४. नीचे लिखे विषयों में से किसी एक पर लगभग दस वाक्य संस्कृत में लिखिये :—

(क) गजः ।

(ख) विद्याध्ययनम् ।

(ग) परोपकारः ।



